संगीत नाटक अकादेमी
Sangeet Natak Akademi
NATIONAL ACADEMY OF MUSIC, DANCE AND DRAMA
RABINDRA BHAVAN, FEROZE SHAH ROAD, NEW DELHI-110 001

Scheme for "Safeguarding the Intangible Culture Heritage and Diverse cultural Traditions of India"

FIRST REPORT

Reference File No. :
28-6/ICH-Scheme/116/2014-15/11361, dated : 4th February, 2015
28-6/ICH-Scheme/60/2014-15/12806, dated : 16th March, 2015

लोक में मुक्ति के स्वर

उत्तर भारतीय पारम्परिक लोकगीतों में भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष

LOK MEIN MUKTI KE SWAR

Indian Freedom Struggle in North Indian Folk Songs

prepared and presented by

backstage
BACKSTAGE
105/14-B, Jawahar Lal Nehru Road, George Town, Allahabad-211002 (U.P.)
Phone : 09415367179, 09621330911
E-mail : backstage.cult@gmail.com, backstage.cult@rediffmail.com

लोक में मुक्ति के स्वर
उत्तर भारतीय पारंपरिक लोकगीतों में भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष

DVD/CD विवरण

DVD No.	Folder No.	Video Description
1	1	प्रख्यात शोधकर्ता, लोक कला अध्येता राजकुमार श्रीवास्तव
1	2	प्रख्यात शोधकर्ता, लोक कला अध्येता राजकुमार श्रीवास्तव
1	3	प्रख्यात शोधकर्ता, लोक कला अध्येता राजकुमार श्रीवास्तव
1	4	प्रख्यात शोधकर्ता, लोक कला अध्येता राजकुमार श्रीवास्तव
1	5	प्रख्यात शोधकर्ता, लोक कला अध्येता राजकुमार श्रीवास्तव
1	6	प्रसिद्ध लोक साहित्यकार, कवि, नौटंकी कलाकार रामलोचन विश्वकर्मा 'सांवरिया'

1	7	प्रसिद्ध लोक साहित्यकार, कवि, नौटंकी कलाकार रामलोचन विश्वकर्मा 'सांवरिया'
2	8	जाने माने कवि, कलाकार, गायक फतेह बहादुर सिंह
2	9	जाने माने कवि, कलाकार, गायक फतेह बहादुर सिंह
2	10	जाने माने कवि, कलाकार, गायक फतेह बहादुर सिंह
2	11	जाने माने कवि, कलाकार, गायक फतेह बहादुर सिंह
2	12	विश्वविख्यात सांस्कृतिक इतिहासकार, संस्कृति चिंतक, समाजशास्त्री, कवि प्रो0 बद्री नारायण
2	13	सुपरिचित नौटंकी निर्देशक, लोक नाट्य विशेषज्ञ, भारतीय लोक कला महासंघ के अध्यक्ष अतुल यदुवंशी
CD 1	1	Text Matter

लोक में मुक्ति के स्वर

उत्तर भारतीय पारंपरिक लोकगीतों में भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष

यह लोक ही है जो शास्त्र की प्रमाणिकता की कसौटी बनता है, सतत प्रवाहमान और इस कदर लचीला कि काल–परिस्थिति के अनुरूप छवियों को बनाता–बिगाड़ता और सहेजता चलता है। इस लचीलेपन के चलते यह जितना सहज है, अपनी विराटता के चलते उतना ही गूढ़ भी। परिवर्तनशीलता के गुण के बावजूद पारम्परिक संस्कृति का दामन अगर कहीं नहीं छूटता तो वह लोक संस्कृति ही है।

संघर्ष का मुद्दा दरअसल अस्तित्व की रक्षा से जुड़ा है। अस्तित्व यानी लोक द्वारा मान्य संस्कृति–परम्परा का, प्रेम और विश्वास का अस्तित्व और जरूरत होने पर यह प्रत्यक्ष दोनों ही स्तरों पर परिलक्षित होता है। लोकमानस के प्रतिरोध की अभिव्यक्ति कभी खामोशी होती है यानी सीधे–सीधे अमान्य कर देने में या फिर अपनी समूची ऊर्जा के साथ सक्रियता से अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए। पर प्रतिरोध किसका, किसके विरुद्ध? लोक समूह–संस्कृति भी नहीं सो यह हमेशा से अभिजात

मान्यताओं और परम्पराओं के विरुद्ध ही होता है। वजह साफ है, अभिजात की कोशिश होती है अपने फायदे के लिए गढ़ी गई छवियों–मान्यताओं को लोक पर थोपने और अपनी श्रेष्ठता मनवाने की। वैविध्य से बचते हुए समानता–एकल छवि दरअसल सत्ता के हथियार हैं, लोक पर शासन, उनको काबू में रखने के और वहाँ तो विविधता की स्वतंत्रता ही सब कुछ है, बहुआयामी–बहुरूपी। सो प्रतिरोध और संघर्ष भी लोक को सतत् बने रहने वाला चरित्र है, उसका अभिन्न अंग।

सामाजिक–राजनीतिक स्तर पर ऐसे तमाम मौके आते रहते हैं जब लोक के सजग–सतर्क होने के प्रमाण मिलते हैं, संघर्ष की ध्वनि–प्रतिध्वनि सुनाई देती है। भारतीय स्वतंत्रता के प्रति चेतना, जागरूकता, बोध, संघर्ष कई रूपों में उत्तर भारत के लोकगीतों में मुखरित हुई है। लोक ने अपने संघर्ष, पीड़ा, स्वप्न, संकल्प को अपने गीतों के माध्यम से सुर दिया। इन गीतों ने आजादी का अलख जगाने में बहुत बड़ा योगदान दिया।

आदिमानवों के लोक से लेकर वर्तमान मनुष्य के लोक तक की अपनी एक अलग संस्कृति विकसित हुई। इसके अन्तर्गत उनकी अपनी भाषा, रहन–सहन, उनका अपना समाज, अपने अपने देवी–देवता, रूढ़िवादिता, अंधविश्वास, उनका अपना राजनीतिक जीवन, उनकी अपनी एक अलग अर्थव्यवस्था थी। मनुष्य लोक की इसी संस्कृति से उनके भीतर संघर्ष और प्रतिरोध का जन्म हुआ। यह संघर्ष मानव विकास

के आरम्भ से लेकर आज तक कई रूपों में उभर कर सामने आया है। जब मनुष्य कुछ नहीं जानताथा तो उसके संकट का समस्त प्रतिरोध प्रकृति करती थी। वह चाहे बरसात हो, चाहे जाड़ा हो, चाहे गर्मी या कोई दैवी/प्राकृतिक आपदा या फिर चाहे व्यवस्था या फिर भारतीय लोक संदर्भ में अंग्रेज सरकार ही रही हो।

संघर्ष और प्रतिरोध के प्रतीकों के बनने की कई प्रक्रियायें होती हैं। उनके कई भाव एवं कई विषयगत आधार होते हैं। उनमें एक आधार प्रतिरोध भी होता है। अगर थोड़ी और सूक्ष्मता बरतना चाहें तो इसे आधार न कहकर प्रेरणा, प्रतिक्रिया या कुछ और कह लें। प्रतीक स्मृतियों से बनते हैं और स्मृतियाँ सत्ता के विरुद्ध संघर्ष का प्रमुख हथियार हैं। इस प्रकार विश्व के विभिन्न समाजों में प्रतीक में प्रतिरोध एवं प्रतीक से प्रतिरोध की प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है। भारतीय समाज में प्रतीक में एवं प्रतीक का सृजन तत्कालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था में प्रतिरोध और संघर्ष का ही सृजन है।

चहकारी के बलभद्र सिंह की वीरता का वर्णन ज्योरी गाँव (बाराबंकी, उ0प्र0) के भागू नाई की आल्हा लोक गायन की रचना –

बिच ओबरी के मैदनवां मां

साहब लोगन किहिन पड़ाव।

देस के राजा एक ठौरी होइगै

लै–लै राम चन्द्र का नांव।

तोपैं गरजी अंगरेजन की

धरती अगिनि दिहिन बरसाय।

जेहि कै लागै तोप का गोला

ऊ की ध्वजा सरग मैंडराय।

जेहि कै लागै सीसै का डंडा

देहिया टूक टूक होइ जाय।

अरे गोसइयाँ परलै होइगै

राजे भागे पीठि दिखाय।

भागा राजा बोंडी वाला

जेहिका हरिदत्त सिंह था नांव।

भागा राजा चरदा वाला

जेहिका जीत सिंह था नांव।

राजा कहिये चहलारी का

जेहिका बाँट परी तरवार।

ब्याह क कँगना कर मां बाजै

लक्खी मौर देय बहार।

हाथी घिरिगा जब राजा का

महावत गया सनाका खाय।

बोला महावत तब राजा ते

भैया दीन बंधु महराज।

मरजी पावौं सहजादे की

तुरतै चहलारी देउँ पहुँचाय।

सुनि के राजा राहुर होइगा

करिया नैन लाल होइ जाय।

बोला राजा चहलारी वाला

जहिका बलभद्र सिंह नांव कहाय।

हट जा – हट जा मेरे आगे से

तेरा काल रहा नियराय।

धरम क्षत्री का नाही है

भागै रण ते पीठ देखाय।

अरे महावत बैठा दे हाथी

सोन कड़ा दे उं दोनों हाथ।''

बलभद्र सिंह की प्रशस्ति गाथा

''भाजि गये इलंगी फिलंगी,

भाजि गये गज के असवारा।

हरिदत्त कहैं हम खेत लड़न,

उइ जाय लुकान नदी के किनारा।

एक जीवत है बलभद्र बली,

जिन जाय झपटि अंगरेज को मारा।''

लोक कवियों के कण्ठों से ही गोंडा के राजा देवी बक्श की गौरव गाथा गूंजी है–

''राजा देबी बकस लोह बंका

जिनका रत्ती भर न संका

वहि बजवाय दीन है डंका

राजा एक सर बँधाय दीन लाय।

जब राजा कै राज रहा

तब सुखी सबै संसार रहा

घान, जुँधरिया, सांवा, कोदो,

सस्ता भाव बिकाय रहा।

राजा देवी बकस अस सुन्दर

उनके हाँथ सोने का मुन्दर

उनके आगे सब लगैं छछुन्दर

उनकै चौरासी कोस मां रहै राज।

जब दागै तोप दैवु घर गरजै, फाट दरारा नइयां

हजारों गोरा डुब मरे बहि, कहते बप्पा दइया

भागो मेम चलौ बिल्लाइत, हिंया है बड़े धरइया

राजा एक सौ बंधाय दिया लाय।''

रायबरेली के नज़दीक शंकरगढ़ के राणा बेनीमाधव सिंह का बलिदान का वर्णन लोक कवि दुलारे ने की रचना।

"अवध मां रानाँ भयो मरदाना।

पहिल लड़ाई भई बक्सर माँ सेमरी के मैदाना।

हुवाँ से जाय पुरवा माँ जीत्यो तबै लाट घबड़ाना।

नक्की मिले मान सिंह मिलिगै जानै सुदर्शन काना।

छत्री बंस एकु ना मिलिहैं जानै सकल जहाना।

भाई बन्धु ओ कुटुम कबीला सबका करौ सलामा।

तुम जो जाय मिल्यो गोरन ते हमका है भगवाना।

हाँथ माँ भाला बगल सिरोही घोड़ा चलै मस्ताना।

कहैं दुलारे सुन मोरे प्यारे यों राना कियो पयाना।

लोक गायक भगवत दास ने राणा वेणी माधव के अन्तिम क्षणों की वीरता दर्शाते हुए गाया –

"मार पीटि के राना निकरिगे

गोरन मन खिसियाना।

भगवत दास कहैं कर जोरे

अमल करै भगवाना।

भजे मन रामै रामा,

चल्यौ गयो जग से राना।''

बिहार राज्य के शाहाबाद जिले के डुंमराव नामक स्थान में जन्म मनोरंजन प्रसाद सिन्हा ने सन् 1921 में 'फिरंगिआ' लिखी जो अंग्रेजों द्वारा जब्त कर ली गयी। इसकी प्रतियाँ मारिशस और फिजी तक भेजी गयी थीं–

''सुन्दर सुघर भूमि भारत के रहे रामा,

आज उहे भइल मसान रे फिरंगिआ।

अन्न धन जन बल बुि सब नाश भइल,

कौनों के ना रहल निशान रे फिरंगिआ।

जहवाँ थोड़े ही दिन पहले ही होत रहे,

लाखों मन गल्ला और धान रे फिरंगिआ।

उहवे पर आज राम मथवा पर हाँथ धय के,

बिलखि के रोवैला किसान रे फिरंगिआ।

चेत जाउ चेत जाउ भैया रे फिरंगिआ ते,

छोड़ दे अधम के पंथ ये फिरंगिआ।

छोड़ के कुनीतिया सुनीतिया के बांह गहु,

भला तोर करी भगवंत रे फिरंगिआ।

मरदानापन अब तनिको रहल नाहीं,

ठकुर सुहाती बोले बात रे फिरंगिआ।

रात दिन करेले खुसामद सहेबवा के,

सहेले विदेशिया के लात रे विदेशिया।

आजु पंजाबवा के करि के सुरतिया से,

फाटल करेजवा हमार रे फिरंगिआ।

भारत के छाती पर भारत के बच्चन के,

बहल रकतवा के धार रे फिरंगिआ।

दुधमुंहा लाल सम बालक मदन सम,

तड़पि–तड़पि देले जान रे फिरंगिआ।''

छपरा–दहियावाँ के रघुवीर शरण ने अपने बटोहिया गीत के माध्यम से भारत की एकता–अखंडता को रेखांकित किया–

"सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,

मोरे प्राण बसे हिम खोह रे बटोहिया!

एक द्वार घेरे राम हिम कोतवलवा से,

तीन द्वार सिन्धु घहरावे रे बटोहिया।

जाहु जाहु भैया रे बटोही हिन्द देखि आउ,

जहावाँ कुहकि कोइलि बोलै रे बटोहिया।

पवन सुगन्ध मद अगर चननवा से,

कामिनी बिरह राग गावे रे बटोहिया।

गंगा रे जमुनवा के झगमग पनिया से,

सरजू झमकि लहरावे रे बटोहिया।

ब्रह्मपुत्र, पंचनद, घहरत निस दिन,

सोनभद्र मीठे स्वर गावे रे बटोहिया।

तनक, कबीर दास, शंकर, श्री राम कृष्ण,

अलख कै गतिया बतावे रे बटोहिया।

विद्यापति, कालिदास, सूर, जयदेव कवि,

तुलसी के सरल कहानी रे बटोहिया।''

1932 में आगरा के खेम सिंह नागर की रचना जिला जेल में लिखी गई। यह रचना नगला पदम बुलन्दशहर से भेजे उनके पत्र से दर्ज थी –

''जेलन में अजब बहार लुटि चलिहैं फुलवारी।

जा के हाथ तिरंगा देखे भेजि देय ससुरार

मुखिया चौकीदार संग में पहुी है थानेदार,

पीछे ते चल्यौ पटवारी।

वरना की पोशाक स्वदेशी जाकी जब बहार,

पैसा टका एक नहिं छोड़े जूताहु लेत उतार,

बनायो चोखो ब्रह्मचारी।

बड़े बड़े कमरन में जनमासे, पलंग पड़े तैयार,

बेटी वारे के चपरासी वार्डर नम्बरदार,

करत खातिरदारी।

साढ़े नौ बजे पर बहना रोज होइ बरौठी,

धीमे धीमे बाजे बाजे जहाँ पुलिस की कोठी,

बजै धुनि प्यारी।

चना चबैनी बड़ी सवेरे जेलर लावे हाल,

लैनि–लैनि में एक–एक डिब्बा बांटत बाबू लाल,

जेवैं सब नर नारी।

नमक मसाले मिर्च दाल में छै–छै मिले सुहाग,

अष्टधातु की लागी तश्तरी चांदी सम दमकात,

'नागर' कहे गाँधी सौ वरना आई के बैठो आज,

गूंथ खुलाई में मांगतु है अपनी पूर्ण स्वराज,

निभेगी कैसे रिश्तेदारी।''

''वतन वाले वतन के इश्क का इज़हार करते हैं।

तो मुजरिम बन के एक दुनियां नई तैयार करते हैं।

ये तसला और कटोरी दाल की या गिन के छै रोटी,

इन्हें हम अपना समझे हैं इन्हीं को प्यार करते हैं।

न सोते हैं न सोने दें हमें सैय्याद के हामी,

ये एक दो चार सारी रात पहरेदार करते हैं।

हमें क्यों जेल के जल्लाद करते मांफी मांगने को तंग,

हम तो हंस कर, मुस्कराकर शान से इन्कार करते हैं।

ये देखें इम्तहां में अच्छे नम्बर कौन लाता है,

लगी है होड़ यूँ 'नागर' तो फिर तकरार करते हैं।''

गांधी के आइल जमाना (भोजपुरी)

इसे भोजपुरी में पहला बिरहा कहा जाता है –

''गाँधी के लड़इया नाहीं जितबे फिरंगिया,

चाहे करु मजवा उड़ौले एही देसवा में,

अब जइहैं कोठिया बिकाय।''

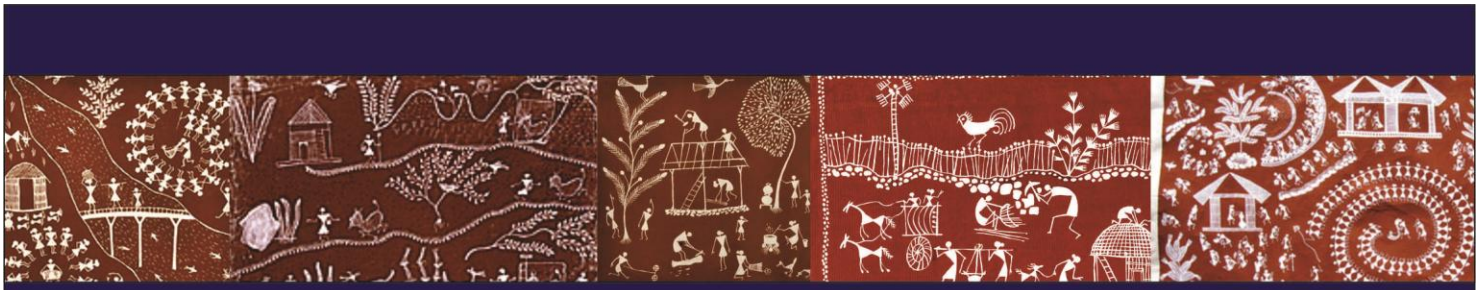

“सुमिरौ गाँधी और गंगा, बस्तर पहरे रंगा–रंगा।
जिनके कर्म में राज लिखा, फिर कोई नहीं मेटने वाला,
कितो काम करिहैं वह गाजी, कितौ काम करि हैं भाला,
लड़ने मां अंगरेज खड़ा है, बिगड़ परे हिन्दू काला।
रामचन्द्र केदार नाथ क्या, लेकचर देते नीराला,
बैठे गाँधी पूजा करते, फेर रहे तुलसी माला।”

सन् 1857 के विद्रोह और मंगल पांडेय की शहादत पर रचा गया भोजपुरी गीत। रचनाकार : अज्ञात

जब सत्तावन के रारि भइल
बीरन के बीर पुकार भइल
बलिया का मंगल पाण्डे के
बलिवेदी से ललकार भइल
मंगल मस्ती में चूर चलल

पहिला बागी मसहूर चलल

गोरिन का पलदनि का आगे

बलिया के बाँका सूर चलल

वेल्लोर विद्रोह के पर मौलवी इस्माईल मेरठी का जनगीत –

मिले खुश्क रोटी जो आज़ाद रहकर

तो वह खौफो जिल्लत के हलवे से बेहतर

जो टूटी हुई झोपड़ी वे जरर हो

भली उस महल से जहाँ कुछ खतर हो

नौटंकी के छंद के माध्यम से जनता को क्रांति के लिए आहवान। रचनाकार : अज्ञात

गाँव गाँव में डुग्गी बाजल, बाबू के फिरल दुहाई

लोहा चबवाई के नेवता बा, सब जन आपन दल बदला

बा जन गंवकई के नेवता, चूड़ी फोरवाई के नेवता

सिंदूर पोछवाई के नेवता बा, रांड कहवार के नेवता

पुरुषों को क्रांति के लिए आंदोलित करता महिलाओं का लोकगीत। रचनाकार : अज्ञात

लगे सरम लाज घर में बैठ जाहु
मरद से बनिके लुगइया आए हरि
पहिरि के साड़ी, चूड़ी, मुंहवा छिपाई लेहु
राखि लेई तोहरी परगरइया आए हरि

1857 की जनक्रान्ति का वर्णन गया प्रसाद शुक्ल 'स्नेही' द्वारा किया है –

सम्राट बहादुरशाह 'ज़फर', फिर आशाओं के केन्द्र बने
सेनानी निकले गाँव गाँव, सरदार अनेक नरेन्द्र बने
लोहा इस भाँति लिया सबने, रंग फीका हुआ फिरंगी का
हिन्दु मुस्लिम हो गए एक, रह गया न नाम दुरंगी का
अपमानित सैनिक मेरठ के, फिर स्वाभिमान से भड़क उठे
घनघारे बादलों से गरजे, बिजली बनबनकर कड़क उठे
हर तरफ क्रान्ति ज्वाला दहकी, हर ओर शोर था जोरो का
पुतला बचने पाये न कहीं पर, भारत में अब गोरों का

स्वतन्त्रता की गाथाओं में इतिहास प्रसिद्ध चौरीचौरा की डुमरी रियासत के बंधु सिंह का नाम आता है, जो कि 1857 की क्रान्ति के दौरान अंग्रेजों का सर कलम करके और चौरीचौरा के समीप स्थित कुसुमी के जंगल में अवस्थित माँ तरकुलहा देवी के स्थान पर इसे चढ़ा देते। कहा जाता है कि एक गद्दार के चलते अँग्रेजों की गिरफ्त में आये बंधु सिंह को जब फांसी दी जा रही थी, तो सात बार फांसी का फन्दा ही टूटता रहा। यही नहीं जब फांसी के फन्दे में उन्होंने दम तोड़ दिया तो उस पेड़ से रक्तस्राव होने लगा जहां बैठकर वे देवी से अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने की शक्ति मांगते थे। पूर्वांचल के अंचलों में अभी भी यह पंक्तियां सुनायी जाती है–

सत बार टूटल जब, फांसी के रसरिया

गोरवन के अकिल गईल चकराय

असमय पडल माई गाढ़े में परनवा

अपने गोदिया में माई लेतु तु सुलाय

बंद भईल बोली रुकि गइली संसिया

नीर गोदी में बहाते, लेके बेटा के लसिया

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का भारत दुर्दशा का मार्मिक वर्णन है–

रोअहु सब मिलिकै आवहु भारत भाई

हा हा! भारतदुर्दशा न देखी जाई

सबके पहिले जेहि ईश्वर घन बल दीनो

सबके पहले जेहि सभ्य विधाता कीनो

सबके पहिले जो रूप रंग रस भीनो

सबके पहिले विद्याफल जिन गहि लीनो

अब सबके पीछे सोई परत लखाई

हा हा! भारतदुर्दशा न देखी जाई

शंकर पुर के राना बेनीमाधव सिंह की वीरता का बखान अवध के लोकगीतों में –

राजा बहादुर सिपाही अवध में

धूम मचाई मोरे राम रे

लिख लिख चिठिया लाट ने भेजा

आब मिलो राना भाई रे

जंगी खिलत लंदन से मंगा दूं

अवध में सूबा बनाई रे

1857 की क्रांति में बेगम हज़रत महल ने लखनऊ की हार के बाद अवध के ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर क्रान्ति की चिंगारी फैलाने का महत्वपूर्ण काम किया जिसकी अभिव्यक्ति अवधी लोकगीत में हुई–

मजा हज़रत में नहीं पाई

केसर बाग लगाई

कलकत्ते से चला फिरंगी

तंबू कनात लगाई

पार उतति लखनऊ का

आयो डेरा दिहिस लगाई

आस पास लखनऊ का घेरा

सड़कन तोप धराई

(रचनाकार : अज्ञात)

इस स्वतंत्रता महायज्ञ में कई वीर वर आये काम

नाना धुंधू पंत, तांतिया, चतुर अजीमउल्ला सरनाम

भारत के इतिहास गगन में अमर रहेगा जिनका नाम

गोरो ने था जुर्म ठैराया वीर कर गये थे जो काम

(नौटंकी के एक पारंपरिक छंद में क्रांतिकारियों का वीसा वर्णन रचनाकार : अज्ञात)

बक्सर के भोजपुरी कवि एवं गायक डॉ0 कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' का नाम प्रमुख रहा, जिन्होंने गीत के माध्यम से राष्ट्र को आह्वान दिया था–

हम हैं इसके मालिक हिन्दुस्तान हमारा,

है पाकवतन कौम का जन्नत से प्यारा।

यह है मिल्कियत हिन्दोस्तां हमारा,

ठसकी कदीम कितना नईम सारे जहाँ से न्यारा,

करती है जरखेज जिसे गंगा यमुना की धारा।

ऊपर बर्फीला पर्वत पहरेदार हमारा

नीचे साहिल पर बजता सागर का नगाड़ा

भोजपुरी क्षेत्र के प्रमुख क्रान्तिकारी बाबू रघुबीर नारायण सिंह ने 'बटोहिया' गीत की रचना की –

सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से मोरे प्रान बसे हिम खोह रे बटोहिया

एक द्वार घेरे राम हिम कोतवलवा से, तीन द्वार सिंधु घहराये से बटोहिया।

बिहार प्रान्त के शाहाबाद जनपद के डुमराव नामक स्थान में जन्म मनोरंजन प्रसाद सिन्हा ने फिरंगिया नामक पुस्तक लिखा जो कि अंग्रेजों द्वारा जप्त कर ली गयी।

सुन्दर सुघर भूमि भारत के रहे रामा
आज इहे भइल मसान रे फिरंगिया।
अन्न, धन, जन, बल, बुद्धि सब नास भइल
कौनौ के ना रहल निसान रे फिरंगिया।

एको जो रोउवां निरदेसिया के कलपति
तेर नास होई जाई सुन रे फिरंगिया।
दुखिया के आह तोरे देहिया के भसम करी

जरि भुति होई जईबे छार रे फिरंगिया

भारत की छाति पर, भारत के बच्चन के,
बहल रक्तवा के धार रे फिरंगिया।
दुधमुहँा लाल सम, बालक मदन सम,
तड़प तड़प देले जान रे फिरंगिया।

बिहार के सारण जिले के संस्कृत विद्वान गोपाल शास्त्री, सन् 1932 में उत्तर प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष भी हुए तथा असहयोग आन्दोलन में भी अगुआ रहे। उनके रचित लोकगीत बहुत लोकप्रिय हुए। उनका सारा साहित्य जब्त कर लिया गया। उनका एक लोक गीत –

उठु उठु भारतवासी अबहु ते चेत करू
सुतने में लुटलसि देश रे बिदेशिया।
जाननी जनम भूमि जान से अधिक जानि
जनमेले राम अरू कृष्न रे बिदेशिया।

भारतीय दर्शन, विचार, विदेशी का बहिष्कार, आत्मनिर्भरता, आजादी के कार्यक्रमों का प्रमुख हिस्सा बना चुका गांधी का चरखा भी लोकगीतों का विषय रहा है। यह पारंपरिक लोकगीतों में मिलता है–

गांधी कहै, गांधी कहै, मन चिल्ला लाइको

गंगा सरजू चाहे कृपा पर नहाइ के

लिहले अवतार एही देसवा में आइ के

चक्र के बदला में चरखा चलाई के

मोरे चरखे की टूटे न तार

चरखवा चालू रहे।

चरखा में बड़ा गुन भइया धोखा सुन सुन

खेल खेल में काम सिखावे बड़ा हुनर बड़ा गुन।

देसवा के लाज रहि है चरखा से

गाँधीजी के मान सनेसवा

पिया जनि जा हो विदेसवा।

उठो भारतवासी उठो भारतवासी गांधी के चरण धरो जी धरो

कपड़ा पहनो स्वदेशी कपड़ा पहनो स्वदेशी विदेशी का त्याग करो जी करो

उठो भारतवासी उठो भारतवासी गांधी के चरण धरो जी धरो

विद्या पढ़ो तो हिन्दी, विद्या पढ़ो तो हिन्दी अंग्रेजी का त्याग करो जी करो

गांधी का प्यारा चरखा है, गांधी का

जब चरखा चलै जब अंगरखा बनै,

लहंगा सारी बनै धोती कुर्ता बनै, गांधी का।

जब चरखा चलै तब खादी बनै,

माल विदेशी हटै, दुःख सारा कटै, गांधी का।

इलाहाबाद की लोकगीत रचनाकार श्रीमती विजय लक्ष्मी देवी ने स्वतंत्रता आन्दोलन में बहुत से लोकगीतों की रचना की थी। इन्हें जलसों, सभाओं में गायकों द्वारा खूब गाया गया।

लल्ता तेरे हुए में मैं क्या बाटूंगी,

ननदी जो आयेगी छठिया धरायेंगी,

लल्ला तुम ही बताओ मैं क्या दूंगी,

खादी की साड़ी उन्हें हाथ देना,

कहना जय गांधी, जय गांधी, जय गांधी।

देवर जो आयेंगे, बंशी बजायेंगे,

लल्ला तुम ही बताओ मैं क्या दूँगी,

झंडा तिरंगा उन्हें हाथ देना,

कहना जय भारत, जय भारत, जय भारत।

गांधी जी ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया। गया तब फतुंहा ग्राम निवासी मसुरिया दीन जो कि कजरी अखाड़े के उस्ताद थे, ने एक चुनरी लोक गीत के माध्यम से मखमल और रेशम त्यागने की बात कही–

हाथ जोड़ के पैया पड़ती

विनती सुनो हमार।

रेशम औ मखमल की साड़ी

होती है बेकार।

हमें छपाय दे सजना, एक सुदेशी हो चुनरिया।

एक अन्य गीत में जलियां वाला बाग हत्याकाण्ड से प्रभावित होकर के मसुरियादीन लिखते हैं–

नम चूंदर में शहीदों का बलम छपवाना।

जलियां बाग का नक्शा कहीं पे दिखलाना।

नमक सत्याग्रह की चर्चा भी लोकगीतों में मिलती है–

बापू से मिलने आये भारतवासी

मुट्ठीभर नमक बचायो जी।

एक लोक लुटल जालिम

दुसर लो लूटल

तिसरा जे लेयी

बापू बचायी जी।

लहराते हुये तिरंगे को देखकर भारतीयों खुशी की ठिकाना नहीं, उसी खुशी के भाव को इस लोकगीत में व्यक्त किया गया–

भारत की बाकी बारात चली

चलो देखन चले चलो देखन चलें

गांधी बने समधी जवाहर बने दुल्हा

अब जय हिन्दी जय हिन्दी के ढोलक बजी

चलो देखन चले चलो देखन चलें

भारत की बांकी बारात चली

झंडा तिरंगा ऐसा सजा जैसे फगुनवां की होली मची

चलो देखन चले चलो देखन चलें।

गांधी का स्वराज दर्शन पर यह लोकगीत–

गांधी बचन भायो सुरजवा लेवो विदेशवा

हमरा ससुर जी गांधी क नौकर

देशों में झंडा दिखाये सुरजवा लेवो विदेशवा

हमरा भसुर जी गांधी नौकर

देशों में लड़िका पढ़ायो सुरजवा लेवो विदेशवा

हमरा देवर जी गांधी क नौकर

देशों में चरखा चलायो सुरजवा लेवो विदेशवा

महात्मा गांधी के व्यक्तित्व पर एक कजरी गीत–

पिया अपने संग हमका लिआये चला

मेलवा घुमाये चला ना

लेबई खादी चूनर धानी

पहिन के होइ जाबै रानी

चुनरी लेबई लहरेदार

रहौ बापू औ सरदार

चाचा नेहरू के बगले बइठाये चला

मेलवा घुमाय चला ना

रहइ नेताजी सुभाष

और भगत सिंह खास

अपने शिवाजी के ओहमा छपाये चला

जगह जगह नाम भारत लिखाये चला

मेलवा घुमाय चला ना

नमक सत्याग्रह/आंदोलन पर लोक स्वर–

लाला धनि धनि भइलै नमकवा है

लाला, सुन्दर सुराज के सिंगार

नमकवा धनि धनि रे।

लाला, दमरी अधेला के नमकवा रे।

एक अन्य लोकगीत के माध्यम से बिदेसिया लोक शैली में नमक की महिमा बखानी गयी है–

हिन्द में सुराज के तिलक भालपवले तैं

आठों याम तोको परनाम रे नमकवा

केवल सिंगार रहले भोजन के दुनिया में,

दादा बाबा इहै सब जानै रे नमकवा।

विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर, भारतीय वस्त्र अपनाने पर रचा गया लोकगीत–

सुना हे भइया सुना हे बन्धु
जउन अंग्रेजवन का भगाना है
कपरा लत्ता, साज समनवा
देस के ही अपनाना है।
रेसम छाड़ सूत पहनना
बापू जी का नारा है
सब मिल जुट के एक हो जाय
कसम यही अब खाना है।

इसी विषय पर उत्तर भारतीय आदिवासी जनगीत–

सदा रहो भइया सदा रहो भहया
गुलेची पूंप लेखा सदा रहो भइया
राजिदुनिया सदर नानो
तू भइया सदा रहो
महलरो नाचा बाजा मरललो सिंगार पतार
राजिर दुनिया सदर ननों

बिहार/झारखण्ड के उरांव जनजाति के कलाकार समुदाय अपने इष्टदेव चींया बाबा का स्मरण करते हुये अंग्रेजों को हटाओ और जनता का राज लाने का आहवान करते हैं–

चींया चींया बाबा राजिनिम चींया बाबा

देशेनिम चींया बाबा किलसनिम चींया बाबा

राजा अंग्रेज, हाकिम अंग्रेज, जरीछार ननाबाबा

राजिनिम चींया बाबा देशेनिम चींया बाबा

मध्य प्रदेश के ब्रिटिश हुकूमत से मुक्ति का भूमकाल गीत–

सुना तभी बाप भाई

कायेरी कुचन, पांगन नासन

करले आचे काय लाभ

रोजे दिनर अतेयाचार ने चेत चेघला

मांवली मांत के बंदना करलाय।

गढ़ेया करेया सबू विचार करलाय।

सेनवार दिने रूंढ़ा होई करि

उलनार माटा ने आसी आली पाली

धुवा माड़ेया मिसि लड़ई मुरायलाय

धन धन तिरक सोसा

नेतानारे देव मावली रत्ना

कांडकी परगने कुडुमतला

दुया देवी उठलाय आऊरी लकबीर गलाय गढ़ सहरे।

काय कर के सकबाय साहेब चार

नति बाटे जायसी पानी धार

ए परकार देवता र सत

धुरवा माड़ेया मिसि लड़ई मुरायलाय

जहाँ एक ओर राजनैतिक लड़ाई जारी थी और दूसरी ओर सशस्त्र क्रान्ति हो रही थी, वहीं पर इलाहाबाद जैसी साहित्यिक नगरी में एक साहित्यिक क्रान्ति ने जन्म ले लिया था। इलाहाबाद के फाफामऊ में सुल्ताना डाकू के नाम से प्रसिद्ध पं0 रामराज त्रिपाठी अपनी संगीत मण्डली 'श्री राम संगीत मण्डली' में बिना किसी

हथियार के लोक नाट्य नौटंकी के माध्यम से अलग ही तरीके से लड़ रहे थे। नौटंकी के विषय होते थे अंग्रेजों के खिलाफ और बीच में होते थे पं0 राम राज त्रिपाठी के ओज भरे गीत और नौंटकी की समाप्ति पर महान नेताओं के उद्‌बोधन युक्त सभाएं।

लोक नाट्य विशेषज्ञ, राज कुमार श्रीवास्तव को 1988 रामराज में त्रिपाठी जी के पुत्र जय–जय राम त्रिपाठी ने अपने पिता जी का संग्रह दिखाया था जिसमें से ज्यादातर प्रतिबंधित पुस्तकें थीं। नौटंकी के आलेखों के अनुसार खेल मात्र एक–डेढ़ घंटे के होते थे किन्तु उसका रात्रि भर प्रस्तुत करने के उद्‌देश्य से त्रिपाठी जी प्रसंग से सम्बन्धित गीतों और लोकगीतों को जोड़ना आरम्भ कर दिए। त्रिपाठी जी के गीतों के स्रोत थे तत्कालीन प्रतिबंधित पुस्तकें। राष्ट्रीय सदन प्रयाग से प्रकाशित नौकरशाही की तबाही जिस पर संग्रहकर्ताओं में श्याम बिहारी श्रीवास्तव, कालिका मिश्र एवं लक्ष्मन प्रसाद गुप्त नाम अंकित है, प्रथम उन्तीस खंडों के गीतकार डॉ0 हरिहर प्रसाद शर्मा ने अंग्रेजों के वेतन पर पले हुए भारतीय सिपाहियों को अंग्रेजी सरकार से असहयोग करने का आहवान करते हुए तत्कालीन परिस्थितियों को चित्रित किया गया है। संकलन के पांच खंड आ चुके थे छठा खंड ही शेष था। पंडित जी के संकलन में कल्लू, बचऊ लाल, विजय लक्ष्मी देवी, पं0 माधव शुक्ल के साथ साहित्योदय प्रकाशन प्रयाग से प्रकाशित पुस्तकें 'असहयोग का फोटो' जिसके रचनाकार भवानी प्रसाद गुप्त

'मौज' हैं। इसी प्रकार राजपाली प्रेस प्रयाग से बाबू मंगल राम के प्रबंधन में सन् 1920 में प्रकाशित एवं श्री ओंकार नाथ गुप्त द्वारा रचित सदाये वतन के एक–एक शब्द अंगारा बन गए। उनके संकलन में भारती भंडार, दालमंडी, कानपुर द्वारा प्रकाशित पं0 काली प्रसाद शास्त्री द्वारा रचित लोक गाथा 'दिल्ली पतन' भी उल्लेखनीय है।

पहली आजादी की जंग के बाद आजादी की दूसरी लड़ाई की चिंगारी शनैः शनैः लोक विधाओं की हवा पाकर भड़कती रही। आजादी के दीवाने नौटंकी रचनाकारों ने क्रांति की नौटंकियां लिख कर गांव शहर में प्रस्तुत करते रहे। लाला बाबू लाल की गांधी हरन उर्फ सपने का कमला, कन्हैया लाल चतुर्वेदी, प्रहलाद सत्यव्रत, कृष्ण पहलवान–वीर बालक, बलियां का शेर, भगत सिंह, असहयोग चअनी सात भाग, मुनीन्द्र नाथ गोस्वामी फक्कू जी बलिया–बलिदान, पं0 रामराज त्रिपाठी – सत्य हरिश्चन्द्र, धोखा, राजा मोरध्वज, सुल्ताना डाकू, पुकार माता का पिलाय नौटंकियों के मंचन से जन–जन विद्वेलित हो उठा।

पं0 जवाहर लाल नेहरू की जन्म एवं कर्मभूमि होने के कारण इलाहाबाद स्वातंत्रयांदोलन का गढ़ बन गया। इलाहाबाद की प्रथम नौटंकी मंडली को फाफामऊ में 'श्री राम संगीत मंडली' के नाम से स्थापित किया पं0 राम राज त्रिपाठी ने। पं0 मोती लाल नेहरू के परम सखाओं में थे त्रिपाठी जी के पिता जी। प्राथमिक शिक्षा

ग्रहण करते त्रिपाठी जी द्वारा गाये आजादी के लोकगीतों की चारों ओर धूम थी। उनके पिता जी अब इलाहाबाद जाते साथ साथ में राम राज जी को आनन्द भवन अवश्य ले जाते, वहां पं0 मोती लाल नेहरू जी के साथ जवाहर लाल जी उनके लोकगीत गाने की फर्माइश करते। किशोरावस्था से युवा होते त्रिपाठी जी उस्ताद इंदरमल, चिरंजी लाल, रूप राम रचित नौटंकियां पढ़ी उन्हीं हाथरसी शैली नहीं भाई। वे हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी के अच्छे जानकार थे। उन्होंने स्वयं नोटंकी लिखना आरम्भ कर दिया। उन्होंने हाथरसी शैली को नकार कर समस्त छंदों को अपने विशेष धुनों में तैयार किया। एक बार पं0 नेहरू जी ने लाल बहादुर शास्त्री को फाफामऊ के समीप मंडारा गांव में सभा करने के लिए भेजा जहां त्रिपाठी जी अपनी नौटंकी 'माता का विलाप' स्वयं हारमोनियम पर अकेले गाकर प्रस्तुत कर रहे थे। खूब भीड़ हो गई थी शास्त्री जी बहुत खुश हुए। उन्होंने त्रिपाठी जी से कहा आप नौटंकी मंडली बना लीजिए। त्रिपाठी जी के पिता को शास्त्री जी की बात जच गई उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर मंडली के सारे सामान जुटा लिए। यह लगभग सन् 1913 का समय था। दक्खिनी उस्ताद ने नक्कारा, सुक्खू ने ढालक, राजा शुक्ला ने हारमोनिया संभाला, राजाराम पांडे, प्रभु, बद्री पाण्डेय, शेख मूसा, रामफल आदि कलाकार गांव–गांव अपनी कला का प्रदर्शन करने लगे। रात्रि में जहां नौटंकी होती वहां सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, स्वदेशी, अंग्रेजों के जुल्मों को बताया जाता, प्रचारक होते थे– आजादी के

दीवाने। अंग्रेज पुलिस जिन क्रांतिकारियों का खोज रही थी सबकी शरण स्थली बन गई श्री राम संगीत मंडली–शास्त्री जी प्रायः साथ रहते।

जालियां वाला बाग कोड और प्रतापगढ़ के निर्दोषों को गोली से भूनने पर पं0 राम राज जी मर्माहत किन्तु ओज स्वर में गरज उठे– भदरी के मेले में

जालियान बाग की वो हत्या भी मेने देखी,

देखा था कायरों का शेरे बबर कहाना।

देखी प्रतापगढ़ की अन्याय पूर्ण घटना

प्यारे कृषक गणों पर हों गोलियां चलाना।

सन् पैंतीस में अंग्रेजों द्वारा 'सुल्ताना डाकू' पर प्रतिबंध लगा दिया, कारण था प्रस्तुति में अंग्रेजों की बर्बरता तथा सुल्ताना डाकू द्वारा अंग्रेजों तथा उनके समर्थकों को लूट कर धन गरीब भारतवासियों को बांटते प्रदर्शित करना था। पं0 मोतीलाल नेहरू ने कचहरी जाकर इस प्रतिबंध को निरस्त कराया। अंग्रेज वकील का कहना था कि इस नौटंकी को देखने महिलायें व बच्चे छतों पर चढ़ जाते हैं जिससे प्रायः दुर्घटनायें होती हैं।

सन् उन्तालिस में महात्मा गांधी को नेहरू जी इसमाइलगंज की एक सभा में ले आये। गांधी जी मंडली के कलाकार श्री राजाराम पाण्डेय द्वारा रचित लोकगीत सुनकर प्रसन्न होने के साथ ठट्ठा मार कर हंसे। गीत की दो पंक्ति दृष्टव्य है–

"रग–रग में गांधी के ज्ञान हो,

अमर रहे बुढ़ऊ ठठरिया।"

जब पं0 जवाहरलाल नेहरू जेल चले गए, सभाओं की कमान संभाली श्रीमती कमला नेहरू ने। बहरिया के समीप एक सभा में अंग्रेजों के आदेश के सिपाहियों ने श्रीमती कमला नेहरू जी का बाल पकड़ कर खींचते हुए जमीन पर डाल दिया। सारे कलाकार सिपाहियों से जूझ पड़े। वानर सेना की अध्यक्षा/संचालिका इन्दिरा गांधी मां का अपमान न सह सकीं, चिल्ला उठीं–टोडी बच्चा हाय। हाय। पूरी सभा चिल्ला उठी–टोडी बच्चा हाय। हाय। विपरीत परिस्थिति देख अंग्रेज वापस चले गए किन्तु श्री राम संगीत मंडली के तिलमिलाये कलकारों ने अंग्रेजों के फाफामऊ स्थित शस्त्रागार और माल गोदाम में आग लगा दिया।

बाराबंकी (गड़ेरिया डीह) में अपनी मंडली चला रही हबीबुन बाई जब 1941 में घूरपुर के निवासियों द्वारा आयोजित नौटंकी प्रतियोगिता में आई, श्री राम सांगीत मंडली से परास्त होने के कारण सारे कलाकारों समेत उन्हीं में विलीन हो गई।

हबीबुन बाई ने जब आनन्द भवन में पं0 माधव शुक्ल का गीत मेरी माता के सर पर ताज रहे गाया पं0 जवाहर लाल मंत्र मुग्ध ताली बजाते अपने स्थान से उठ गए और उन्होंने उनको कोकिला बाई के खिताब से नवाजा। पं0 राम राज त्रिपाठी और कोकिला बाई इलाहाबाद में आजादी की लड़ाई के पर्याय बन गए।

रामराज त्रिपाठी जी के साथ इलाहाबाद के गीतकारों ने भी अंग्रेजों का पीछा नहीं छोड़ा और सभी अपनी कलम को हथियार बनाकर गीत लिखते रहे। कुछ गीत तो लोक द्वारा बने और लोक में ही नहीं राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रचलित हुये। इलाहाबाद की नौटंकियों में प्रासंगिक लोक गीतों को जोड़ने की परम्परा जो बनी उसका निर्वाहन करते हुये आजादी की लड़ाई में पं0 जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री एवं महात्मा गांधी की सभाओं में भी त्रिपाठी की मंडली के कलाकार आजादी के तराने गाया गरते थे। उनके गीत अपने लिखे तो होते ही थे, वे दूसरों के भी गीत गाया करते थे। वानर सेना के सदस्य जयजय राम त्रिपाठी के पास उन गीतों का संकलन आज भी जीर्ण शीर्ण अवस्था में सुरक्षित रखा है जिसमें से एक संवत 1978 में राष्ट्रीय सदन पुस्तकालय प्रयाग से 'नौकरशाही' के नाम से प्रकाशित हुआ था जिसके रचनाकार डॉ0 हरिहर प्रसाद शर्मा ने अंग्रेजों के वेतन पर पले हुए सिपाहियों को अंग्रेजी सरकार से असहयोग का आहवान करते हुये तत्कालीन

परिस्थितियों को भी चित्रित किया है। तीस खण्डों के इस गीत का एक खण्ड इस प्रकार है–

"आशा है जन्मभूमि की तुम विनती सुनोगे।
इन्साफ पूर्वक उसे तुम मन से गुनोगे।
जल्दी से असहयोग का आरम्भ करोगे
उत्साह से जननी का सारा कष्ट सहोगे।
हरिहर प्रसाद कर रहा है प्रेम से प्रणाम
हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।"

कल्लू राम गुप्त ने अंग्रेजों की बर्बरता के विरूद्ध संघर्ष करने का आहवान किया –

हम अब विचार अपना हरगिज नहीं तजेगें
चाहे प्राण तन से निकले लेगे स्वराज लेंगे
कल्लू की ये विनय है बिल्कुल न खौफ खाना
कह दी कड़क के हम तो लेंगे स्वराज लेंगे।

बचऊ लाल जी ने खड़ी बोली में लिखा–

चरख चक्र सुदर्शन प्यारा

तैतिस कोटि भारतियो के

दृग का पूज्य सहारा। ?

भवानी प्रसाद गुप्त 'मौज' द्वारा रचित गीतों का संग्रह 'असहयोग का फोटो' जो साहित्योदय प्रकाशन प्रयाग से छपा था। उन गीतों में से एक गीत उस समय राम धुन की तरह ही बहुत बड़ी प्रचलित हुआ और जन मानस द्वारा खूब गाया गया। इसी गीत की कुछ उपलब्ध पंक्तियाँ –

हम तौ चरखे से लेबइ स्वराज

हमार कोई का करिहै

अपने भारत का करबै सुकाज

हमार कोई का करबै

'मौज' कहै हम आपस में हिल मिल

मौजइ में लेबइ स्वराज

एक अन्य गीत में मौज जी अपने वीर बहादुरों की प्रशस्ति गाथा गा रहे हैं–

धनि धनि गांधी की महाराज

चरखा चक्र चलाने वाले।

भर दी असहयोग आवाज

भारत भाग्य जगाने वाले।

सन् 1939 में जब गांधी जी इस्माइलगंज आये तब त्रिपाठी जी के कलाकार राजा राम पाण्डे ने अपना रचा गीत सुनाया था–

सत्यव्रत धारी चारी चरखा बिहारी

बांधि कमर में लंगोटी

डोरी खद्दर की तनियां

मन बिन अहिंसा विशाल दोनों हाथों से

ऐंचि खैंचि लीनों बाए भारत की कनियाँ।

मुंशी मसुरियादीन के कई शिष्यों ने उनसे गीत सीखे और देश भर में घूम घूम कर गाये। उनके शिष्यों में प्रमुख दयाराम, निरंजन, राम मूरत, एवं राजा राम 'गायन' प्रमुख थे। उसी समय का उनका एक कजरी लोक गीत –

एक ठी चुँदरी मंगाय दे बूटे दार पिया

मना कही हमार पिया ना।

महिला सरोजनी के संग

स्वरूपा देवी भरे उमंग

होवै वीर जवाहिर घूघट के मझार पिया।

जो हम ऐसी चूदर पइबै

अपनी छाती से लगइबै

मसुरिया दीन लूटै सावन में बहार पिया।

इलाहाबाद के ही मुट्ठीगंज के डाक खाने में डाकिया के पद पर काम करने वाले जोगेश्वर प्रसाद जी की सुपुत्री श्रीमती विजय लक्ष्मी देवी का नाम लिये बिना तो आजादी की लोकगीतों के माध्यम से लड़ाई नहीं हो सकती। आजादी की लड़ाई के समय जब नेता जी सुभाष चन्द्र बोस छद्म वेश मे बंगाली बलाई बाबू के यहाँ रहने आये थे तब ही नन्ही विजय लक्ष्मी ने उनके दर्शन किये और प्रेरणा पायी आजादी के लोकगीतों की रचना की।

हरे रामा सुभाष चन्द्र बोस ने फौज सजाई रे हरी

अब न पहिनब हंसुली हैकल, अब न पहिनब सारी रामा

अब तो पहिनब वर्दी पेटी, फौज में जाइब रे हरी।

भदरी मेले में कुछ युवतियों के झुंड को एक लोक गीत गाते सुन त्रिपाठी जी हतप्रभ रह गए, वह गीत था–

"कांग्रेसी गोदनवा गोदाय दे बलमू।

माथे पे गांधी महात्मा गोदाय दे,

नाके पे नेहरू गोदाय दे बलमू।"

भदरी मेले से दक्खिनी उस्ताद के साथ समूह के पीछे–पीछे गाते सुनते पैदल हरिशंकर पुर (बलपुरवा) तक चले गए। रास्ते भर वह समूह आजादी के अद्‌भुत लोकगीत गाता रहा। वहां पहुंच कर उन्होंने विजय लक्ष्मी को देखा और जाना कि गाये जाने वाला गीत उन्होंने स्वयं ही तैयार किया है। उनकी इस प्रतिभा से पण्डित जी चकित रह गये।

इसके बाद त्रिपाठी जी बराबर मुट्‌ठीगंज जाते रहे और विजय लक्ष्मी जी से अपनी मंडली के लिए लोकगीत लिखवाते रहे। उनका एक लोकगीत पूरे इलाहाबाद का परिचय बन गया–

"सरकारी हुकुम जरा गम खाना।

किसकी कचेहरी है, किसका थाना,

किसका बना है जेहल खाना?

मोती की कचेहरी, है नेहरू का थाना,

गांधी का बना है जेहल खाना।

कहंवा कचेहरी, कहां पर थाना,

कहां बना है जेहल खाना?

कटरा–कचेहरी, कर्नेलगंज थाना,

नैनी बना है जेहल खाना।''

राम राज त्रिपाठी की मंडली के गीत, जो पुलिस प्रशासन में क्रांति का बीज बोने के लिए लिखा गया।

खण्ड 1 से 5 तक अनुपलब्ध

(6)

''हिंसा न करो, असहयोग व्रत पे तुम चलो।

'लेंगे स्वराज्य' इस से तिल भर भी न तुम टलो।।

आशीष देंगे सब तुम्हें फूलों व तुम फलो।

स्वच्छन्दता देवी की गोद में सदा पलो।।
निज स्वत्व ले के खाओ सभी सुख से अन्न आम।
हे हे पुलिस के भाइयों। अब मत बनो गुलाम।।

(7)

हाँ! छोड़ दो अब नौकरी सरकार की सभी।
देना न इनका साथ तुम हे वीर गण कभी।।
सेवा करोगे दिल से सुनो! देश की जभी।
मिल जायेगा स्वराज्य भारत वर्ष को तभी।।
धन्य वे देशार्थ जिन का काम आये चाम।
हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(8)

गर अब न उठे तो कहो किस दिन के लिए हो।
जननी की गोद में जो इतने दिन से जिये हो।।

सोचो अगर माता का अपने दूध पिए हो।

सरकार से क्यों अब तलक सहयोग किए हो।।

रक्षक बनो अब प्रेम से चरखे का चक्र थाम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(9)

सुन तो लो देवी का है अब हो रहा दरबार।

खुद बखुद है हो रही कुरबान ये सरकार।।

पाशविक शक्ति का इस के है न पारा वार।

गर्व में हो चूर, है ये छीनती अधिकार।।

चल देंगे ये योरोप सभी, होगा यही अंजाम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(10)

घूस लेने वाली गवर्नमेन्ट को तजो।।

सेवा करो माता की और जगदीश को भजो।।
जो कर चुके हो कर्म उससे अब न तुम लजो।
पर साज देशोत्थान के अब तुम सभी सजो।।
जल्दी उठो कर शासकों को आखिरी सलाम।
हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(11)

सरकार मानती नहीं है कोई करतार।
कर रही इस से वो हम पै आज अत्याचार।।
इसलिए सर्वेश प्रभु अब लेंगे अवतार।
नाश कर देंगे वे इन का सब कुटिल व्यवहार।।
मिल जायेगा स्वराज्य भी होगा यही परिणाम।
हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(12)

आत्मिक शक्ति को है ये जानती नहीं।

गर जानती तो ऐसा हठ ये ठानती नहीं।।

हम लोगों के अध्यात्म को ये मानती नहीं।

इस से है देश भर में आज शान्ती नहीं।।

करते रहो तुम जुल्म है, सब देखता घनश्याम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(13)

जानती है ये कि शासन करते रहेंगे।

भारत के माल–व–जर को सदा हरते रहेंगे।।

ये लोग भी इसी तरह दुख सहते रहेंगे।

कुछ कर नहीं सकते ये सिर्फ कहते रहेंगे।।

इस लिए वह कर रही है मौज से आराम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(14)

माता पै आज देख लो अति भीर है पड़ी।

आवश्यकता उस को मदद की है बहुत बड़ी।।

है पुकारती तुम्हें वो देख लो खड़ी।

आशा है उसकी अब तो तुम पै वीरगण अड़ी।।

बंधु गण अब तो उठो है होने आई शाम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(15)

कह दो ब्रिटिश सर्कार से अब हम नहीं तव दास।

हम से न अपने हित का रक्खो तुम कभी कुछ आस।।

अपने भाइयों का न अब हम करेंगे नाश।

तोड़ देंगे हम सभी परतंत्रता का पाश।।

काम का है वक्त अब लेंगे न हम विश्राम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(16)

सोता हुआ जो देश है उसको जगायेंगे।

उत्थान के हम साज सारे अब सजायेंगे।।

पंजाब का इन्साफ हम पहले करायेंगे।

पीछे इन्हें हिन्दोस्तान से भगायेंगे।।

कह देंगे इंगलैंड में जा के करो आराम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(17)

सब करेंगे पर अहिंसात्मक रहेंगे सर्वथा।

चाहे हमें जितनी सहन करनी पड़े जग में व्यथा।।

कैसे सुखी थे हम कि जब इनका यहाँ शासन न था।

मुंह पर मुहर है हाय, हम किस से कहैं अपनी कथा।।

सचमुच नहीं इन शासकों का है यहाँ पै काम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(18)

चर्खा चलाओ सूत कातो वीर गण अब सर्वथा।
उद्देश्य से डिगना नहीं हो लाख चाहे आपदा।।
लौटा लो निज देश की वो पूर्णकालिक सम्पदा।
उत्थान भारत का करेंगे ध्यान ये रखना सदा।।
अब ठैर सकता अधिक दिन है नहीं ये संग्राम।
हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(19)

अब तक किया है तुम ने जो कुछ निन्दनीय कर्म।
वह बीत गया उस से अब कुछ भी न खाओ शर्म।।
पर अब तो संभलो जान कर के इन के सारे मर्म।
निज देश की सेवा करो सच्चा है यही धर्म।।

प्रण करो, सरकार का अब लेंगे हम न दाम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(20)

जन्म भूमि से करो तुम निष्कपट अब प्रेम।

ऐसा करो जिस से हो अपने भाइयों का क्षेम।।

सत्भाव पूर्वक बनाओ अपने सारे नेम।

मत डरो नाराज होंगे हम से साहब मेम।

समझो कि गर्वनमेंट पर है अब विधाता वाम।।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(21)

बलि वेदी पर बलिदान हो जाओ सभी सहर्ष।

करते रहो निज मातृभूमि का सदा उत्कर्ष।

निज जाति का भी तुम सभी करते रहो प्रकर्ष।

होगा तभी धन धान्य से परिपूर्ण भारत वर्ष।।

रावण का राज्य जायेगा अब जन्म लेंगे राम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(22)

उत्कर्ष देख कर के मत गैरों का तुम जरो।

झूठे मुकदमे कर के मत धन धान्य को हरो।।

जेलों को मत बेगुनाहों से कभी भरो।

उत्थान जिससे देशका हो कार्य वह करो।।

सुन लो अली भाइयों का आखिरी पैगाम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(23)

अपने भाइयों को अब मत कैद तुम करो।

तुम से है माँ की आस दिल में इसे धरो।।

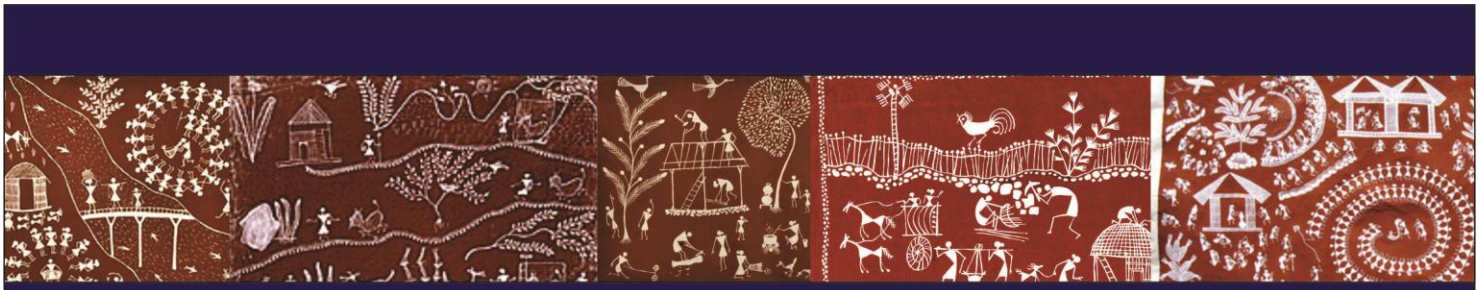

अपने गोरे शासकों से अब न कुछ डरो।

जल्दी उठो माता के कष्ट जाल को हरो।

जन्म भर तुमने किया है खूब गर व्यायाम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(24)

भूखे रहो मगर सदा जपते रहो यह मंत्र।

सब दुख सहेंगे किन्तु होंगे अब न हम परतंत्र।।

मंत्र कहो तंत्र कहो या कहो तुम जंत्र।

स्वच्छंद होंगे स्वत्व लेंगे होंगे हम स्वतंत्र।।

अधिकार–प्राप्ति हेतु है ये यत्न क्या अभिराम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(25)

कह दो पुकार कर के अब तो हम न डरेंगे।

माता के लिये देह का बलिदान करेंगे।।

जन्म भूमि के सभी हम दुःख हरेंगे।

जननी की कष्ट प्रार्थना को दिल में धरेंगे।।

शासक गणों को हो गया है देख लो सरशाम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(26)

धिक्कार ऐसी पाशविक शक्ती को है धिक्कार।

निर्बलों निःशस्त्रों पर है कर रही जो वार।।

शान्ति मय–सत्याग्रह को लो बना आधार।

हरिहर प्रसाद की सुनो अब प्रेम से पुकार।।

निज देश की उन्नति करो बिनती है ये अविराम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(27)

सत्याग्रह से पूर्ण गर सारा ये देश हो।

अंगरेजी हुकूमत का तो या पे न लेश हो।।

मातृभूमि का पुनः स्वातंत्र्य वेश हो।

ऐसा करो गर तुम में कुछ उत्साह शेष हो।।

हो रहे हो हाय तुम क्यों व्यर्थ में बदनाम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(28)

अब फैशनेबुल बन के तुम घूमो न ले छड़ी।

आशा है मातृभूमि को तुम से बहुत बड़ी।

हम जानते हैं तुम को भी तकलीफ है कड़ी।

पर क्या करें माता पै आज भीर है पड़ी।

माता के लाल अब उठो है सोच का न नाम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

(29)

आशा है जन्म भूमि की तुम बिनती सुनोगे।

इन्साफ पूर्वक उसे तुम मन में गुनोगे।।

जल्दी से असहयोग का आरम्भ करोगे।

उत्साह से जननी का सारा कष्ट हरोगे।।

हरिहर प्रसाद का रहा है प्रेम से प्रणाम।

हे हे पुलिस के भाइयों! अब मत बनो गुलाम।।

कल्लू राम गुप्त द्वारा रचित गीत में अंग्रेजों की बर्बरता को समाप्त करने हेतु संघर्ष करने का आहवान किया गया था।

"हम अब विचार अपना हरगिज नहीं तजेंगे।

चाहे प्राण तन से निकलें लेंगे स्वराज्य लेंगे।।

गोली भी गर चलेगी तो भी नहीं डरेंगे।

सर्वस्व त्याग कर के लेंगे स्वराज्य लेंगे।।

हमने यह प्रण किया है सदेह तज दिया है।

गर जान जाये तो भी लेंगे स्वराज्य लेंगे।।

संसार देखता है अन्याय हम पै होता।

कैदी बनेंगे पर हम लेंगे स्वराज्य लेंगे।।

हमको है गांधी का अरु ईश का भरोसा।

सब दुख सहेंगे पर हम लेंगे स्वराज्य लेंगे।।

मस्जिद हो या हो मन्दिर हिन्दू हो या मुसलमां।

सब लोग एक होकर लेंगे स्वराज्य लेंगे।।

जगदीश! तब शपथ है निश्चय ये कर चुके हैं।

गर मिटेंगे तो भ लेंगे स्वराज्य लेंगे।।

जितना बने सता लो जी भर के जुल्म कर लो।

हम कुछ न बोलेंगे पर लेंगे स्वराज्य लेंगे।।

तुम क्यों हमें डराते अपने मशीन गन से।

हर्गिज न हम डरेंगे लेंगे स्वाराज्य लेंगे।।

'कल्लू' की ये विनय है बिल्कुल न खौफ खाना।

कह दो कड़क के हम तो लेंगे स्वराज्य लेंगे।।

जलियांवाला बाग और प्रतापगढ़ के निर्दोषों पर गोली चलती देख गीतकार श्याम लिख पड़े 'जमाने की चाल'। गीतकार भारतवासियों पर पड़े असह्य दुख को मिटाने हेतु ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है–

"संसार जानता है हमको नहीं बताना।

हम बेकसों ने देखा सुन लो सभी जमाना।

ओ–डायरी भी देखी जीवन निसार कर के।

डायर ने जानवर से भी तुच्छ हमको जाना।

जलियान बाग की वो हत्या थी हमने देखी।

देखा था कायरों का शेरों बबर कहाना।

देखी प्रतापगढ़ की अन्याय पूर्ण घटना।

प्यारे कृषक गणों पर हां गोलियां लाना।

कागद के सिक्के उड़ते अब तो हरेक घर में।

सोने व चांदी का अब बिल्कुल नहीं ठिकाना।

भगवान तिलक! फँसी है मझधार मध्य नैय्या।

केवल इसे दया कर के पार तुम लगाना।

देखे हैं हमने प्रभुवर! लाखों दुखांत नाटक।

दुख–दृश्य ज्यादा हमको न अब दिखाना।

बहुत से खड़ी बोली में लिखे गये गीत इस काल में इतनी धूम से गाये जाते थे कि लोक गीत के समानान्तर में खड़े हो जाते थे और 'गंवनई' कहे जाते थे। वस्तुतः इसका मूल कारण अंग्रेजी का विरोध भी था जिसके फलस्वरूप हिन्दी में नये शब्दों का निर्माण और प्रयोग होने लगा था। इस प्रकार के गीतों को कविता की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है क्योंकि कविता पढ़ी जाती है जब कि ये गीत वाद्यों पर गाये जाते थे।

संगीत नाटक अकादेमी Sangeet Natak Akademi

FINAL REPORT

Scheme for

"Safeguarding the Intangible Cultural Heritage and Diverse Cultural Traditions of India"

Reference File No.
28-6/ICH-Scheme/116/2014-15/11361, dated : 4th February, 2015
28-6/ICH-Scheme/60/2014-15/12806, dated : 16th March, 2015

लोक में मुक्ति के स्वर

उत्तर भारतीय पारम्परिक लोकगीतों में भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष (भोजपुरी, अवधी, मगही, बुंदेली आदि)

LOK MEIN MUKTI KE SWAR

Indian Freedom Struggle in North Indian Folk Songs (Bhojpuri, Awadhi, Magahi, Bundeli etc.)

prepared and presented by

BACKSTAGE

105/14-B, Jawahar Lal Nehru Road,
George Town, Allahabad-211002 (U.P.)
Ph.No. : 09415367179, 09621330911
E-mail : backstage.cult@gmail.com, backstage.cult@rediffmail.com

वीडियो संदर्भ

- **वीडियो साक्षात्कार**
- **पद्मश्री प्रो0 शारदा सिन्हा – DVD No. 1**
- **प्रख्यात आलोचक डॉ0 मैनेजर पांडेय – DVD No. 2**
- **प्रसिद्ध बिरहा गायक डॉ0 मन्नू यादव – DVD No. 2**

अन्य वीडियो साक्षात्कार संदर्भ

- प्रसिद्ध सामाजिक इतिहासकार प्रो0 बद्री नारायण*
- विख्यात लोक कला अध्येता राज कुमार श्रीवास्तव*
- जाने–माने लेखक साहित्यकार, कवि, नौटंकी कलाकार राम लोचन सांवरिया*
- सुपरिचित लोक कवि, गायक, कलाकार फतेह बहादुर सिंह*
- प्रसिद्ध लोक कलाविद् अतुल यदुवंशी*

(*प्रथम रिपोर्ट के साथ प्रेषित डीवीडी में संग्रहीत)

सामाजिक संरचना और उसके प्रवाह को जब भी बाधित, खंडित करने का प्रयास हुआ हो या समाज के अंतर्सूत्र अथवा बहिर्सूत्र का तोड़ने की प्रतिकूल परिस्थितियां पैदा हुई हों, लोक ने हमेशा ही ज़ोरदार तरीके से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है, प्रतिरोध किया है। लोक ने अपनी सांगीतिक, सांस्कृतिक, कलात्मक, साहित्यिक, सामाजिक अभिव्यक्तियों में विरोधी शक्ति से संघर्ष किया है। साथ ही, लोक ने अपनी इन अभिव्यक्तियों में प्रतिरोध करने वाली शक्तियों को भावनात्मक तरीके से रेखांकित भी किया है। यह प्रतिरोधात्मक स्वर इतना मुखर रहा है कि इसने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को बहुत बल प्रदान करने के साथ संस्कृति के पन्नों पर अपनी उपस्थिति भी दर्ज करायी है।

लोक साहित्य में मुक्ति का गान भक्ति कालीन कवियों ने लिखना शुरू कर दिया। सामंती और धार्मिक वर्चस्व के विरूद्ध भक्ति कवियों ने अभिव्यक्ति दी। सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष में स्वतंत्रता की चेतना जगाने के लिए, स्वतंत्रता का भाव जगाने के लिए और जनता में अपनी परंपरा और संस्कृति के प्रति आदर का भाव विकसित करने के लिए लोक रचनाकारों ने लिखा। लोक कवियों ने सन् 1857 से लेकर सन् 1947 तक स्वदेशी आंदोलन, सुराज (स्वराज) भावबोध, शहीदों की शौर्य गाथा, स्थानीय नायकों की वीरता की कहानी, राष्ट्रवाद, राष्ट्र के स्वाभिमान, ब्रिटिश राज के अत्याचार, महात्मा गांधी के योगदान आदि को विषय बनाकर लोकमन की अभिव्यक्ति दी। दरअसल, प्रतिरोध का तत्व, विरोध का तत्व लोक साहित्य की संरचना का हिस्सा है। प्रतिरोध की यह चेतना स्वतंत्रता आंदोलन में बहुत मुखर हो गयी थी।

अंग्रेजों के विरूद्ध समाज को तैयार करने में, जनता का मन बनाने में लोक कवियों ने बड़ी भूमिका का निर्वाह किया। लोक साहित्य विद्वान डॉ0 पूर्णचंद शर्मा कहते हैं, "लोक साहित्य में सर्वाधिक महत्व है वहां के लोक गीतों का क्योंकि लोकगीतों की अजस्रधात युग–यगों से प्रवाहमान है। हमारे अतीत की कड़ियां, भविष्य की आशाएं और वर्तमान की अनुभूतियां निर्दिष्ट गीत–गंगा में संजोई रहती है।

जनमानस के सामने चुनौतियां पेश करने वालों के विरूद्ध लोक रचनाकारों ने विद्रोह का स्वर मुखरित किया है और लोक जीवन के भीतर व्याप्त समाज विरोधी, मनुष्य विरोधी, अंधविश्वास, कुरीतियों को भी नहीं छोड़ा। फ्रांसिस गूमर कहते हैं, 'लोकगीतों का महत्व केवल इसी बात में नहीं है कि अकृत्रिम भावना के दर्शन होते हैं। वे परंपरा की भाषा में ही अपनी अभिव्यक्ति नहीं करते बल्कि, जन समुदायों की आवाज के माध्यम से अभिव्यक्त होते हैं। उनमें किसी प्रकार का अनावरण नहीं होता। जो जैसा है, उसका वैसा ही वर्णन। वे स्वतंत्र हैं और खुली हवा की तरह ताज़गी लिए हुए हैं। उनके माध्यम से जीवन में हवा के झोंके और धूप की चमक बिखर जाती है।

उत्तर भारतीय लोक गीतों में ब्रिटिश राज, शासन, आतंक से मुक्ति के बाद भारतीय जनता में हवा की बयार और धूप की चमक आयी जिसमें लोकगीतों की, लोक रचनाकारों ने अप्रतिम भूमिका निभाई।

अवधी लोकगीतों में क्रांति का सुर

अजीमुल्ला खां के लिखे 1857 के 'बागी सैनिकों का कौमी गीत' में कहा गया–

आज शहीदों ने है तुमको अहले वतन ललकारा
तोड़ो गुलामी की जंजीरें बरसाओ अंगारा
हिन्दु मुसलमां सिख हमारा भाई भाई प्यारा
यह है आजादी का झंडा इसे सलाम हमारा।।

शकरपुर (रायबरेली) के राना बेनीमाधव ने सन् सत्तावन की क्रांति में अपनी देशभक्ति और शौर्य का परिचय दिया था। राना बेनीमाधव को अंग्रेजों ने काफी प्रलोभन दिए, परंतु वह अपने निश्चय पर अडिग रहे। उनकी प्रशस्ति में एक लोकगीत प्रचलित हुआ :

राना बहादुर सिपाही अवध में धूम मचाई मोरे रामा रे,
लिखि लिखि चिठियां लात न भेजी, आन मिलो राना भाई रे।
जंगी लिखत लंदन से मंगा दूं, अवध में सूबा बनाई रे,
जवाब सवाल लिखा राना ने, हमसे न करो चतुराई रे।
जब तक प्राण रहे तन भीतर, तुमकन खोद बहाई रे।
जमींदार सब मिल गए गुल्खान, मिलि मिलि के कमाई रे।
एक तो बिन सब कट कट जाई, दूसरे गढ़ी खुदवाई रे।

राना बेनीमाधव के संबंध में एक अन्य लोकगीत –

करिके सबको बखाना चल्यो गयो जग से राना।

पहिल लड़ाई लड़यो भीरा मा, दूसर सीमरी मुकामा।

तीसर धावा भा पुरबा मा गया बिलाइत बखाना।

लाट सुनि के घबराना।।

लाट साहब ने लिखा परवाना राना तुम मिल जाना।

जल्दी हाजिर होउ बक्सर मा काहे फिरत दिवाना।

राना पढ़ि के मुस्काना।।

श्राना बुलाइन आपन बिरादर सबको करत बखाना।

तुम तो जाय मिले गोरन से हमका है भगवाना।

करब अपना मनमाना।।

मारपीटि के राना निकरिगे गारन मन खिसियाना।

भगवत दास कहें कर जोरे अमल करै भगवाना।

भजो मन रामै रामा।।

चल्यो गयो जग से राना।

लोककवि दुलारे ने राना बेनीमाधव की प्रशस्ति में एक मर्मस्पर्शी लोकगीत लिखा, जिसमें चंदापुर के राजा शिवदर्शन सिंह को 'सुदर्सन काना' कहा गया है। शिवदर्शन सिंह पहले क्रांतिवीर राना बेनीमाधव के साथ थे, परंतु बाद में वह कमजोर पड़ गए थे और अंग्रेजों से मिल गए थे।

अवध मा राना भयो मरदाना।

पहिल लड़ाई भई बक्सर मा सेमरी के मैदाना।

हुवां से जाय पुरवा मा जीत्यो तबै लाट घबड़ाना।

नक्की मिले मान सिंह मिलिगे मिले सुदर्सन काना।

छत्री बंस एकु ना मिलिहै जानै सकल जहाना।।

भाई बंध और कुटुम कबीला सबका करौ सलामा।

तुम तो जाय मिलन गोरन से हमका है भगवाना।।

हाथ में भाला बगल सिरोही घोड़ा चले मस्ताना।

कहै 'दुलारे' सुन मोर प्यारे यों राना कियो पयाना।।

तेरी तेग ताव मांहि तड़पत जात 'कृष्ण',

काटि काटि मुंड झुंड डुंड पटकतु है।

मच्छिका समान ही उड़ावती है शत्रु शीश,

गौरंग सुअंग को सुआंग सों रंगतु है।

खंग कोपि तोपि देत तोपन को लोथिन सों,

गगन गगन को तो कछु न गनतु है।

सरपै समान असि, सर पै समान अरि,

सर पै नहाय रक्त सरजा करतु है।

बेनी बीर बाना बैस बंस मरदाना

बाकी भूपति जनाना ठानठाना भरी घात है।

इंद्रपाल, माधवसिंह, चंदपति, रघुनाथ,

मिलिकै फिरंगिन दगा दई सो ज्ञात है।

ताना देखि भ्रकुटी सुयुद्ध में दिवाना देखि,

कंपनी बिलायत सकल बिललात है।

छीन्यो तोपखाना तब शुत्र है सकाना,

रन राना बिरझाना आज खाना नहीं खात है।

(कृष्ण शंकर शुक्ल, रायबरेली)

वाजिदअली शाह था नवाब औध 'कृष्ण कवि',

शासन विधान अंध कूप मुगलान को।

हीजड़न साथ कीन्हीं, वेश्यन विलास कीन्हीं,

नाश कीन्हीं दास भारत महान को।

जान को जहान को ईमान को न परवाह,

खान–पान ज्ञान औ न मान हू कुरान को।

वाही समय बेली बेलीगारद गारत कीन्हीं,

नभ फहरायो है फिरंगिनी बितान को।

(कवि कृष्ण)

अपनी गढ़ी से बोले गुलाब सिंह, 'सुन रे साहब मोरी बात रे'

पैदल भी मारे सवार भी मारे, मारे फौजी बेहिसाब रे

बांके गुलाब सिंह रहिया तोरी हेरूं, एक बार दरस दिखावा रे

पहली लड़ाई खमना गढ़ जीते,

दूसरी लड़ाई रहीमाबाद रे।

तीसरी लड़ाई संडीलवा में जीते, जामू कीना मुकाम रे।

राजा गुलाब सिंह रहिया तोरी हेरूं एक बार दरस दिखावा रे।

(संडीला के राजा गुलाब सिंह की प्रशस्ति में लोकगीत)

बाराबंकी जिले में स्थित चलहारी के अठारह वर्षीय युवक राजा बलभद्र सिंह रैकवार ने सन् 1857 की क्रांति में अंग्रेजों से जमकर लोहा लिया। उन्होंने नवाबगंज (बाराबंकी) की लड़ाई में वीरता और दशभक्ति का परिचय दिया था। राजा बलभद्र सिंह को जनता ने अपना नायक बनाकर अपने दिल में सदा के लिए बैठा लिया। लोक गीतकारों ने उनकी प्रशस्ति में लोकगीत लिखे। नवाबगंज का युद्ध देखने वाले भागू नाई ने राजा बलभद्र सिंह पर एक बेजोड़ आल्हा बनाया था।

बिच ओबरी के मैदनवा मा साहब लोगन किहिन पड़ाव।

देस के राजा एक ठौरी होइगे लै लै रामचंद्र के नाव।।

तोपन गरजीं अंगरेजन की धरती अगिनि अगिनि बरसाय।

जोहिके लागै तोप का गोला ऊकी धजा सरग मंडराय।।

जोहिके लागै सीसे का डंडा देहिया टूक टूक होइ जाय।

अरे गोसइयां परलै होइगै राजे भागे पीठि देखाय।

भागा राजा बौडो वाला जोहिका हरदत्तसिंह था नाव।

भागा राजा चरदा वाला जेहिका जोतसिंह था नाव।

राजा कहिए चलहारी वाला जेहिके बांट परी तरवार।

ब्याह क कंगना कर मां बाजै लक्खी मारै देय बहार।।

हाथी घिरिगा जब राजा का महावत गया सनाका खाय।

बोला महावत तब राजा से भैया दीन बंधु महाराज।।

मरजी पावौ सहजादे की तुरतै चहलारी देऊं पहुंचाय।

सुनिकै राजा राहुटु होइगा करिया नैन लाल होइ जाय।।

बोला राजा चलहारी वाला जेहिका बलभद्र सिंह नाव कहाय।

हट जा हट जा मेरे आगे से तेरा काल रहा नियराय।

धरम छत्री का यू नाही है भागै रण से पीठ देखाय।

अरे महावत हाथी बैठा दे सोने कड़ा देहौं दोनों हाथ।।

घोड़ा मंगाइस खासे वाला राजा कूदि भया असवार।

जैसे भेड़हा भेड़िन पैठे वैसे फौजन मा गा सिधियाय।।

पूरब मारे पच्छिम धावे राजा उत्तर दक्खिन करे संहार।

ग्यारह साहब गोरे मारिसि और मोरन की गिनती नाय।।

मारि पचासन का हनि डारिस जिनका भागत रस्ता नाय।

तीन घरी मा परलै कीन्हिसि गोरा भागे जान बचाय।

तब महाराजा चलहारी को देस मा नाव अमर होइ जाय।

हाइगा नांव तोरा लंदन मा कोई तेरे बराबर नाय।।

बलभद्र सिंह की प्रशस्ति में एक कविता भी प्रचलित है :

चलहारी को नरेश निजदल मा सलाह कीन,

तोप को पसारा जो समीपै दागि दीना है।

तेगन से मारि मारि तोपन को छीन लेत,

गोरन को काटि काटि गीधन को दीना है।

लंदन अंग्रेज तहां कंपनी की फौज बीच

मारे तरवारिन के कीच करि दीना है।

बेटा श्रीपाल को अलैंदा बलभद्र सिंह,

साका रैकवारी बीच बांका बांधि दीना है।

निज सुत को गोदी सों टारी।

राजहि लीन गोद बैठारी।।

तब बेगम बोली हरषाई।।

राजा को लै कंठ लगाई।

तुम सुत सरिस अहो प्रिय मेरे।

कहौं मर्म तो सन प्यारे।।

येते सब राजा रहे मल्लापुरी समेत।

सब भाजे तब समर से हम नहिं तजिहैं खेत।।

कोऊ ना महीम लीन्हो साहब सों छत्रीगन

करिकै दगा फौज भाजी है सवार की।

पल्टनें तिलंगन की थोरी सी लड़त भई,

गोरन को देखि तोप दगी ना गंवार की।।

रह्यो ना सिहार कछु करनी भुलाय गई,

करिकै नामर्दी सैन चली वार पार की।।

कहें कवि सत्य महाराज बलभद्र सिंह,

नाम राख्यो उत्तर को नाक रैकवार की।। (जंगनामा)

राजा देवीबख्श सिंह का जब राज रहा।

तब क्या झंडा फहरात रहा।।

नेरे नेरे गांव रहा।

तो दूर दूर जोतास रहा।।

हंसिया खुरपी गिनती नाहीं।

पैसे फार विकास रहा।

(गोंडा के राजा देवी बख्श सिंह को समर्पित लोकगीत)

राजा देवीबख्श सिंह को समर्पित अन्य लोकगीत इस प्रकार है :

राजा देवीबकस सिंह लोह बंका, जिनका रत्ती भर न संका।

बहि बजवाय दीन है डंका।

राजा एक सर बंधाय दीन लाय,

जब राजा कै राज रहा, तब सुखी सबै संसार रहा।

धान, जुंधरिया, सांवा, कोदों, सस्ता भाव बिकाय रहा।।

घर कोरी से जोड़ा बिनावैं, मरदों का पहिनाव रहा।

सिकिया पट्टा बाफता औरत का पहिनाव रहा।।

थोरे दाम मा बनै मिरजई ओही मां मरजाद रहा।

राजा देवीबकस अस सुंदर,

उनके हाथ सोनैं का मुंदर।

उनके आगे सब लगैं छछुंदर,

उनके चौरासी कोस मा रहै राज।

जब दागै तोप देवु घर गरज फाट दरारा नइया।

हजारों गोरा डूब मरे बहि कहते बप्पा मैया।

भागो मेम चलौ बिलाइत हियां है बड़े घरइया।

राजा एक सौ बंधाय दिया लाय।

महात्मा गांधी की कलकत्ता यात्रा पर रचा गया बिरहा –

समिरो गांधी और गंगा

बस्तर पहरे रंगा रंगा

जिनके कर्म में राज लिखा

फिर कोई नहीं मेटन वाला

कितो काम करिहैं वह गाजी

कितो काम करिहैं भाला

लड़ने मा अंग्रेज खड़ा है

बिगड़े पर हिंदू काला

रामचंद्र केदारनाथ क्या

लेक्चर देते निराला

बैठे गांधी पूजा करते

फेर रहे तुलसी माला

हाथ कमंडल भस्म रमाए

बगल लिहैं मिरगा छाला

जायतो पहुंचे कलकत्ते में

वहां का सुन लिहु हवाला

ठीक दुपहरे लूट गई औ

घर घर बंद भए ताला

आला थाना पुलिस वहां पे रहे पहरा

लिहे बंदूक सिपाही करें टहरा

आज सभा में सुनो गांधी का लहरा

अक्किल अंग्रेजन से लीन

कपड़ा पहरो मोटिया जीन।

रचनाकार : नारायण (गोंडा)

बुंदेली लोकगीतों में क्रांति की अलख

अरी कुमोदनी तू कैसी रै गई बांड़ बेला में।

चरखारी फूली केतकी, बांदा में फूलो गुलाब

बीच बेला में फूली कुमोदनी, संभू तोखा देउं चढ़ाय। अरी....

बेला ताल गहरे परे, मंझयारे कुमुद कौ फूल

अरे बीच बेला में रूपो बिरजानो, हम पारे केसरी सिंह। अरी ...

किले पार खाई खुदी, दोरें हते मसान

भैंसासुर छिड़िया थपे, दरवाजे बिराजे हनुमान। अरी...

डलन किसुरुआ तोरे खुद गए, अरे गाड़न खुदे मुरार

अरी बेला तेरी झोर में, जी मिल गओ सिंसार। अरी...

काबुल और खंदार देस है, जांसे चढ़ो फिरंगी

पूंछत बारबार, कहां राजा है जंगी। अरी...

राजा जंगी जैतपुर वारे पुरजन के अधिकार

जंग की करें तैयारी, डांगई बगौरा की। अरी...

चारऊं ओर पहारन की, पारीछत दावी पार

गोरा उरे बगौरा की डांगन–डांगन मंझयार। अरी...

कीरा सिंधारी राजा लग गओ, दूबा ने मार दई धान

बंधवा पै रो रई ढिमरिया, लरका हो गये बारहबाट। अरी...

बेला सपने दै रई, राजा सुन लेव मोरी बात

अरे तोरी तोपें डूब रई, गुर्जन में लेव धराय। अरी...

अरी कमोदनी तू कैसे गई बांड़ बेला में।।

(सन् 1840 पर में अंग्रेजों में युद्ध लड़ने वाले युवराज परीक्षित की बुंदेली शौर्य गाथा, संकलन : डॉ0 नर्मदा प्रसाद गुप्त)

एक अन्य बुंदेली लोकगीत में पारीछत के शौर्य और पराजय के बाद के अवसाद का वर्णन है–

बड़े पारीछत महाराज,

किले के लानें जोर भंजाई राजा ने।

चरखारी मंगल रची, सब राज लए बुलाय

पारीछत मुजरा करें, राजा रए मुख जोय।

सबरे राजा जुरे चरखारी, बुढ़वा मंगल कीन

पुन सब बैठे जाय गढ़ियन में, पारीछत को मुहरा दीन।

कै सूरज गहनै परे, कै नगर में मच रई हूल

कै ऐसों दोनों पजो, सूरज भयो अलोप।

ना सूरज गहनै परे ना नगर में मच गई हूल

राजा पारीछत उतरे किले से, सूरज भये अलोप।

पैली न्यांव धंधवा भई, दूजी कछारन माह

तीजी मानिक चौक में, जहं जंग नची तलवार।

देस–दिसावर सालो नहीं, सालो जैतपुर गांव

एक जनो मोए ऐसा सालो, सालो मल्ल जुवराज।

गुर्जन गुर्जन रोई पतुरिया, गजशाला रोई भवास

ठांड़ी बिसुरै मानिक चौक में, कोउ नइयां पीठ रनवास।

बड़े पारीछत महाराज, बावन लानें जोर भंजाई राजा ने।

एक बुंदेली लोकगीत में पारीछत द्वारा लड़े गए युद्ध और उनके शौर्य का वर्णन इस प्रकार किया गया है :

मुरगा बोले पतारन में

हथनी मारे हजारन में।

पारीछत दहाड़े हजारन में।

ढड़कें फिरंगी पहारन में।।

पाठे कौ झिन्ना रुकत नैया

पारीछत कौ हांती टरत नैया।

पूरी हथिनिया गरद मिल जाय

पारीछत कौ तेगा कतल कर जाए।।

भूरागढ़ के किले में खूब लड़ जवान।

नौ सौ तेगा बटेरा चले

परवाड़ी में राजा अकेले लड़े।

नौ सौ खुरपी हजार हंसिया

नंदिया नंदिया भागे नवाब रसिया।

भागे फिरंगी महोबा को जायं

राजा पारीछत खदेरत जायं।।

हाथी पै हौदा और घोड़ा पै जीन

चले तीर नेजा पारीछत क सांग।

डतरत घाटी बजो डंका

पारीछत के जी को मिटो टंटा।

हांत सुमरनी गरे माला

पारीछत छोड़ी धरमशाला।

राम रची सोय होय

डंगाई में खूबी चली तलवार।

जुग जुग जियो पारीछत

डेंगाई तैने जेर करी।

दोहा और छंद के रूप में राजा परीक्षित की शौर्य गाथा–

दोहा : कैसो दिन कैसी घरी, लयो बाम ने पूछ।

वन–मृगया कौ मिस करौ, राजा कर गए कूच।।

सैर : कर कूंच जैतपुर से बगौरा में मेले।

चौगान पकर गाए मंत्र अच्छी खेले।

बगसीस नई ज्वानन खां पगड़ी सेले।

सब राजा दगा दै गए नृपं लड़े अकेले।।

कर कुमुक जैतपुर चढ़ आयो फिरंगी।

हुसयार होओ राजा दुनिया है दुरंगी।

दोहा : नृप पारीछत के लड़ैं गओ निस्चर को तेज।

जात हतो लाहौर खां अटक रहो अंगरेज।।

सब राजा रानी भए, पर पारीछत भूप।

जात हती हिंदुवान की राखी सबकौ रूप।।

छोरे न हथयार नृपत दिना सात लौं।

तब तक कैं डारे छापे चूके न घात लौं।

सब कुछ पास अपने जो रही बात लौं।

राजा ने जंग मारी खबर है बिलात लौं।।

दोहा : बसत सरसुती कठ में, जस अपजस कवि काइ।

छत्रसाल के छत्र की, पारीछत पर छाइ।।

सैर : जलौं न गोल डगा भरी सबने हामी।

जब काम परो सरक गए नमकहरामी।

रच्छा करी आन के उन गरुड़ के गामी।

जे राजा जैतपुर के भैए नामी नामी।।

रन के निसान देौ चौगान में गड़े।

सूर वीर देखौ दोई कोद हैं खड़े।

उनसे विमुख हुए ते दरजे पै ना चड़े।

तुम पारीछत राजा अंगरेज से लड़े।।

लक्ष्मन सिंह फिरत हैं दौआ

भारत जात लखत अंगरेजन, काटत ककरी जौआ

भगत फिरत अंगरेजा बेकल, दौआ हो राओ हौआ।

बांदा से कोठी तक मारी, फौज फिरंगी कौआ।

सुन लो तब कोउ कान खोल के भाग चले लखनौआ।

(1857 से पूर्व राजा लक्ष्मण दौआ की लोकगीत में शौर्य गाथा)

मूंद मुख डंडिन को चुगलन को चबाई खाइ

खूंद दौड़ दुष्टन को शत्रुन संहारिका।

मार अंग्रेज रेज कर दई मात चंडी,

बचे नहीं बैरी एरी प्रलयंकारिका।

शंकर की रक्षा कर दास प्रतिपाल कर,

दीन की सुन टेर आकै मात प्रनपालिका।

खाई लेई मलेच्छन को झेल नहीं करौ अब,

भच्छन कर ततच्छन कोर मात कालिका।।

(सन् 1857 में जबलपुर के गोंड राजा शंकर शाह और उनके पुत्र रघुनाथ शाह की प्रशस्ति में लोकगीत)

स्वतंत्रता प्रेमी वीर श्यामलगिरि गुसाई ने कानपुर, बिठूर और चित्रकूट में 1857 की क्रांति में अंग्रेजों से युद्ध किया था। उनकी प्रशस्ति में उस क्षेत्र में यह लोकगीत गाया जाता रहा–

श्यामलगिरि भोरई आ धमके।

तीन सहस नाथु ले धाये, अंगरेजन पै चमके।

कानपूर से भगे फिरंगी पुन बिठूर आ धमके।

होन लगी तकरार रार है, आन फिरंगी ठमके।

सात दिना लौ भई लराई गिरी गुसांई हुमके।

काटकूट के सबई फिरंगी चित्रकूट पै धमके।

रेवाराम देख ला जा गत, आने मिले सब जमके।।

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की प्रशस्ति में एक बुंदेली लोकगीत इस प्रकार है–

खूब लड़ी मरदानी, अरे झांसी वारी रानी

पुरजन पुरजन तोपें लगा दई, गोला चलाए असमानी

अरे झांसी वारी रानी, खूब लड़ी मरदानी

सबरे सिपाइन को पैरा जलेबी अपन चलाई गुरधानी

अरे झांसी वारी रानी, खूब लड़ी मरदानी

छोड़ मोरचा जसकर कों दौरी, ढूंढेहु मिले नहीं पानी

अरे झांसी वारी रानी, खूब लड़ी मरदानी।

एक अन्य बुंदेली लोकगीत में लक्ष्मीबाई की संसार में फैली कीर्ति का यशोगान और उनके देशद्रोही गोलंदाज की भर्त्सना है–

अपनो नांव कमा गई जग में कर गई सोर विकट भारी

बाई साब झांसी वारी

भीतर ब्राजी आदि भवानी, मूरत सिवशंकर की जानी

गौरा के पुत्र गनेश विराजे, भैरो की मड़िया न्यारी

बाई साब झांसी वारी

धर के रूप चली मरदानी, अंगरेजन से लरी दिमानी,

संका काउ की नई मानी

ले तरवार कटा कर डारे, मन में रोस बड़ो भारी,

बाई साब झांसी वारी

गोलंदाज करी बेइमानी, रीती तोपें चलत दिखानी,

मन में बाई साब घबरानी

तीन दिना ना लुटी लच्छमी, जितनी लुटी लुटा डारी,

बाई साब झांसी वारी।

एक लोकगीत में लोककवि गंगा सिंह ने 1857 की वीरांगना बांदा की शीला देवी के साथ सैकड़ों अन्य महिलाओं के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने का गर्व के साथ वर्णन किया है :

बांदा लुटो रात के गुइयां, सोउत रई चिरैयां

सीला देवी लरी दौर के संग में सहस मिहरियां

अंगरेजन तो करी लराई मारे लोग लुगइयां

गिरी गुसाई तब दौरे हैं लरन लगे मऊ मइयां

सीला देवी को सिर काटो पलो लगत नई गुइयां

भगी सहेली सब गाउन में लैकें पाल मुन्इयां

गंगासिंग टेर कें कै रए भगो इतै ना रइयां।

एक अन्य बुंदेली लोकगीत में जिगनी की नन्हीं रानी के युद्ध–कौशल का वर्णन करते हुए इस ऐतिहासिक तथ्य को उजागर किया गया है कि नन्हीं रानी क्रांतिवीर तांत्या टोपे से मिलकर कार्य कर रही थी।

नन्ही रानी उद्यम करतीं, जिगनी में दम भरतीं
संग में ज्वान सात सौ लैके फौज फिरंगिन भरती
लूट खजानो, छिड़ा हतपारन, मंदिर डेरा करतीं
पूजा करतीं, राम सुमरती, तांत्या से मिल चलतीं
आग आगरे देती वे तो गढ़ ग्वालियर धरतीं
ऊधोदास एइ रीती सों प्रीती देस तु करतीं।

(रचनाकार : ऊधोराम)

उमदानी है आज भवानी, पदमाकर की रानी
जागा जागा सभा रोय के सुना रई है बानी
सागर से वा नागपुर सों घड़ा रई रन पानी
मानों गुरिया बेंच–बांध के बनवा लेउ क्रियानी
भाला बरछी गोला बोला ले लो रे प्रिन ठानी
रामधनी अब रार ठनी है, देस दुखी तब जानी।

(पद्माकर की रानी भवानी के लिए रामधनी की रचना)

महिलाओं द्वारा गाई जाने वाल एक गारी में किसी 'दिमान जंगी' द्वारा फिरंगियों के साथ किए गए युद्ध का उत्साहजनक वर्णन करते हुए दिमान जंगी की शान का बखान है–

ऐसो है अलबेला जंगी, जी के हाथ कटरिया नंगी

जी से घर घर कपैं फिरंगी, हड़ियन राधे खांप दुरंगी

ऐसो रुतबा है पूरो दीमान को, कोऊ नैंया की शान को।

लोहागढ़ कठिन मवात,

फिरंगी झांसी भरोसै ना रहियो।

जहं तोप चलें, गोला चलें, भालन की है मार,

जहं सीस हथेली ले चलें, जमराज के सिरदार,

फिरंगी झांसी भरोसैं ना रहियो। लोहागढ़....

का कहिये खानपुर बारे की,

मर्दन सिंह नृपत जुझारे की।

सेना सजन, बजन रमतूला, चोटें समर नगारे की,

अंगरेजन की गरैं उतर गई, पैनी धार दुधार की,

का कहिये खानपुर बारे की। मर्दनसिंह

(लोहागढ़ किले की रक्षा की चेतावनी देता बुंदेली लोकगीत)

भैया अब सुराज के लानें, तन–मन से लग जानें।

करो फैसला घर अपने में, ना जैये कोई थानें।

बिस्कुट और बरंडी छोड़ो, समां–लठारा खानें।

द्विज खुमान अब पराधीनता से नातो ना रानें

सब कोई गाढ़ा पैरो नाई, जातों होय भलाई।

घर–घर रांटा चरखा घर लेव बनवा लेव नटाई।

छोड़ देव इजलास तसीली उर दीमानी भाई।

सौकत अली और गांधी में तब खां दओ जगाई।

द्विज खुमान अब अपनी ऊगत किस्मत देत दिखाई।

(द्विज खुमान रचित चौकाड़िया फाग में असहयोग आंदोलन के बाद का चित्रण)

सैंयां होके भारतवासी काहें हंसी करावत मोर?

खादी की धोती नई ल्याओ

'धूपछांह' जबरन पहिराओ

तुम पे चलत न जोर सैंयां....

'खन' से मन हट गओ हमारो

सो न चानें हमें तुमारो

छमा करो जू खोर। सैयां...

गाढ़ा के चोली बनवा देव

कुसमानी रंग में रंगवा देव

लगा हरीरी कोर। सैया...

जो न स्वदेशी को अपनाओ

हमने जानी तौ बस आओ–

अमन सभा को छोर। सैयां....

पैयां परों देस रस पागो

बहुत सो चुके हो उठ जागो

कयें खुमान भओ भोर। सैयां....

लोककवि मथुरा द्वारा रचित एक बुंदेली फाग में सन् 1942 की क्रांति में बलिया की घटनाओं का चित्रण–

बाजी भारत की रनभेरी, सुन सन ब्यालिस केरी।

क्रांतीदल की धूम मची तो, बलिया में जिन केरी।

इक ते एक हतें भर बांके, तरुनई रंग रंगे री।

दहल उठी अंग्रेजी 'मथुरा' देख फौज इन केरी।।

जब–जब एक रास मिल राजै दुश्मन होत पराजै।

रामचंदे ने रावन मारो, निसचर सहित समाजै।

कृस्नचंद नैं कंस पछारो, दुजःदेवन के काजै।

गौरमेंट से बिन असि, 'मथुरा' गांधी लेत सुराजै।।

बुंदेलखंड की जनता रोवै, भये राजा अत्याचारी।

अंग्रेजन के गुलाम राजा, तिनके हम गुलाम भारी।।

सत्ताईस कर हमरे सिर पै, कैसे चुकत चुकाये सें।

है बेकार कर्जा भारी, सूत पै सूत लगाये सें।

उर लागान चौगुनो हो गओ आठ रुपैया बीघा को।

चुलयउन, गुलयउन, मड़वा महुठो और कठवा को।

झरी ब्याई, जैजिया लागे, पैसा पोसी है न्यारी।

अंग्रेजन के गुलाम राजा।।

पैतीस रियासत की जनता ने जुरमिल एक विचार करो।

कै राजा जौ टैक्स छुड़ावैं, कै उन हातन मिटो–मरो।

सन इकतिस चौदा जनवरि को, चरनपादुका पै आये।

पैंतिस राजा बुंदेलखंड के, एत्र.जी. जी. के ढिंग धाये।

भड़की जनता बस में करबे, करो फौज की तैयारी।

अंग्रेजन के गुलाम राजा।।

स्वतंत्रता के सब नेतन खां, जबरन डाकू ठैराओ।

भीलन की पलटन बुलवा कें, खेमा ऊको लगवाओ।

गनमसीन, बंदूक ओ टोंटा, लारी में भर मंगवाये।

गौरमेंट से बिन असि, 'मथुरा' गांधी लेत सुराजै।।

बुंदेलखंड की जनता रोवै, भये राजा अत्याचारी।

अंग्रेजन के गुलाम राजा, तिनके हम गुलाम भारी।।

सत्ताईस कर हमरे सिर पै, कैसे चुकत चुकाये सें।

है बेकार कर्जा भारी, सूत पै सूत लगाये सें।

उर लागान चौगुनो हो गओ आठ रुपैया बीघा को।

चुलयउन, गुलयउन, मड़वा महुठो और कठवा को।

झरी ब्याई, जैजिया लागे, पैसा पोसी है न्यारी।

अंग्रेजन के गुलाम राजा।।

पैतीस रियासत की जनता ने जुरमिल एक विचार करो।

कै राजा जौ टैक्स छुड़ावैं, कै उन हातन मिटो–मरो।

सन इकतिस चौदा जनवरि को, चरनपादुका पै आये।

पैंतिस राजा बुंदेलखंड के, एत्र.जी. जी. के ढिंग धाये।

भड़की जनता बस में करबे, करो फौज की तैयारी।

अंग्रेजन के गुलाम राजा।।

स्वतंत्रता के सब नेतन खां, जबरन डाकू ठैराओ।

भीलन की पलटन बुलवा कें, खेमा ऊको लगवाओ।

गनमसीन, बंदूक ओ टोंटा, लारी में भर मंगवाये।

एक बिना पैसे सब नेता, पकर जेल में पठवाये।

जो लख जनता उमड़ परी सब, देख चकित भये अधिकारी।

अंग्रेजन के गुलाम राजा।।

चली फिरंगी गनमसीन सब, ढोर हिरन पंछी मारे।

भरी सभा में भई अनहोनी, ढूंढ–ढूंढ नेता मारे।

बचेःखुचे कुछ पकर–पकर कै लारी में दये बैठारे।

जनता चिमट नई लारिन सें, तिने कुचर भागी कारें।

सौ ले गये नौ गांव छावनी, जेल भरी जनता लारी।

अंग्रेजन के गुलाम राजा।।

जीके घर के नेता मर गये, ऊके घर फिर लुटवाये।

बैल ढोर लीलाम कराये, उर मकान फिर जरवाये।

बुंदेलखंड के गांउन–गांउन, फेर ढोड़ेरे पिटवाओ।

जो सुराज कौ नाम लेवगे, तो हम कीला ठुकवाओ।

गांवन–गांवन पी.ए. फिशर नें करो दमन भौतई भारी।

अंग्रेजन के गुलाम राजा, तिनके हम गुलाम भारी।।

(छतरपुर के चरणपादुका कांड 1931 में कुछ राजाओं ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रही जनता को मरवाया और कुछ को गिरफ्तार करवाया पर चर्चित लोकगीत, संकलन : डॉ0 नर्मदा प्रसाद गुप्त)

माधव शुक्ल 'मनोज' संकलित, बुंदेली लोकगीत में क्रांति के बोल–

चुनरिया रंग दैयो मोरे यार।

भारत के रनबीरों की हो जी में झलक अपार।

चूनर ऊपर रेशे–रेशे, आजादी की झलक दिखा दैयो

शुद्ध सूत की चादर मोरी, शांति की कलफ चढ़ा दैयो।

तीन रंग की लगा के, झंडा रूप सजा दैयो।

गांधी बब्बा की सूरत को, चरखा सहित छपा दैयो।

झांसी वाली रानी के कर, होवे नगिन कटार।

चुनरिया रंग दैयो मोरे यार।

छादा भाई, तिलक, गोखले और लाजपत से हों वीर

अपने प्रान देश के ऊपर, मित्रों जिनने किये अखीर।

देश धरम पे सरवस त्यागो, मोतीलाल न मानी पीर।

मौलाना आजाद, पंतजी, पटेल, बल्लभ भये फकीर।

तो बालक वीर हकीकत के गलबहे रक्त की धार।

चुनरिया रंग दैयो मोरे यार।

आजादी के लिए भगत सिंह, हो फांसी पर चढ़े हुए।

डेल लाख भारत सपूत हों, जेल के अंदर पड़े हुए।

मरे बहादुर साह रुस्तम के हों बच्चे बड़े हुए।

इक लग खड़े सुभाष और फिर वीर जवाहर अड़े हुए।

बघेली लोकगीतों में क्रांति की बयार

बघेली बोली की अनेक लोकगाथाओं में स्थानीय वीरों के शौर्य का उत्साहवर्धक वर्णन किया गया है। इन गाथाओं की भाषा ओजपूर्ण है। बघेलखंड में 'नैन हाई केर जुज्झ' का बंवड़ा बहुत लोकप्रिय है।

हथवा के जोरिकै विनती करा ठाकुर, नायक से करें जवाब।

लूट राज रीमां के पहले, फिरि देवै कोडि खलिहाय।

डेरा पतला घूमने से ओकर डेरा बम्हनी जाय।

उआ बम्हनी के मोइडे मा, दिहिस नायक तंबू तनवाय।

गली गली लीद झोंकवावें, लोटवावै तलाये ऊंटि।

हिरई सिंह ठाकुर भागि जांय जउने, लेई तेमरिया लूटि।

हिरई सिंह सेमरिया के ठाकुर, लिखि पतिया दिहिस दौड़ाय।

जैतना भाई रीमां केर हों, सब राखें सांग समराय।

हार्जिन केर महाउत बूड़त आवें, करिया काठ देखाय।

परी झूली कोनेन पर आवै, जइते बन टेसुआ फुलाय।

लिलिया घोड़ी मंगवावै नयकवा, मन भागे का कीन्ह।

धीरेन सो गोहरावै नयकवा, तै घोड़िया ले आउ सईस।

थैली मोहर ना केई लाल तोका, पूना सितारा केइ राज।

बिटिया तौहरै बिअहवै लाल, मोका लै जाउ जाइदे पराय।''

थैली जरै तोरि मोहरेन केर नायक, जरे तोरि पूना सितहरा केइ राज।

बिटिया तुखुवन फारै रे मैं कटवै मूड जरिहाय।

लिलिया घोड़ी नगवावै नयकवा, मन भागे का कीन्ह।

गढ़ रीमां का बांके बघेला, ओकर सिर उपरै ले लीन्ह।

ब्रज लोकगीतों में क्रांति चेतना

ब्रज लोकगीत में 1857 क्रांति के वीर 'अमानी' के शौर्य की स्मृति को सहेजा गया है। अमानी ने अलीगढ़ की इगलास तहसील के निकट अंग्रेजों को पराजित किया था और उनको भरतपुर तक खदेड़ दिया थाः

अमानी मानै तो मानै घोड़ी ना मानै

के अंगरेज चढ़े घोड़िन पै, कित्ते उलटे पैदर आये

कित्ते पकरि कुंअन में डारे, कित्ते उलटे भाजे

करौ अमानी ने जब पीछौ, बीन बीन के मारे

अमानी मानै तो मानै घोड़ी ना मानै।

फिरंगी लुट गयो रे, हाथुस के बाजार में

गोरा लुट गयो रे हाथुस के बाजार में

टोप लुट गयो, घोड़ा लुट गयो

तमंचा लुट गयो रे जाकौ चलते बाजार मे।

(1857 में हाथरस विद्रोह में जन विजय का वर्णन)

लीजो खबरि जगत के स्वामी,

मेरी नाव पड़ी मंझधार।

भारत ने जब मदद दई,

रंगरूटन की भरमार।

बाकी एवज गवरमेंट ने दीनी हमें लताड़।

चलि करिके जलियाना बाग में कीन्हे अत्याचार।।

बिन बूझे बिन खबरि हमारी, भरि दीने कारगार।

फांसी देके हने हमारे, भगतसिंह सरदार।।

(जलियांवाला बाग पर ब्रज लोकगीत)

दुष्ट मुए मोरे पल पल होत अंबार

क्यों डरो डार गले फांसी

सूधा सूरा स्वर्ग को जाऊं

धरम राय को बिथा सुनाऊं

और हर से मांग भगतसिंह लाऊं

भारत को एक हजार

क्यों डरो डार गले फांसी

ले हम जनम यहीं तुम पाईऊं

जल्दिया में भगत मत जाईऊं

फिर फांसी पर लटकइऊं

खेरी, खड़ी करके कतार

क्यों डरो डार गले फांसी

जलेगी लास हम यही भसमेंगे

फिर धरती में छुरा चलेंगे

हाड़ रक्त सबही फल देंगे

बैरी, भारत देश हमार

क्यों डरो डार गले फांसी

ले अत्याचार कियो बहुतन पै

आया तो दुष्टपन पै

अब होनी बैठी लंदन पै

देरी लंका के अनुहार

क्यों डरो डार गले फांसी।

(भगत सिंह के बलिदान पर लोककवि दुलीचंद का गीत)

देशप्रेम पर ब्रज रचना –

खेलो री देस–प्रेम की होरी।

रंग संगठन को मिलि खेल्यो, त्याग नगरी कोरी।

तीन रंग की लौ पिचकारी, निर्भय हवै कै बढ़ौ अगारी।

देखो अपनी अपनी बारी, खूब करी बरजोरी।।

राणा शिवा सहज ही खेले, तन पै कष्ट अनेकन झेले,

खेले भगतसिंह जित प्यारे, राजगुरू सुखदेव सितारे।।

बापू खेले हरि के आगे, हम देखत रह गए अभागे।।

डटे रहे सब ममता त्यागे, प्रीत राष्ट्र सो जोरी।।

अन्य लोकगीत –

ब्रज भूमी कौ लाला दुलारौ राजा महेंद्र प्रताप हमारौ।

भरी जवानी मातृभूमि तजि गयौ देश से बाहर

बर्फीले पहाड़ वन–वन में इकलौ घूमौ नाहर

जननी जन्मभूमि की खातिर अपनौ सर्वस तजकर

आजादी कौ सैनानी नहीं गिनौ काहू कौ डर।

जहाँ गयो निज धाक जमाई भारत कौ झंडा गाड़ो

ब्रजभूमि को ....

जर्मन के प्रधानमंत्री ने महलन में ठहरायो

अमरीका जापान देस ने सादर गले लगायौ

गयो अफगानिस्तान अमानुल्ला ने मित्र बनायौ

तुर्की फ्रांस सभी देसन ने नर केसरी बतायौ।

कांप उठी अंगरेज न आवन दियो देस कौ प्यारो

ब्रजभूमि कौ ....

री बहिना मेरी भारत में फिरंगी डाकू धंसि गए।

जिन्ने डारी ये लूट मचाय। री बहिना मेरी ...

री बहिना मेरी माल खजाने सबु ले गए।

जिन्ने दीने ए लोट चलाय। री बहिना...

री बहिना मेरी गायन के खिरक खाली है गए।

जिन्ने दीनी ए सब कटवाय। री बहिना...

री बहना मेरी दूध दही सुपनो है गयो।

दुरलभ है गई छाछ। बहिना मेरी ...

अरि बहिना मेरी, जाने सत्य नीति नहिं जानी।

और कर दियो सकत लगान। बहिना मेरी...

री बहिना मेरी, लाल हरामी सबु ले गये।

जिन्ने कर दिये सब तंग किसान। बहिना मेरी...

री बहिना मेरी मन कपट छल बसि रह्यो।

जाको करि रहे सबई बखान। बहिना मेरी....

तेरे पापन कौ अब पाजी काऊ दिन भंडा फूटैगो

खून सहीदन को रंग लावै

तेरी हस्ती ऐ खाक मिलावै

खरा खोज जब तक न मिटै

तैरो पिंड न छूटैगो।

बंब चलाय चाहे गोली चलाय लै

वे अपराधहि फांसी चढ़ाय ले

चाहे कितनउ जेल भरौ नहिं तांतो टूटेगौ।

हर घर करो प्रचार, चलाती रहें घरों में तार।

देशभक्ति की पौनी घना, गरब के गाले कर तैयार ले,

एक मत की अदमाइन खींच, सत्यता के रोगन से सींच,

फूट बल जब तकली में पड़े, सुगत सोढ़ी से उसे निकाल ले,

सूत–संस्था–माल, अहिंसा धर्म को राखो ख्याल।

दिमरखा दूरदेशी साट, खीरता हथली हाय संभार ले।

हिंद रक्षक चरखा सुख देना,

चक्र सम फिरा करै दिन रैना।

(कवि पन्नालाल की रचना)

छोड़ के प्रिय प्रांत बंगाल

निडर चल परो वीर वेस करके अपनो विकराल।

रो पड़ी भारत मां प्यारी

सूनी कर मम गोद कहां तू जावे बलियारी।

मात में जंग मचाऊंगो

यदि जीवित रह गयो लौट भारत में आऊंगो।

नयन बह रही जलधारा है।

दिल्ली चलो जय हिंद हमारौ कौमी नासे है।

(कवि गिरीश)

बीर बहादुर सुभाष बाबू को जेल पकरि डारौ।।

बोस न तुरते प्रण कीयौ।

अन्न जल ग्रहण न करूं जेल से छोड़िन जौ दियो।।

मन में सरकार ए घबरानी।। बनी फौज...

भई लड़ाई शुरू सनन सन गोली सन्नानी।

दोऊ दल बढ़ि रहे, करन हित अपु–अपु कुरबानी।।

जहाजऐं घररर घराने।

बढ़ी फौज आजाद मोरचा दुश्मन ने हारो।

विजय ध्वनि तब तक घहरानी।। बनी फौज....

डावांडोल हो रही आज दुनिया की हालत सारी।

देते नहीं स्वराज हिंद को खोटी नीति तुम्हारी।

फैली चारों ओर युद्ध की खून ख्वार बीमारी।

भारत की जनता अशांत है आंदोलन की तैयारी।

आज पुरानी दुनिया के मिट जाने की तैयारी।

एक दूसरे के खूं के प्यासे हैं सत्ताधारी

देश गुलाम बनाए उनमें है बेचैनी भारी।।

नहीं विदेशी जुआ सहेंगे नव जाग्रत नर नारी

हिटलर को बड़ा गरूर है वह अपने मद में चूर है

रसिया से भिड़ा जरूर है पर विजय अनिश्चित दूर है

अड़ा रूस से लंदन पर भी करता गोलाबारी।

आज हिंडोले आजादी के गड़ि रहे जी

एजी कोई रहे छवि अजब दिखाय।

समन आयौ है सन् अड़तालीस कौ जी

एजी कोई झूलो सब हरसाय।

भैया सुभाष से झोटा दै रहे जी

एजी जासे ब्रिटिश गये दहलाय।

सामन आयौ है सन् अड़तालीस कौ जी।

(लोककवि टीकाराम हिंडोला)

सावन सूनो झूला कित परे जी

एजी कोई है गयो बाग उजार। सावन सूनो....

भैया हमारे जेल में जी,

एजी कोई निरदई है सरकार। सावन सूनो...

कौन के बांधू घूघरी जी,

एजी कोई कौन के राखी हार। सावन सूनो....

अब को सावन फिकफिको जी,

ढजी मैं कौन पै गाऊं मल्हार। सावन सूनो...

बागन कोयल बोलती जी,

एजी कोई मोरन की झंकार।

पिय पिय पपिहा करि रह्योजी,

एजी मोइ सूनो लगे संसार। सावन सूना ....

(भारत छोड़ो आंदोलन पर बृज भाषा का मल्हार गीत)

हम तो रे बाबुल खूंटा की गइयां,

जति हांको हंकि जांई रे, सुनि बाबुल मेरे।

भैया के कारन बाबुल मैहेल चिनाए

हम कूं तो धाए परदेस रे, सुनि बाबुल मेरे।

एकई पेट में जनम लियौ, सुनि बाबुल मेरे,

एक संग खेले आंगन में रे, सुनि बाबुल मेरे।

हम कूं धाए परदेस रे, सुनि बाबुल मेरे।

जा दिन लाड़ो मेरे तुम जु भई ई,

भई बज्जुर की राति रे, सुनि लाड़ो मेरी।

जा दिन तिहारे, बिरन भए ऐ, भई सोने की राति

सुनि लाड़ो मेरी।

आजादी के बोल और कौरवी लोकगीत

बनी बनाई फौज बिगड़ गई आ गई उलटी दिल्ली में।

शाह जफर का लुटा नसीबा रहने लगा हवेली में।

गंगाराम याहूदी ने जी देाो तो क्या काम किया।

अंग्रेजों से मिला रहा, और लड़ने का बस नाम किया।

फौज ने मांगा खाने को, ना उनको कोई काम किया।

भूखे लड़ते रहे गाजी अरु, किनको सुमू शाम किया।

वोई सूरमा लड़े वहां पै जिनके सिर थे हथेली में।

शाह जफर का लुटा....।

रामबक्स था किनका सहीस जी, जात परबिया कहलावै।

खूनी दरवाजा जो था शाह का, अपना मोरचा लगवावै।

मार मार के खंजर उनके लाशों के फरश वो बिछावै।

काले खां गोलंदाज भी यारो मोरी गेट जा दबावै।

नमकहलाली करी शाह की वो थे अल्लाकेली में।

शाह जफर का लुटा....।

चारों मोरचे तोड़े खाकियों ने चारों को फिर मरवाया।

दसों दरवाजे दसों मोरिये सबको उसने तुड़वाया।

शहर पनां थी जो शहर की वहीं लाशों को लटकाया।

तड़प–तड़प के मर गये गाजी पानी तक ना मुंह को लाया।

हर एक एक का दुश्मन यारो जो थे लोग देहली में।

शाह जफर का लुटा...।

शहजादी जन्नत निशा न बादशाह का पता रहा।

हिंदुस्तान का देाे यारो तख्त इस तरह हुआ तबाह।

शहजादे भी हुए रवाना ना दिन कोई लगा पता।

खोद खोद खाइयें तक ढूंढी ना दरिया में लगा निशां।

काले खां को मरवा दिया और चारों तड़पते दिल्ली में।

शाह जफर का लुटा....।

लाखों तड़प–तड़पकर गिरते सेठ और साऊकार वहां।

क्या अमीर क्या नवाब वहां के गदर हिंद में दिये फला।

मुरशीद चांद ने देखो यारो गदर का ये मजमून लिखा।

घीसा खलीफा कहे ख्याल को सुखन आज अलबेली में।

शाह जफर का लुटा...।

इस क्षेत्र में मुसलमान धोबियों का एक लोकगीत–ख्याल गाया जाता है। यह सन् 1857 की क्रांति में दिल्ली का दृश्य है।

ब्रिटिश दमन के दावानल की ज्वाला तब तो जगी कराल।

दखल–देस की हड़प–नीति के जब पंजे फैले विकराल।।

बजा गदर का नक्कारा, सब राजा रय्यत एक समान।

दगी जवाबी, चप्पे–चप्पे छिड़ी बगावत हिंदुस्तान।।

लालकिला दिल्ली से यारो झंडा उठा बहादुरशाह।

बेगम हजरत महल अवध की, लड़ी जनानी खूब सिपाह।।

थे कमाल बेगम के, उमड़े अबलाओं में कैसे जोश।

सबलाओं की जंग निराली, फिरंगियों के बिगड़े होश।।

मेरठ, दिल्ली, पटना, कंपू, दगी लखनऊ, कोल्हापुर।

धुंधपंत नाना साहब की सेनाएं थीं डटी बिठूर।।

फौज–पजा, बुंदेल, मराठा, स्वतंत्रता की सुलगी आग।

मत्त पतंगों को उमड़ा, उस अनल–क्रांति के प्रति अनुराग।।

अवध उगलता आग चौतरफ, आजादी का था संग्राम।

मरदाना वह, बेनीमाधव की कृपान सरनाम।।

बैस वंश के ठकुराने का, शंकरगढ़ का राजप्रदीप।

जिसके बल सेस बैसवाड़ में घर–घर जगे सूरमा दीप।।

पहली जंग हुई बक्सर में– जय गंगे! जय हिंदुस्तान।

लोहा बजा, जगी रणचंडी फिर तो सिमरी के मैदान।।

नाहर एक, अनेक शत्रु पर करता चला विषम संग्राम।

राना की चौतरफ मार से अंगरेजों की नींद हराम।।

अहमद–उल्ला शाह मौलवी नेता–क्रांति हुआ सिरमौर।

वतन छोड़ मदरास, लखनऊ में कर शुरू क्रांति का दौर।।

घसियारी मंडी निवास में नीति कुशल ने रची सिपाह।

बजता साथ सदा नक्कारा, नाम चला नक्कारा शाह।।

पस्त फिरंगी, बढ़ा मौलवी, मच्छी भवन लिया फिर घेर।

गर्जी तोपें अंगरेजों की लाशें बिछीं ढेर पर ढेर।।

क्रांतिकारियों की पलटन, क्या जनता और अवध के वीर।

शाहदों के अपार दल–बादल, तक की चली खूब शमशीर।।

अवध, रुहेलों और बुंदेलों की चल रही विषम तलवार।

तब तक बाबू कुंवरसिंह से, जाग उठा वह प्रांत विहार।।

'वनविल' मार 'हमिल्टन' मारे, हना फिरंगी कटक अपार।

युद्ध 'नपाई' का प्रसि', बहु मौत घाट रिपु दिये उतार।।

झांसी की सिहानी! वेष मरदाना, दांतों लगी लगाम।

दोनों कर तरवार, चौतरफ घूम–घूम करती संग्राम।

बंधा पीठ पर सुवर, उसे कसती, फिर बढ़ती बिना विराम।

धंसती कभी निकसती थी, फिर धंसती, करती शत्रु तमाम।

(नंद कुमार अवस्थी रचित आल्हा)

अन्य गीत–

बंग भंग प्रतिरोध, क्रांति युवकों ने अपनाई भर अंक।

क्रांतिकारियों के विप्लव–विस्फोटों से छाया आतंक।।

है प्रतीक योगेश चटर्जी, है समग्र जीवन बलिदान।

अब भी प्रस्तुत वयोवृद्ध हैं, राज्यसभा के रत्न महान।।

भगत सिंह, अशफाकुल्ला या खुदीराम, बिस्मिल, आजाद।

अगणित वीर शहीदों की, बन गई यहां पर पुण्य समाज।।

इन शोलों से जलीं मशालें, कुर्बानी के जले चिराग।

इसी आन से धधक उठा अमृतसर जलियांवाला बाग।।

बंकिम का राष्ट्रीय गान–बंदेमातरम रहे सब गाय।

हुए शहीद अमर सेनानी श्रद्धानंद, लाजपत राय।।

मेरा रंग दे पचरंगी चोला मां रंग दे पचरंगी चोला।

इसी रंग में रंग के शिवा ने मां का बंधन खोला। मां....

यही रंग प्रताप सिंह ने हल्दी घाटी में खोला। मो....

इसी रंग में तिलक देव ने यह स्वराज टटोला। मां....

इसी रंग में लालाजी ने मां का चरण टटोला। मां....

इसी रंग में भगत, दत्त ने दुश्मन का दिल छोला। मां....

इसी रंग में यतींद्रदास ने अपना चोला छोड़ा। मां....

इसी रंग में सत्यवती ने जेल का फाटक खोला। मां....

इसी रंग में गांधीजी ने नमक पर धावा बोला। मां.....

यही रंग अब्बास तैयब ने जेल में जा के घोला। मां....

इसी रंग में जवाहरलाल ने आत्मबल को तोला। मां....

इसी रंग में तारा सिंह ने सिक्खों का सत तोला। मां....

इसी रंग में वीरों ने चमकाया है शोला। मां....

इसी रंग में लिया देश ने आजादी का झोला। मां....

फांसी का झूला झूल गया मर्दाना भगत सिंह।

दुनिया को सबक दे गया मस्ताना भगत सिंह। फांसी....

राजगुरू से शिक्षा लो दुनिया के नवयुवकों।

सुखदेव को पूछा कहां मस्ताना भगत सिंह।

रोशन कहां अशफाक कहां लहरी कहां बिस्मिल।

आजाद से था सच्चा दोस्ताना भगत सिंह। फांसी....

भारत के पत्ते–पत्ते में सोने से लिखेगा।

राजगुरू, सुखदेव और मस्ताना भगत सिंह। फांसी....

ऐ हिंदियों सुनलो जरा हिम्मत करो दिल में।

बनना पड़ेगा सबको अब दीवाना भगतसिंह।।

साबरमती से चला संत, एक अहिंसाधारी

जगती में सन्नाटा छाया घूमी पृथ्वी सारी

कांपे कमरिया हाथ में लाठी एक लंगोटाधारी

चला नमक कानून तोड़ने स्वराज्य का अधिकारी

चला दुखों का दुर्ग तोड़ने चालीस कोटि बंध तोड़ने

जेल को जिसने तीर्थ बनाया आजादी है प्यारी

साबरमती से चला संत, एक अहिंसाधारी।

दुर्बल देह प्रबल मन वाला सच्चा सेवाधारी

जनसेवा को जीवन समझा जिसे एकता प्यारी।

घर में जा जा अलख जगाया आजादी का पाठ पढ़ाया

खादीधारी हमें बनाया भारत तेरा पुजारी।

काली घटा घनघोर तिरंगे झंडे की

आवाज भई जय हिंद की

छज्जे से देखी नेताजी की पलटन

देखे सुभाषचंद्र बोस....

आवाज भई.....

सोने की थाली में गंगाजल पानी

पीवें सुभाषचंद्र बोस

आवाज भई....

छप्पन तरीका के भोज पकाए

खावे सुभाषचंद्र बोस

आवाज भई....

ले गए पाली (बाजी) नेताजी

रह गए गांधी बाबा जी

हिटलर से जा हाथ मिलाया

बर्मा पर झंडा लहराया

ले पलटन आजाद हिंद की

राह नई दिखलाई भैना

लंदन की लेडी रोवें

फिरंगी बांधे बिस्तर चार

वा नेताजी के फुलहार

बिके खूब रंगून बजार।

अंगिका (भागलपुर, मुंगेर, पूर्णिया जिले के दक्षिणी भाग की बोली) लोकगीत और स्वतंत्रता आंदोलन

अंगिका के लोकगीतों में क्रांतिकारी नेताओं–चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल आदि के शौर्य और बलिदान का गौरवगान किया गया है। लोकमानस का यह विश्वास लोकगीतों में भी अभिव्यक्त हुआ है कि क्रांतिकारियों के कार्यों तथा उनके बलिदान के फलस्वरूप देश स्वतंत्र हुआ। एक अंगिका लोकगीत में शहीद चंद्रशेखर आजाद के बलिदान को आजीवन न भुलाने की बात की गई है–

हौ आजाद त्वौं अपनौ प्राणे कऽ

आहुति दै कै मातृभूमि कै आजाद करैलहो।

तोरो कुर्बानी हम्मै जिनगी भर नैऽ भुलैबे,

देश तोरो रिनी रहेते।

मैथिली लोकगीत और मुक्ति संग्राम

मैथिली लोकगीत में अंग्रेजों को भारत से भगा देने का संकल्प–

गरजब हम मेघ जकां, बरिसब हम पानि जकां,

उड़ाय देब लंदन के हुंकार में।

बिजली जकां कड़कि कड़कि,

आन्हीं जकां तड़कि तड़कि

भगा देव गोरा के टंकार में।

कुहुकब हम कोइल जकां, नाचब हम मोर जकां,

मना लेब माता के बीना के झंकार में।

1942 में जनक्रांति को न भुलाने का संकल्प–

हम देश केर सिपाही

हम एक बात जानी

अइ देश केर पूत हम

थिक नाम हिंदुस्तानी

हमरा ले ऐ धरतीक आगा

स्वर्गों एकदम्म तुच्छ अछि

हमरा ले आजादीक आगां

जिनगी एकदम्म छुच्छ अछि

बसरि नै सकै छी

बियालिस केर पिहानी।। हम देश केर....

खूनक एकोटा कतरा

जाधरि शरीर में रहत

फहराइत तिरंगा के

कियो झुका नै सकत

सहि नै सकै छी

हम ककरो शैतानी।। हम देश केर....

एक गीत में सरदार बल्लभ भाई पटेल और जवाहरलाल नेहरू की प्रशंसा–

आई रे होरिया आई फिर से।

आई रे!

गावत गांधी राग मनोहर

चरखा चलावे बाबू राजेंदर

गूंजत भारत अमराई रे, होरिया आई फिर से!

बीर जमाहिर शान हमारो

बल्लभ है अभिमान हमारौ,

जयप्रकाश जैसो भाई रे, होरिया आई फिर से!

होली है! होली है! होली है!

मगही लोकगीत और मुक्ति के स्वर

मगही नाम मागधी से व्युत्पन्न है। मागधी शाखा के अंतर्गत मगही के अतिरिक्त भोजपुरी, मैथिली, बांग्ला, असमी और उड़िया भाषाएं सम्मिलित हैं।

मगही लोकगीतों में क्रांति का स्वर मुखरित हुआ है। लोककवि योगेश देश की वर्तमान दशा देखकर भारत के वीर युवकों का आह्वान करते हैं कि वे कुर्बानी का लाल रक्त पुनः दिखाए। इस प्रकार उन्होंने देश की स्वाधीनता के लिए अपना रक्त बहाने वाले क्रांतिकारियों का गौरवगान किया है। वह गा उठते हैं–

मातृभूमि तो खोज रहल हे, गरम खून कुर्बानी के।

हे भारत के लाल दिखावऽ, जौहर अपन जवानी के।।

लोककवि सदय जी भारतीय जनता से अनुरोध करते हैं कि वह भारत का जयगान करे और देश को सुखी व संपन्न बनाए। उन्होंने लिखा है–

सउंसे भारत के जय गावऽ।

सउंसे भारत के जय गावऽ।।

देख बनावऽ अइसन सुन्नर–

जहां रहे सुख सुविधा घर घर।

छोट–मोट सब पचड़ा छोड़ऽ

नव बिहार से नाता जोड़ऽ

सउंसे भारत के जय गावऽ

कउनो जतण में हो, भारत

भेलऽ तू हो आजाद

सम्मत से रहिहऽ हो, भारत

करिहऽ नऽ हो विषाद

तिलक के टिकवा हो, भारत

तोहरे हो उदेस

गान्ही के भखवा हो, भारत

जगऽ के हो सनेस

सरवोदय लइहऽ हो, भारत

अपने हो भवनवां

कइसहूं पुरइहऽ हो, भारत

गान्ही के हो सपनवां।

(मगही के लोक गीतकार राम सिंहासन सिंह विद्यार्थी)

लोककवि जयराम सिंह भारत की विभिन्न भाषाओं और धर्मों के अनुयायियों को एक ही बाग का रंग–बिरंगा फूल कहकर राष्ट्रीय एकता का आह्वान करते हैं–

हमर बगिया के रंग–बिरंग फूल

जेकर सोभा से सरग भी लजा हे।

राम, किसुन, गांधी के गंध सबमें हय

सुरुज–चांद आउ तरेंगन के इंजोर नभ में हय

धरती तो नंदने बुझा हे।

जेकर सोभा से सरग भी लजा हे।

हमर बगिया के....

हिंदी, उरदू, मैथिली, भोजपुरी औ मगही

संथाली, कन्नड़, तमिल, तेलुगु, पंजाबी–

बगिया में सभे गजगजा हे।

जेकर सोभा से सरग भी लजा हे।

मंदिर–मस्जिद, गिरजाघर और फिनु गुरुद्वारा,

श्राम–रहीम–ईसा–गुरु गोविंद के भाइचारा।

गले–गले मिले में मजा हे।

जेकर सोभा से सरग भी लजा हे।

किसान और मजदूर जनक्रांति के मुख्य आधार होते हैं। वे ही संसार की प्रमुख उत्पादक शक्ति है। फिर भी उन्हें गरीबी, उत्पीड़न व शोषण का शिकार होना पड़ता है। एक

मगही लोकगीत में किसानों को जागने का आह्वान करते हुए कहा गया है कि तुम्हीं सबको अन्न देते हो, तुम संसार के सुहाग हो–

जागलउ हे जुग तोर जाग, रे किसनमा

जागमे–त–जाग, जाग–जाग, रे किसनमा

पंडित – ओकिल

तोरे पर मुनसहर

जोरा बिना दाना नऽ

केउ के मनोसर

दुनिया के हैं तू सोहाग, रे किसनमा

जागमे–त–जाग, जाग–जाग, रे किसनमा।

लोककवि रामसिंहासन सिंह 'विद्यार्थी' ने एक अन्य लोकगीत में मजदूरों के शोषण तथा उनकी अभावग्रस्त जिंदगी पर ध्यान आकर्षित करते हुए उनकी मुक्ति की कामना की है :

हम खोक्खा, नऽ पूर ही

कमिआ, जन मजूर ही

तोड़ि अइ पत्थर, कोड़िरइ खेत

लहलहइअइ बंजर, रेत

का सावन, का भादो – जेठ

सेइअइ खेतवा बन के प्रेत

दुवा के रतिया कटतइ तऽ

दुस्सह अन्हरिया छंटतइ तऽ

सुखवा – सुदिनमा अंटतइ तऽ

मंगल अछतिया बंटतइ तऽ

मंजिल से अखनी दूर ही

कमिआ, जन मजूर ही।

भोजपुरी लोकगीत और गुलामी से मुक्ति

एक भोजपुरी लोकगीत में अंग्रेजी राज के कुराज के प्रभाव का वर्णन –

हो गइली कंगाल हो विदेसी तोरे रजवा में।

सोने की थारी जहां जेवना जेवत रहनी,

कठवा के डोकिया ले भइलीं मुहाल।

भारत के लोग आजु दाना बिनु तरसे भइया,

लंदन के कुतवा उड़ावे मजा माल,

हो विदेसी तोरे रजवा में।

सुंदर सुथर भूमि भारत के रहे रामा, आज इहे भइल मसान रे फिरंगिया

अन्न धन जन बल बुद्धि सब नास भइल, कौनो के ना रहल निसान रे फिरंगिया

जहंवा थोड़े ही दिन पहिले ही होत रहे, लाखे मन गल्ला और धान रे फिरंगिया

उन्हें आज हाय रामा! मथवा पर हाथ धरि बिलखि के रोवेला किसान रे फिरंगिया

(मनोरंजन प्रसाद सिंह का भोजपुरी गीत फिरंगिया)

बिरहा लोकगीत –

जन नायक वीर कुंवर सिंह के घोड़े की खूबियों की प्रशंसा में बिरहा लिखा गया–

वीर कुअर सिंह के नील का बछेड़वा

पीयेला कटोरवन दूध,

ऐदिया रइनिया जितइहै नील बछेड़वा

की सोनवा मढइवै चारो खूर

पटना के पीर अली ने बिरहा लिखा–

बगावत के बलपे हम बैरागी बन के,

कुशासन को तेरे कुचलते रहेंगे,

रूके गा न पग ये झूकेगा न झण्डा

हम क्रान्ति का सोला उगलते रहेंगे,

या अली कहता था हिन्दू भाई

बजरंगी कहता मुसलमान आई।

येव वतन है हमारा हमारा रहेगा,

इस वतन के लिए सर कफन बाँध करके,

चिताऐं सजा करके जलते रहेंगे।

वीर कुंवर सिंह की वीरता का वर्णन इस लोकगीत में किया गया–

हथवा में लेहले तलरिया हो रामा

चललै बल करिया,

रात दिन समर में लोहा गहैलै जवनवा,

पापी अंगरेजवन के कइलै एलनवा,

विजय घोष करै रणधरिया हो रामा–

चललै बल करिया हो रामा–

अपने हाथे काट दिहलै आपन वीर बहिया,

हँसत हँसत देश खातिर भरलैन अहिया।

रहिया में हारे छलकरिया हो रामा,

चललै बल करिया।

भारत छोड़ो आंदोलन को सहदेव खलीफा ने कजरी में कहा–

सत सम सत्य अहिंसा स्वतन्त्र हिन्दुस्तान से निकला

बापू के जुबान से निकला, भारत के मुस्कान से निकला ना

जाने माने कजरी के गायक बद्री सिंह मठना मीरजापुर

तेगा वही रहा केवल तेगे की धार बदल गयी

गोरो की सरकार बदल गयी, ना,

जागे भारत मा के वीर,

लोहा लिए सदा समसीर,

हारी गोरी पलटन, उसके गले की हार बदल गयी

गोरो की सरकार बदल गयी ना,

गांधी के लड़इया नाहिं जितबे फिरंगिया

भल भल मजवा उड़ौले एहि देसवा में,

अब जइहै कोठिया बिकाय।

पूर्वी लोकगीत में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का इस प्रकार गौरवगान –

आजादी के करनवा नेता घर से परइले।

उनके पकरे लागी ना, कइले ब्रिटिश बहुत जतनवा।

उनके पकरे।

आजादी के बन सिपाही सुभाष चंद्र बलवान

सिंगापुर में मोर्चा ठाना, ब्रिटिश भेल हैरान।

उनके छक्का छोड़वले ना।

लार्ड वारेन हेस्टिंग्स के समय काशी की बहादुर जनता ने आक्रमणकारी अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध किया था। अनेक भारतीय वीरों को पकड़कर अंग्रेजों ने अंडमान में, जिसे कालापानी कहा जाता था, कैद कर दिया था। इस ऐतिहासिक घटना का भोजपुरी जन–मानस पर प्रभाव पड़ा था। एक लोकगीत में एक वीरांगना अपने पति को काले पानी भेजे जाने पर विलाप करती हुई 'कजली' लोकगीत में उसके घर की करुण दशा का वर्णन करती है–

अरे रामा नागर नैया जाला काले पनियां रे हरी।
सब कर नैया जाला कासी हो बिसेसर रामा,
नागर नैया जाला काले पनियां रे हरी।
घरवा में रोवै नागर, माई और बहिनियां रामा
सेजिया पै रोवै बारी धनिया रे हरी।
खुंटिया पै रोवे नागर ढाल तरवरिया रामा
कोनवां में रोवैं कड़ाबनियां रे हरी।
रहिया में रोवै तोर संग अउर साथी रामा
नर घाट पर रोवैं कसबिनियां रे हरी।
जो मैं जनत्यूं नागर जइबा काले पनियां रामा
तोरे पसवां चलि अवत्यूं बिनु रे गवनवां रे हरी।

स्वतंत्रता संग्राम में कुंवर सिंह के शौर्य का वर्णन करते हुए एक भोजपुरी लोकगीत में कहा गया है कि इंद्र भी यह युद्ध देखकर भाग गए थे–

खपाखप छुरी चले, छपाछप छुरी कटे

टहकत सोनिया के धार रे नू

जैसे बहे नदी के धार रे नू

इंद्र दूर से भागिलेल, यमराज दौड़ल

खप्पड़ लेई डाकिन–नाचे लागिन रे नू

झूमत कुंवर सिंह बांका रन बीच

जैसे हाथि कई कोपि सिंह डांकि फांदि बैठल रे नू।

इस लोकगीत में कहा गया है कि बाबू कुंवर सिंह अंग्रेजों की चाल और उसके प्रलोभनों में नहीं आए।

बाबू कुंवर सिंह तेगवा बहादुर, आरा में धूम मचाई रे।

मुट्ठी भर सेना लैके कुंवर सिंह, फिरंगिया पर छाया गिराई।

वीर कुंवर सिंह के छापामार युद्ध का वर्णन–

जगदीसपुर किला छोड़ दिया, जंगल में घुसा जाय

जंगले–जंगले बाबू चले, ई जनरैल जोड़ किया

दूरबीन लगा के देखे जाय, यही बाबू जाता है

लिखि परवाना भेजे का, सुनो बाबू मेरी बात

जंगल छोड़ के लड़ो, इतनी बात बाबू सुने

सुन जनरैल मेरी बात, मैं जंगल छोडूंगा

तुम तोप धर के लड़ो, इतनी बात जनरैल सुने

सुनिए बाबू मेरी बात, मैं तोप नहीं धरूंगा

तोप मेरी माता है, इतनी बात बाबू सुने

सुन जनरैल मेरी बात,

तुम्हारी तोप माता है, मेरा जंगल पिता है

मैं जंगल छोडूंगा नहीं।

सन् 1857 के शहीद मंगल पांडेय का गौरवगान बलिया जिले के चितबड़ा गांव के निवासी प्रसिद्ध नारायण सिंह ने विद्रोह शीर्षक अपनी रचना में किया है–

जब सन्तावनि के रारि भइलि, बीरन के बीर पुकार भइल

बलिया का मंगल पांडे के, बलिबेदी से ललकार भइल।

'मंगल' मस्ती में चूर चलल, पहिला बागी मसहूर चलल

गोरनि का पलटनि का आगे, बलिया के बांका सूर चलल।

गोली के तुरत निसान भइल, जननी के भेंट परान भइल

आजादी का बलिबेदी पर, मंगल पांडे बलिदान भइल।

जब चिता–राख चिनगारी से, धुधकत तनिकी अंगारी से

सोला नकलल, धधकल, फइलल, बलिया का क्रांति पुजारी से।

घर घर में ऐसन आग लगलि, भारत के सूतल भागि जगलि

अंगरेजन के पलटनि सगरी, बैरक–बैरक से भागि चललि।

कजरी में गांधी, जवाहर, भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद आदि नेताओं के योगदान की सराहना –

तिरंगा भारत में दिया लहराई पिया

कांग्रेस आई पिया ना।

रहा देस जब गुलाम, दुख में डूबी सुबह–शाम।

भारत माता रही आंसू बहाई पिया।

कांग्रेस आई ....

बापू बने कर्णधार, चाचा नेहरूजी पतवार।

खे नइया सुबास गही लाई पिया।

कांग्रेस आई....

सहनवाज मिले धाय, ढिल्लन ढाल बने आय।

मिस्टर जिन्ना दिए जान पहनाई पिया।

कांग्रेस आई ....

श्री आचार्य कृपलानी, भगतसिंह जी सैलानी

दिए हंस–हंस के जान गंवाई पिया।

कांग्रेस आई.....

चंद्रसेखर आजाद, किये भारी सिंहनाद।

दिए देसवा आजाद कराई पिया।

कांग्रेस आई.....

बरबाद भइल जब लाखनि घर, तबना पर ई दिन आइल बा।
पंद्रह अगस्त का अवसर पर, घर–घर झंडा फहराइल बा।।

लाहौर बयालिस सतावन, आजाद हिंद के प्राण हरण।
ओह अमर सहीदनि का बल पर, ई स्वतंत्रता लहराइल बा।।

चटगांव केस, चौरी–चौरा, काकोरी, जलियां, बारदोली।
एह सब बलिदान का लाल खून से ई सुराज रंगाइल बा।।

जेल–डामिल, जबती, बेंत, बूट, फांसी गोली अपमान लूट।
विपलव से और अहिंसा से, माता के बान्ह खोलाइल बा।।

(बक्सर के सोनबरसा गांव के कमला प्रसाद मिश्र की रचना)

भोजपुरी कवियों में मनोरंजन प्रसाद सिन्हा का विशिष्ट स्थान है। उन्होंने सन् 1921 के असहयोग आंदोलन के समय फिरंगिया लोकगीत की रचना की। इसकी रचना रघुवीर बाबू की 'बटोहिया' नामक धुन पर की गई थी। बटोहिया की पहली पंक्ति को सामने रखकर मनोरंजन बाबू ने 'फिरंगिया' की पहली पंक्ति की रचना इस प्रकार की :

सुंदर सुघर भूमि भारत के रहे रामा,
आज उहे भइले मसान रे फिरंगिया।

मनोरंजन प्रसाद सिन्हा ने इस रचना में भारतीय जनता की गरीबी तथा ब्रिटिश शासन के शोषक स्वरूप का पर्दाफाश करते हुए अंग्रेजों को चेतावनी दी है कि वे कुनीति का मार्ग त्यागकर अच्छे काम करें अन्यथा दुखी–पीड़ित जनता की आह उन्हें भस्म कर देगी।

अन्न, धन, जन, बल, बुद्धि सब नास भइल,
कौनों के ना रहल निसान रे फिरंगिया।
जहवां थोड़े ही दिन पहिले ही होत रहे
लाखों मन गल्ला और धान रे फिरंगिया।
उहवे पर आज रामा मथवा पर हाथ धके
बिलखी के रोवे ला, किसान रे फिरंगिया।
चेत जाउ चेत जाउ भैया रे फिरंगिया ते,
छोड़ दे अधरम के पंथ रे फिरंगिया।
छोड़ के कुनीतिया सुनीतिया के बाह गहु,
भला तोर करी भगवान रे फिरंगिया।
एको जो रोऊवां निरदोसिया के कलपी ते,
तोर नास होई जाई सुन रे फिरंगिया।
दुखिया के आह तोर देहिया के भसम कै देई,
जरि भूनि होई जइबे छार के फिरंगिया।
मरदानापन अब तनिको रहल नाहीं,
ठकुरसुहाती बोले बात रे फिरंगिया।

रात दिन करेले खुसामद सहेबवा के,

सहेले विदेसिया के लात रे फिरंगिया।

आजु पंजबवा के करि के सुरतिया से,

फाटेला करेजवा हमार रे फिरंगिया।

भारत के छाती पर भारत के बच्चन के

बहत रकतवा के धार रे फिरंगिया।

दुधमुंहा लाल सम बालक मदन सम,

तड़पि तड़पि देले जान रे फिरंगिया।

कोसिला के गोदिया में राम, कन्हैया जसोदा के हो।

रामा, सांवर बरन भगवान, के पिथरी के भार हरले हो।

जननी के कोखिया में मोती, तिलक, लाला, देसबंधु हो।

रामा, गांधी बाबा, बल्लभ, जवाहिर तऽ देसवा के भग जगले हो।

कमला, सरोजनि, अस देवी, तऽ घर घर जनमइ हो।

रामा, राखि लिहली देसवा के लाज, तऽ धनि धनि जग भइले हो।

बहुअरि के कोखिया में संतति, आइसहि जनमहि हो।

रामा कुल होखे अब उजियारि, बधइया भल बाजह हो।

धनि–धनि बहुअरि भगिया, तऽ अस जनमब संतति हो।

रामा, देखि देखि पुतवा के मुहवा तऽ हियरा उमड़ि आइ हो।

(गोरखपुर के भैंसा बाजार के लोककवि चंचवक का सोहर लोकगीत)

लोकगीत गारी –

बाजत आवेला रुनझुन बाजन, फहरात देशी पताका रे।

नाचत आवैं सुदेसिया समधी राम, बिहसत दुलरू दमाद रे।

मड़वे बैठावो मैं सुदेसिया समधी रामा,

कोहबर दुलरू दमाद रे,

द्वारे बैठावों में रुनझुन बाजन,

कोठे पर देशी पताका रे।

चर्खा मैं देबो सुदेसिया समधी रामा,

धिया देहि दुलरू दमाद रे।

मोरे धिया घर से अइली सुदेसिया बरतिया,

धनि–धनि धिया के भागि रे।

कुंवरि भगवानि मन माहि मोद भई,

देशवा में होइहै सुराज रे।

अन्य लोकगीत में–

गांधी के आइल जमाना, देवर जेलखाना अब गइले

जब से तपे सरकार बहादुर, भारत मरे बिनु दाना।

देवर जेलखाना....।

हाथ हथकड़िया बा गोड़वा में बेड़िया,

छेसवा भरि होइल दिवाना।

देवर जेलखाना।

इज्जत राखि लेहु भारत भइया,

चरखा चलावहु मस्ताना।

देवर जेलखाना।

कमला, सरोजिनी विजय के लछमी

काम कइली मरदाना।

देवर जेलखाना।

होई गइले कंगाल हो विदेसिया तोरे रजवा में।

सोनवा के थारी जहां जेवना जेवत रहली।

कठवा के डोकिया के हो गइल मुहाल हो।

भारत के लोग आज दाना बिना तरसै भइया।

लंदन के कुत्ता उड़ावे माजा माल हो।

विदेसिया तोरे–

आवे अशोक, चंद्रगुप्त हमरे देसवा में,

लोरवा बहावे देखि तोहरो हाल हो।

विदेसिया तोरे–

जुग जुग जीयसु हमार गांधी, जवाहर।

जे दूर करेले मोर गरीबन के हाल हो।

विदेसिया तोरे–

लिखित स्रोत

प्रसिद्ध लोक कला विद्वान एवं लोकगीत संग्रहकर्ता विश्वमित्र उपाध्याय, हिंदी के प्रख्यात आलोचक प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, सुप्रसिद्ध लोक कला अध्येता एवं नौटंकी लेखक राजकुमार श्रीवास्तव, बिरहा विद्वान एवं बिरहा गायक डॉ0 मन्नू यादव, जानेमाने लोककला विद्वान डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय, बुंदेली साहित्य और लोक साहित्य की अध्येता एवं विद्वान डॉ0 नर्मदा प्रसाद गुप्त, ए0आर0 देसाई (भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि), युवा कलाकार गौरव बजाज का अध्ययन, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र इलाहाबाद से प्रकाशित कला पत्रिका मध्येत्तरी कला संगम, हिंदी विद्वान डॉ0 अशोक कुमार चौहान का अध्ययन आदि।

वीडियो संदर्भ

- वीडियो साक्षात्कार
- पद्मश्री प्रो0 शारदा सिन्हा – **DVD No. 1**
- प्रख्यात आलोचक डॉ0 मैनेजर पांडेय – **DVD No. 2**
- प्रसिद्ध बिरहा गायक डॉ0 मन्नू यादव – **DVD No. 2**

अन्य वीडियो साक्षात्कार संदर्भ

- प्रसिद्ध सामाजिक इतिहासकार प्रो0 बद्री नारायण*
- विख्यात लोक कला अध्येता राज कुमार श्रीवास्तव*
- जाने–माने लेखक साहित्यकार, कवि, नौटंकी कलाकार राम लोचन सांवरिया*
- सुपरिचित लोक कवि, गायक, कलाकार फतेह बहादुर सिंह*
- प्रसिद्ध लोक कलाविद् अतुल यदुवंशी*

(*प्रथम रिपोर्ट के साथ प्रेषित डीवीडी में संग्रहीत)

सामाजिक संरचना और उसके प्रवाह को जब भी बाधित, खंडित करने का प्रयास हुआ हो या समाज के अंतर्सूत्र अथवा बहिर्सूत्र का तोड़ने की प्रतिकूल परिस्थितियां पैदा हुई हों, लोक ने हमेशा ही ज़ोरदार तरीके से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है, प्रतिरोध किया है। लोक ने अपनी सांगीतिक, सांस्कृतिक, कलात्मक, साहित्यिक, सामाजिक अभिव्यक्तियों में विरोधी शक्ति से संघर्ष किया है। साथ ही, लोक ने अपनी इन अभिव्यक्तियों में प्रतिरोध करने वाली शक्तियों को भावनात्मक तरीके से रेखांकित भी किया है। यह प्रतिरोधात्मक स्वर इतना मुखर रहा है कि इसने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को बहुत बल प्रदान करने के साथ संस्कृति के पन्नों पर अपनी उपस्थिति भी दर्ज करायी है।

लोक साहित्य में मुक्ति का गान भक्ति कालीन कवियों ने लिखना शुरू कर दिया। सामंती और धार्मिक वर्चस्व के विरूद्ध भक्ति कवियों ने अभिव्यक्ति दी। सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष में स्वतंत्रता की चेतना जगाने के लिए, स्वतंत्रता का भाव जगाने के लिए और जनता में अपनी परंपरा और संस्कृति के प्रति आदर का भाव विकसित करने के लिए लोक रचनाकारों ने लिखा। लोक कवियों ने सन् 1857 से लेकर सन् 1947 तक स्वदेशी आंदोलन, सुराज (स्वराज) भावबोध, शहीदों की शौर्य गाथा, स्थानीय नायकों की वीरता की कहानी, राष्ट्रवाद, राष्ट्र के स्वाभिमान, ब्रिटिश राज के अत्याचार, महात्मा गांधी के योगदान आदि को विषय बनाकर लोकमन की अभिव्यक्ति दी। दरअसल, प्रतिरोध का तत्व, विरोध का तत्व लोक

साहित्य की संरचना का हिस्सा है। प्रतिरोध की यह चेतना स्वतंत्रता आंदोलन में बहुत मुखर हो गयी थी।

अंग्रेजों के विरूद्ध समाज को तैयार करने में, जनता का मन बनाने में लोक कवियों ने बड़ी भूमिका का निर्वाह किया। लोक साहित्य विद्वान डॉ0 पूर्णचंद शर्मा कहते हैं, ''लोक साहित्य में सर्वाधिक महत्व है वहां के लोक गीतों का क्योंकि लोकगीतों की अजस्रधात युग–यगों से प्रवाहमान है। हमारे अतीत की कड़ियां, भविष्य की आशाएं और वर्तमान की अनुभूतियां निर्दिष्ट गीत–गंगा में संजोई रहती है।

जनमानस के सामने चुनौतियां पेश करने वालों के विरूद्ध लोक रचनाकारों ने विद्रोह का स्वर मुखरित किया है और लोक जीवन के भीतर व्याप्त समाज विरोधी, मनुष्य विरोधी, अंधविश्वास, कुरीतियों को भी नहीं छोड़ा। फ्रांसिस गूमर कहते हैं, 'लोकगीतों का महत्व केवल इसी बात में नहीं है कि अकृत्रिम भावना के दर्शन होते हैं। वे परंपरा की भाषा में ही अपनी अभिव्यक्ति नहीं करते बल्कि, जन समुदायों की आवाज के माध्यम से अभिव्यक्त होते हैं। उनमें किसी प्रकार का अनावरण नहीं होता। जो जैसा है, उसका वैसा ही वर्णन। वे स्वतंत्र हैं और खुली हवा की तरह ताज़गी लिए हुए हैं। उनके माध्यम से जीवन में हवा के झोंके और धूप की चमक बिखर जाती है।

उत्तर भारतीय लोक गीतों में ब्रिटिश राज, शासन, आतंक से मुक्ति के बाद भारतीय जनता में हवा की बयार और धूप की चमक आयी जिसमें लोकगीतों की, लोक रचनाकारों ने अप्रतिम भूमिका निभाई।

अवधी लोकगीतों में क्रांति का सुर

अजीमुल्ला खां के लिखे 1857 के 'बागी सैनिकों का कौमी गीत' में कहा गया–

आज शहीदों ने है तुमको अहले वतन ललकारा
तोड़ो गुलामी की जंजीरें बरसाओ अंगारा
हिन्दु मुसलमां सिख हमारा भाई भाई प्यारा
यह है आजादी का झंडा इसे सलाम हमारा।।

शकरपुर (रायबरेली) के राना बेनीमाधव ने सन् सत्तावन की क्रांति में अपनी देशभक्ति और शौर्य का परिचय दिया था। राना बेनीमाधव को अंग्रेजों ने काफी प्रलोभन दिए, परंतु वह अपने निश्चय पर अडिग रहे। उनकी प्रशस्ति में एक लोकगीत प्रचलित हुआ :

राना बहादुर सिपाही अवध में धूम मचाई मोरे रामा रे,
लिखि लिखि चिठियां लात न भेजी, आन मिलो राना भाई रे।
जंगी लिखत लंदन से मंगा दूं, अवध में सूबा बनाई रे,
जवाब सवाल लिखा राना ने, हमसे न करो चतुराई रे।
जब तक प्राण रहे तन भीतर, तुमकन खोद बहाई रे।
जमींदार सब मिल गए गुल्खान, मिलि मिलि के कमाई रे।

एक तो बिन सब कट कट जाई, दूसरे गढ़ी खुदवाई रे।

राना बेनीमाधव के संबंध में एक अन्य लोकगीत –

करिके सबको बखाना चल्यो गयो जग से राना।

पहिल लड़ाई लड़यो भीरा मा, दूसर सीमरी मुकामा।

तीसर धावा भा पुरबा मा गया बिलाइत बखाना।

लाट सुनि के घबराना।।

लाट साहब ने लिखा परवाना राना तुम मिल जाना।

जल्दी हाजिर होउ बक्सर मा काहे फिरत दिवाना।

राना पढ़ि के मुस्काना।।

श्राना बुलाइन आपन बिरादर सबको करत बखाना।

तुम तो जाय मिले गोरन से हमका है भगवाना।

करब अपना मनमाना।।

मारपीटि के राना निकरिगे गारन मन खिसियाना।

भगवत दास कहें कर जोरे अमल करै भगवाना।

भजो मन रामै रामा।।

चल्यो गयो जग से राना।

लोककवि दुलारे ने राना बेनीमाधव की प्रशस्ति में एक मर्मस्पर्शी लोकगीत लिखा, जिसमें चंदापुर के राजा शिवदर्शन सिंह को 'सुदर्सन काना' कहा गया है।

शिवदर्शन सिंह पहले क्रांतिवीर राना बेनीमाधव के साथ थे, परंतु बाद में वह कमजोर पड़ गए थे और अंग्रेजों से मिल गए थे।

अवध मा राना भयो मरदाना।

पहिल लड़ाई भई बक्सर मा सेमरी के मैदाना।

हवां से जाय पुरवा मा जीत्यो तबै लाट घबड़ाना।

नक्की मिले मान सिंह मिलिगे मिले सुदर्सन काना।

छत्री बंस एकु ना मिलिहै जानै सकल जहाना।।

भाई बंध और कुटुम कबीला सबका करौ सलामा।

तुम तो जाय मिलन गोरन से हमका है भगवाना।।

हाथ में भाला बगल सिरोही घोड़ा चले मस्ताना।

कहै 'दुलारे' सुन मोर प्यारे यों राना कियो पयाना।।

तेरी तेग ताव मांहि तड़पत जात 'कृष्ण',

काटि काटि मुंड झुंड डुंड पटकतु है।

मच्छिका समान ही उड़ावती है शत्रु शीश,

गौरंग सुअंग को सुआंग सों रंगतु है।

खंग कोपि तोपि देत तोपन को लोथिन सों,

गगन गगन को तो कछु न गनतु है।

सरपै समान असि, सर पै समान अरि,

सर पै नहाय रक्त सरजा करतु है।

बेनी बीर बाना बैस बंस मरदाना

बाकी भूपति जनाना ठानठाना भरी घात है।

इंद्रपाल, माधवसिंह, चंदपति, रघुनाथ,

मिलिकै फिरंगिन दगा दई सो ज्ञात है।

ताना देखि भ्रकुटी सुयुद्ध में दिवाना देखि,

कंपनी बिलायत सकल बिललात है।

छीन्यो तोपखाना तब शुत्र है सकाना,

रन राना बिरझाना आज खाना नहीं खात है।

(कृष्ण शंकर शुक्ल, रायबरेली)

वाजिदअली शाह था नवाब औध 'कृष्ण कवि',

शासन विधान अंध कूप मुगलान को।

हीजड़न साथ कीन्हीं, वेश्यन विलास कीन्हीं,

नाश कीन्हीं दास भारत महान को।

जान को जहान को ईमान को न परवाह,

खान–पान ज्ञान औ न मान हू कुरान को।

वाही समय बेली बेलीगारद गारत कीन्हीं,

नभ फहरायो है फिरंगिनी बितान को।

(कवि कृष्ण)

अपनी गढ़ी से बोले गुलाब सिंह, 'सुन रे साहब मोरी बात रे'

पैदल भी मारे सवार भी मारे, मारे फौजी बेहिसाब रे

बांके गुलाब सिंह रहिया तोरी हेरूं, एक बार दरस दिखावा रे

पहली लड़ाई खमना गढ़ जीते,

दूसरी लड़ाई रहीमाबाद रे।

तीसरी लड़ाई संडीलवा में जीते, जामू कीना मुकाम रे।

राजा गुलाब सिंह रहिया तोरी हेरूं एक बार दरस दिखावा रे।

(संडीला के राजा गुलाब सिंह की प्रशस्ति में लोकगीत)

बाराबंकी जिले में स्थित चलहारी के अठारह वर्षीय युवक राजा बलभद्र सिंह रैकवार ने सन् 1857 की क्रांति में अंग्रेजों से जमकर लोहा लिया। उन्होंने नवाबगंज (बाराबंकी) की लड़ाई में वीरता और दशभक्ति का परिचय दिया था। राजा बलभद्र सिंह को जनता ने अपना नायक बनाकर अपने दिल में सदा के लिए बैठा लिया। लोक गीतकारों ने उनकी प्रशस्ति में लोकगीत लिखे। नवाबगंज का युद्ध देखने वाले भागू नाई ने राजा बलभद्र सिंह पर एक बेजोड़ आल्हा बनाया था।

बिच ओबरी के मैदनवा मा साहब लोगन किहिन पड़ाव।

देस के राजा एक ठौरी होइगे लै लै रामचंद्र के नाव।।

तोपन गरजीं अंगरेजन की धरती अगिनि अगिनि बरसाय।

जोहिके लागै तोप का गोला ऊकी धजा सरग मंडराय।।

जोहिके लागै सीसे का डंडा देहिया टूक टूक होइ जाय।

अरे गोसइयां परलै होइगै राजे भागे पीठि देखाय।

भागा राजा बौडो वाला जोहिका हरदत्तसिंह था नाव।

भागा राजा चरदा वाला जेहिका जोतसिंह था नाव।

राजा कहिए चलहारी वाला जेहिके बांट परी तरवार।

ब्याह क कंगना कर मां बाजै लक्खी मारै देय बहार।।

हाथी घिरिगा जब राजा का महावत गया सनाका खाय।

बोला महावत तब राजा से भैया दीन बंधु महाराज।।

मरजी पावौ सहजादे की तुरतै चहलारी देऊं पहुंचाय।

सुनिकै राजा राहुटु होइगा करिया नैन लाल होइ जाय।।

बोला राजा चलहारी वाला जेहिका बलभद्र सिंह नाव कहाय।

हट जा हट जा मेरे आगे से तेरा काल रहा नियराय।

धरम छत्री का यू नाही है भागै रण से पीठ देखाय।

अरे महावत हाथी बैठा दे सोने कड़ा देहौं दोनों हाथ।।

घोड़ा मंगाइस खासे वाला राजा कूदि भया असवार।

जैसे भेड़हा भेड़िन पैठे वैसे फौजन मा गा सिधियाय।।

पूरब मारे पच्छिम धावे राजा उत्तर दक्खिन करे संहार।

ग्यारह साहब गोरे मारिसि और मोरन की गिनती नाय।।

मारि पचासन का हनि डारिस जिनका भागत रस्ता नाय।

तीन घरी मा परलै कीन्हिसि गोरा भागे जान बचाय।

तब महाराजा चलहारी को देस मा नाव अमर होइ जाय।

हाइगा नांव तोरा लंदन मा कोई तेरे बराबर नाय।।

बलभद्र सिंह की प्रशस्ति में एक कविता भी प्रचलित है :

चलहारी को नरेश निजदल मा सलाह कीन,

तोप को पसारा जो समीपै दागि दीना है।

तेगन से मारि मारि तोपन को छीन लेत,

गोरन को काटि काटि गीधन को दीना है।

लंदन अंग्रेज तहां कंपनी की फौज बीच

मारे तरवारिन के कीच करि दीना है।

बेटा श्रीपाल को अलैंदा बलभद सिंह,

साका रैकवारी बीच बांका बांधि दीना है।

निज सुत को गोदी सों टारी।

राजहि लीन गोद बैठारी।।

तब बेगम बोली हरषाई।।

राजा को लै कंठ लगाई।

तुम सुत सरिस अहो प्रिय मेरे।

कहौं मर्म तो सन प्यारे।।

येते सब राजा रहे मल्लापुरी समेत।

सब भाजे तब समर से हम नहिं तजिहैं खेत।।

कोऊ ना महीम लीन्हो साहब सों छत्रीगन

करिकै दगा फौज भाजी है सवार की।

पल्टनें तिलंगन की थोरी सी लड़त भई,

गोरन को देखि तोप दगी ना गंवार की।।

रह्यो ना सिहार कछु करनी भुलाय गई,

करिकै नामर्दी सैन चली वार पार की।।

कहें कवि सत्य महाराज बलभद्र सिंह,

नाम राख्यो उत्तर को नाक रैकवार की।। (जंगनामा)

राजा देवीबख्श सिंह का जब राज रहा।

तब क्या झंडा फहरात रहा।।

नेरे नेरे गांव रहा।

तो दूर दूर जोतास रहा।।

हंसिया खुरपी गिनती नाहीं।

पैसे फार विकास रहा।

(गोंडा के राजा देवी बख्श सिंह को समर्पित लोकगीत)

राजा देवीबख्श सिंह को समर्पित अन्य लोकगीत इस प्रकार है :

राजा देवीबकस सिंह लोह बंका, जिनका रत्ती भर न संका।

बहि बजवाय दीन है डंका।

राजा एक सर बंधाय दीन लाय,

जब राजा कै राज रहा, तब सुखी सबै संसार रहा।

धान, जुंधरिया, सांवा, कोदों, सस्ता भाव बिकाय रहा।।

घर कोरी से जोड़ा बिनावैं, मरदों का पहिनाव रहा।

सिकिया पट्टा बाफता औरत का पहिनाव रहा।।

थोरे दाम मा बनै मिरजई ओही मां मरजाद रहा।

राजा देवीबकस अस सुंदर,

उनके हाथ सोने का मुंदर।

उनके आगे सब लगैं छछुंदर,

उनके चौरासी कोस मा रहै राज।

जब दागै तोप देवु घर गरज फाट दरारा नइया।

हजारों गोरा डूब मरे बहि कहते बप्पा मैया।

भागो मेम चलौ बिलाइत हियां है बड़े घरइया।

राजा एक सौ बंधाय दिया लाय।

महात्मा गांधी की कलकत्ता यात्रा पर रचा गया बिरहा –

समिरो गांधी और गंगा

बस्तर पहरे रंगा रंगा

जिनके कर्म में राज लिखा

फिर कोई नहीं मेटन वाला

कितो काम करिहैं वह गाजो

कितो काम करिहैं भाला

लड़ने मा अंग्रेज खड़ा है

बिगड़े पर हिंदू काला

रामचंद्र केदारनाथ क्या

लेक्चर देते निराला

बैठे गांधी पूजा करते

फेर रहे तुलसी माला

हाथ कमंडल भस्म रमाए

बगल लिहैं मिरगा छाला

जायतो पहुंचे कलकत्ते में

वहां का सुन लिहु हवाला

ठीक दुपहरे लूट गई औ

घर घर बंद भए ताला

आला थाना पुलिस वहां पे रहे पहरा

लिहे बंदूक सिपाही करें टहरा

आज सभा में सुनो गांधी का लहरा

अक्किल अंग्रेजन से लीन

कपड़ा पहरो मोटिया जीन।

रचनाकार : नारायण (गोंडा)

बुंदेली लोकगीतों में क्रांति को अलख

अरी कुमोदनी तू कैसी रै गई बांड़ बेला में।

चरखारी फूली केतकी, बांदा में फूलो गुलाब

बीच बेला में फूली कुमोदनी, संभू तोखा देउं चढ़ाय। अरी....

बेला ताल गहरे परे, मंझयारे कुमुद कौ फूल

अरे बीच बेला में रूपो बिरजानो, हम पारे केसरी सिंह। अरी ...

किले पार खाई खुदी, दोरें हते मसान

भैंसासुर छिड़िया थपे, दरवाजे बिराजे हनुमान। अरी...

डलन किसुरुआ तोरे खुद गए, अरे गाड़न खुदे मुरार

अरी बेला तेरी झोर में, जी मिल गओ सिंसार। अरी...

काबुल और खंदार देस है, जांसे चढ़ो फिरंगी

पूंछत बारबार, कहां राजा है जंगी। अरी...

राजा जंगी जैतपुर वारे पुरजन के अधिकार

जंग की करें तैयारी, डांगई बगौरा की। अरी...

चारऊं ओर पहारन की, पारीछत दावी पार

गोरा उरे बगौरा की डांगन–डांगन मंझयार। अरी...

कोरा सिंधारी राजा लग गओ, दूबा ने मार दई धान

बंधवा पै रो रई ढिमरिया, लरका हो गये बारहबाट। अरी...

बेला सपने दै रई, राजा सुन लेव मोरी बात

अरे तोरी तोपें डूब रई, गुर्जन में लेव धराय। अरी...

अरी कमोदनी तू कैसे गई बांड़ बेला में।।

(सन् 1840 पर में अंग्रेजों में युद्ध लड़ने वाले युवराज परीक्षित की बुंदेली शौर्य गाथा, संकलन : डॉ0 नर्मदा प्रसाद गुप्त)

एक अन्य बुंदेली लोकगीत में पारीछत के शौर्य और पराजय के बाद के अवसाद का वर्णन है–

बड़े पारोछत महाराज,

किले के लानें जोर भंजाई राजा ने।

चरखारी मंगल रची, सब राज लए बुलाय

पारीछत मुजरा करें, राजा रए मुख जोय।

सबरे राजा जुरे चरखारी, बुढ़वा मंगल कीन

पुन सब बैठे जाय गढ़ियन में, पारीछत को मुहरा दीन।

कै सूरज गहनै परे, कै नगर में मच रई हूल

कै ऐसों दोनों पजो, सूरज भयो अलोप।

ना सूरज गहनै परे ना नगर में मच गई हूल

राजा पारीछत उतरे किले से, सूरज भये अलोप।

पैली न्यांव धंधवा भई, दूजी कछारन माह

तीजी मानिक चौक में, जहं जंग नची तलवार।

देस–दिसावर सालो नहीं, सालो जैतपुर गांव

एक जनो मोए ऐसा सालो, सालो मल्ल जुवराज।

गुर्जन गुर्जन रोई पतुरिया, गजशाला रोई भवास

ठांड़ी बिसुरै मानिक चौक में, कोउ नइयां पीठ रनवास।

बड़े पारीछत महाराज, बावन लानें जोर भंजाई राजा ने।

एक बुंदेली लोकगीत में पारीछत द्वारा लड़े गए युद्ध और उनके शौर्य का वर्णन इस प्रकार किया गया है :

मुरगा बोले पतारन में

हथनी मारे हजारन में।

पारीछत दहाड़े हजारन में।

ढड़कें फिरंगी पहारन में।।

पाठे कौ झिन्ना रुकत नैया

पारीछत कौ हांती टरत नैया।

पूरी हथिनिया गरद मिल जाय

पारीछत कौ तेगा कतल कर जाए।।

भूरागढ़ के किले में खूब लड़ जवान।

नौ सौ तेगा बटेरा चले

परवाड़ी में राजा अकेले लड़े।

नौ सौ खुरपी हजार हंसिया

नंदिया नंदिया भागे नवाब रसिया।

भागे फिरंगी महोबा को जायं

राजा पारीछत खदेरत जायं।।

हाथी पै हौदा और घोड़ा पै जीन

चले तीर नेजा पारीछत क सांग।

डतरत घाटी बजो डंका

पारीछत के जी को मिटो टंटा।

हांत सुमरनी गरे माला

पारीछत छोड़ी धरमशाला।

राम रची सोय होय

डंगाई में खूबी चली तलवार।

जुग जुग जियो पारीछत

डंगाई तैने जेर करी।

दोहा और छंद के रूप में राजा परीक्षित की शौर्य गाथा–

दोहा : कैसो दिन कैसी घरी, लयो बाम ने पूछ।

वन–मृगया कौ मिस करौ, राजा कर गए कूच।।

सैर : कर कूंच जैतपुर से बगौरा में मेले।

चौगान पकर गाए मंत्र अच्छी खेले।

बगसीस नई ज्वानन खां पगड़ी सेले।

सब राजा दगा दै गए नृपं लड़े अकेले।।

कर कुमुक जैतपुर चढ़ आयो फिरंगी।

हुसयार होओ राजा दुनिया है दुरंगी।

दोहा : नृप पारीछत के लड़ैं गओ निस्चर को तेज।

जात हतो लाहौर खां अटक रहो अंगरेज।।

सब राजा रानी भए, पर पारीछत भूप।

जात हती हिंदुवान की राखी सबकौ रूप।।

छोरे न हथयार नृपत दिना सात लौं।

तब तक कैं डारे छापे चूके न घात लौं।

सब कुछ पास अपने जो रही बात लौं।

राजा ने जंग मारी खबर है बिलात लौं।।

दोहा : बसत सरसुती कठ में, जस अपजस कवि काइ।

छत्रसाल के छत्र की, पारीछत पर छाइ।।

सैर : जलौं न गोल डगा भरी सबने हामी।

जब काम परो सरक गए नमकहरामी।

रच्छा करी आन के उन गरुड़ के गामी।

जे राजा जैतपुर के भैए नामी नामी।।

रन के निसान देाौ चौगान में गड़े।

सूर वीर देखौ दोइ कोद हैं खड़े।

उनसे विमुख हुए ते दरजे पै ना चड़े।

तुम पारीछत राजा अंगरेज से लड़े।।

लक्ष्मन सिंह फिरत हैं दौआ

भारत जात लखत अंगरेजन, काटत ककरी जौआ

भगत फिरत अंगरेजा बेकल, दौआ हो राओ हौआ।

बांदा से कोठी तक मारी, फौज फिरंगी कौआ।

सुन लो तब कोउ कान खोल के भाग चले लखनौआ।

(1857 से पूर्व राजा लक्ष्मण दौआ की लोकगीत में शौर्य गाथा)

मूंद मुख डंडिन को चुगलन को चबाई खाइ

खूंद दौड़ दुष्टन को शत्रुन संहारिका।

मार अंग्रेज रेज कर दई मात चंडी,

बचे नहीं बैरी एरी प्रलयंकारिका।

शंकर की रक्षा कर दास प्रतिपाल कर,

दीन की सुन टेर आकै मात प्रनपालिका।

खाई लेई मलेच्छन को झेल नहीं करौ अब,

भच्छन कर ततच्छन कोर मात कालिका।।

(सन् 1857 में जबलपुर के गोंड राजा शंकर शाह और उनके पुत्र रघुनाथ शाह की प्रशस्ति में लोकगीत)

स्वतंत्रता प्रेमी वीर श्यामलगिरि गुसाई ने कानपुर, बिठूर और चित्रकूट में 1857 की क्रांति में अंग्रेजों से युद्ध किया था। उनकी प्रशस्ति में उस क्षेत्र में यह लोकगीत गाया जाता रहा–

श्यामलगिरि भोरई आ धमक।

तीन सहस नाथु ले धाये, अंगरेजन पै चमके।

कानपूर से भगे फिरंगी पुन बिठूर आ धमके।

होन लगी तकरार रार है, आन फिरंगी ठमके।

सात दिना लौ भई लराई गिरी गुसांई हुमके।

काटकूट के सबई फिरंगी चित्रकूट पै धमके।

रेवाराम देख ला जा गत, आने मिले सब जमके।।

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की प्रशस्ति में एक बुंदेली लोकगीत इस प्रकार है–

खूब लड़ी मरदानी, अरे झांसी वारी रानी

पुरजन पुरजन तोपें लगा दई, गोला चलाए असमानी

अरे झांसी वारी रानी, खूब लड़ी मरदानी

सबरे सिपाइन को पैरा जलेबी अपन चलाई ग़रधानी

अरे झांसी वारी रानी, खूब लड़ी मरदानी

छोड़ मोरचा जसकर कों दौरी, ढूंढेहु मिले नहीं पानी

अरे झांसी वारी रानी, खूब लड़ी मरदानी।

एक अन्य बुंदेली लोकगीत में लक्ष्मीबाई की संसार में फैली कीर्ति का यशोगान और उनके देशद्रोही गोलंदाज की भर्त्सना है–

अपनो नांव कमा गई जग में कर गई सोर विकट भारी

बाई साब झांसी वारी

भीतर ब्राजी आदि भवानी, मूरत सिवशंकर की जानी

गौरा के पुत्र गनेश विराजे, भैरो की मड़िया न्यारी

बाई साब झांसी वारी

धर के रूप चली मरदानी, अंगरेजन से लरी दिमानी,

संका काउ की नई मानी

ले तरवार कटा कर डारे, मन में रोस बड़ो भारी,

बाई साब झांसी वारी

गोलंदाज करी बेइमानी, रीती तोपें चलत दिखानी,

मन में बाई साब घबरानी

तीन दिना ना लुटी लच्छमी, जितनी लुटी लुटा डारी,

बाई साब झांसी वारी।

एक लोकगीत में लोककवि गंगा सिंह ने 1857 की वीरांगना बांदा की शीला देवी के साथ सैकड़ों अन्य महिलाओं के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने का गर्व के साथ वर्णन किया है :

बांदा लुटो रात के गुइयां, सोउत रई चिरैयां

सीला देवी लरी दौर के संग में सहस मिहरियां

अंगरेजन तो करी लराई मारे लोग लुगइयां

गिरी गुसाई तब दौरे हैं लरन लगे मऊ मइयां

सीला देवी को सिर काटो पलो लगत नई गुइयां

भगी सहेली सब गाउन में लैकें पाल मुन्इयां

गंगासिंग टेर कें कै रए भगो इतै ना रइयां।

एक अन्य बुंदेली लोकगीत में जिगनी की नन्हीं रानी के युद्ध–कौशल का वर्णन करते हुए इस ऐतिहासिक तथ्य को उजागर किया गया है कि नन्हीं रानी क्रांतिवीर तांत्या टोपे से मिलकर कार्य कर रही थी।

नन्ही रानी उद्यम करतीं, जिगनी में दम भरतीं
संग में ज्वान सात सौ लैके फौज फिरंगिन भरती
लूट खजाना, छिड़ा हतपारन, मंदिर डेरा करतीं
पूजा करतीं, राम सुमरती, तांत्या से मिल चलतीं
आग आगरे देती वे तो गढ़ ग्वालियर धरतीं
ऊधोदास एइ रीती सों प्रीती देस तु करतीं।

(रचनाकार : ऊधोराम)

उमदानी है आज भवानी, पदमाकर की रानी
जागा जागा सभा रोय के सुना रई है बानी
सागर से वा नागपुर सों घड़ा रई रन पानी
मानों गुरिया बेंच–बांध के बनवा लेउ क्रियानी
भाला बरछी गोला बोला ले लो रे प्रिन ठानी
रामधनी अब रार ठनी है, देस दुखी तब जानी।

(पद्माकर की रानी भवानी के लिए रामधनी की रचना)

महिलाओं द्वारा गाई जाने वाल एक गारी में किसी 'दिमान जंगी' द्वारा फिरंगियों के साथ किए गए युद्ध का उत्साहजनक वर्णन करते हुए दिमान जंगी की शान का बखान है–

ऐसो है अलबेला जंगी, जी के हाथ कटरिया नंगी
जी से घर घर कपैं फिरंगी, हड़ियन राधे खांप दुरंगी
ऐसो रुतबा है पूरो दीमान को, कोऊ नैंया की शान को।

लोहागढ़ कठिन मवात,
फिरंगी झांसी भरोसै ना रहियो।
जहं तोप चलें, गोला चलें, भालन की है मार,
जहं सीस हथेली ले चलें, जमराज के सिरदार,
फिरंगी झांसी भरोसैं ना रहियो। लोहागढ़....
का कहिये खानपुर बारे की,
मर्दन सिंह नृपत जुझारे की।
सेना सजन, बजन रमतूला, चोटें समर नगारे की,
अंगरेजन की गरैं उतर गई, पैनी धार दुधार की,
का कहिये खानपुर बारे की। मर्दनसिंह

(लोहागढ़ किले की रक्षा की चेतावनी देता बुंदेली लोकगीत)

भैया अब सुराज के लानें, तन–मन से लग जानें।

करो फैसला घर अपने में, ना जैये कोई थानें।

बिस्कुट और बरंडी छोड़ो, समां–लठारा खानें।

द्विज खुमान अब पराधीनता से नातो ना रानें

सब कोइ गाढ़ा पैरो नाई, जातों होय भलाई।

घर–घर रांटा चरखा घर लेव बनवा लेव नटाई।

छोड़ देव इजलास तसीली उर दीमानी भाई।

सौकत अली और गांधी में तब खां दओ जगाई।

द्विज खुमान अब अपनी ऊगत किस्मत देत दिखाई।

(द्विज खुमान रचित चौकाड़िया फाग में असहयोग आंदोलन के बाद का चित्रण)

सैंयां होके भारतवासी काहें हंसी करावत मोर?

खादी की धोती नई ल्याओ

'धूपछांह' जबरन पहिराओ

तुम पे चलत न जोर सैंयां....

'खन' से मन हट गओ हमारो

सो न चानें हमें तुमारो

छमा करो जू खोर। सैयां...

गाढ़ा के चोली बनवा देव

कुसमानी रंग में रंगवा देव

लगा हरीरी कोर। सैया...

जो न स्वदेशी को अपनाओ

हमने जानी तौ बस आओ–

अमन सभा को छोर। सैयां....

पैयां परों देस रस पागो

बहुत सो चुके हो उठ जागो

कयें खुमान भओ भोर। सैयां....

लोककवि मथुरा द्वारा रचित एक बुंदेली फाग में सन् 1942 की क्रांति में बलिया की घटनाओं का चित्रण–

बाजी भारत की रनभेरी, सुन सन ब्यालिस केरी।

क्रांतीदल की धूम मची तो, बलिया में जिन केरी।

इक ते एक हतें भर बांके, तरुनई रंग रंगे री।

दहल उठी अंग्रेजी 'मथुरा' देख फौज इन केरी।।

जब–जब एक रास मिल राजै दुश्मन होत पराजै।

रामचंदे ने रावन मारो, निसचर सहित समाजै।

कृस्नचंद नैं कंस पछारो, दुजःदेवन के काजै।

गौरमेंट से बिन असि, 'मथुरा' गांधी लेत सुराजै।।

बुंदेलखंड की जनता रोवै, भये राजा अत्याचारी।

अंग्रेजन के गुलाम राजा, तिनके हम गुलाम भारी।।

सत्ताईस कर हमरे सिर पै, कैसे चुकत चुकाये सें।

है बेकार कर्जा भारी, सूत पै सूत लगाये सें।

उर लागान चौगुनो हो गओ आठ रुपैया बीघा को।

चुलयउन, गुलयउन, मड़वा महुठो और कठवा को।

झरी ब्याई, जैजिया लागे, पैसा पोसी है न्यारी।

अंग्रेजन के गुलाम राजा।।

पैतीस रियासत की जनता ने जुरमिल एक विचार करो।

कै राजा जौ टैक्स छुड़ावैं, कै उन हातन मिटो–मरो।

सन इकतिस चौदा जनवरि को, चरनपादुका पै आये।

पैंतिस राजा बुंदेलखंड के, एत्र.जी. जी. के ढिंग धाये।

भड़की जनता बस में करबे, करो फौज की तैयारी।

अंग्रेजन के गुलाम राजा।।

स्वतंत्रता के सब नेतन खां, जबरन डाकू ठैराओ।

भीलन की पलटन बुलवा कें, खेमा ऊको लगवाओ।

गनमसीन, बंदूक ओ टोंटा, लारी में भर मंगवाये।

एक बिना पैसे सब नेता, पकर जेल में पठवाये।

जो लख जनता उमड़ परी सब, देख चकित भये अधिकारी।

अंग्रेजन के गुलाम राजा।।

चली फिरंगी गनमसीन सब, ढोर हिरन पंछी मारे।

भरी सभा में भई अनहोनी, ढूंढ–ढूंढ नेता मारे।

बचेःखुचे कुछ पकर–पकर कै लारी में दये बैठारे।

जनता चिमट नई लारिन सें, तिने कुचर भागी कारें।

सौ ले गये नौ गांव छावनी, जेल भरी जनता लारी।

अंग्रेजन क गुलाम राजा।।

जीके घर के नेता मर गये, ऊके घर फिर लुटवाये।

बैल ढोर लीलाम कराये, उर मकान फिर जरवाये।

बुंदेलखंड के गांउन–गांउन, फेर ढोड़ेरे पिटवाओ।

जो सुराज कौ नाम लेवगे, तो हम कीला ठुकवाओ।

गांवन–गांवन पी.ए. फिशर नें करो दमन भौतई भारी।

अंग्रेजन के गुलाम राजा, तिनके हम गुलाम भारी।।

(छतरपुर के चरणपादुका कांड 1931 में कुछ राजाओं ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रही जनता को मरवाया और कुछ को गिरफ्तार करवाया पर चर्चित लोकगीत, संकलन : डॉ0 नर्मदा प्रसाद गुप्त)

माधव शुक्ल 'मनोज' संकलित, बुंदेली लोकगीत में क्रांति के बोल–

चुनरिया रंग दैयो मोरे यार।

भारत के रनबीरों की हो जी में झलक अपार।

चूनर ऊपर रेशे–रेशे, आजादी की झलक दिखा दैयो

शुद्ध सूत की चादर मोरी, शांति की कलफ चढ़ा दैयो।

तीन रंग की लगा के, झंडा रूप सजा दैयो।

गांधी बब्बा की सूरत को, चरखा सहित छपा दैयो।

झांसी वाली रानी के कर, होवे नगिन कटार।

चुनरिया रंग दैयो मोरे यार।

छादा भाई, तिलक, गोखले और लाजपत से हों वीर

अपने प्रान देश के ऊपर, मित्रों जिनने किये अखीर।

देश धरम पे सरवस त्यागो, मोतीलाल न मानी पीर।

मौलाना आजाद, पंतजी, पटेल, बल्लभ भये फकीर।

तो बालक वीर हकीकत के गलबहे रक्त की धार।

चुनरिया रंग दैयो मोरे यार।

आजादी के लिए भगत सिंह, हो फांसी पर चढ़े हुए।

डेल लाख भारत सपूत हों, जेल क अंदर पड़े हुए।

मरे बहादुर साह रुस्तम के हों बच्चे बड़े हुए।

इक लग खड़े सुभाष और फिर वीर जवाहर अड़े हुए।

बघेली लोकगीतों में क्रांति की बयार

बघेली बोली की अनेक लोकगाथाओं में स्थानीय वीरों के शौर्य का उत्साहवर्धक वर्णन किया गया है। इन गाथाओं की भाषा ओजपूर्ण है। बघेलखंड में 'नैन हाई केर जुज्झ' का बंवड़ा बहुत लोकप्रिय है।

हथवा के जोरिकै विनती करा ठाकुर, नायक से करें जवाब।

लूट राज रीमां के पहले, फिरि देवै कोडि खलिहाय।

डेरा पतला घूमने से ओकर डेरा बम्हनी जाय।

उआ बम्हनी के मोइडे मा, दिहिस नायक तंबू तनवाय।

गली गली लीद झोंकवावें, लोटवावै तलाये ऊंटि।

हिरई सिंह ठाकुर भागि जांय जउने, लेई तेमरिया लूटि।

हिरई सिंह सेमरिया के ठाकुर, लिखि पतिया दिहिस दौड़ाय।

जैतना भाई रीमां केर हों, सब राखें सांग समराय।

हार्जिन केर महाउत बूड़त आवें, करिया काठ देखाय।

परी झूली कोनेन पर आवै, जइते बन टेसुआ फुलाय।

लिलिया घोड़ी मंगवावै नयकवा, मन भागे का कीन्ह।

धीरेन सो गोहरावै नयकवा, तै घोड़िया ले आउ सईस।

थैली मोहर ना केई लाल तोका, पूना सितारा केइ राज।

बिटिया तौहरै बिअहवै लाल, मोका लै जाउ जाइदे पराय।''

थैली जरै तोरि मोहरेन केर नायक, जरे तोरि पूना सितहरा केइ राज।

बिटिया तुखुवन फारै रे मैं कटवै मूड जरिहाय।

लिलिया घोड़ी नगवावै नयकवा, मन भागे का कीन्ह।

गढ़ रीमां का बांके बघेला, ओकर सिर उपरै ले लीन्ह।

ब्रज लोकगीतों में क्रांति चेतना

ब्रज लोकगीत में 1857 क्रांति के वीर 'अमानी' के शौर्य की स्मृति को सहेजा गया है। अमानी ने अलीगढ़ की इगलास तहसील के निकट अंग्रेजों को पराजित किया था और उनको भरतपुर तक खदेड़ दिया थाः

अमानी मानै तो मानै घोड़ी ना मानै

के अंगरेज चढ़े घोड़िन पै, कित्ते उलटे पैदर आये

कित्ते पकरि कुंअन में डारे, कित्ते उलटे भाजे

करौ अमानी ने जब पीछौ, बीन बीन के मारे

अमानी मानै तो मानै घोड़ी ना मानै।

फिरंगी लुट गयो रे, हाथुस के बाजार में

गोरा लुट गयो रे हाथुस के बाजार में

टोप लुट गयो, घोड़ा लुट गयो

तमंचा लुट गयो रे जाकौ चलते बाजार मे।

(1857 में हाथरस विद्रोह में जन विजय का वर्णन)

लीजो खबरि जगत के स्वामी,

मेरी नाव पड़ी मंझधार।

भारत ने जब मदद दई,

रंगरूटन की भरमार।

बाकी एवज गवरमेंट ने दीनी हमें लताड़।

चलि करिके जलियाना बाग में कीन्हे अत्याचार।।

बिन बूझे बिन खबरि हमारी, भरि दीने कारगार।

फांसी देके हने हमारे, भगतसिंह सरदार।।

(जलियांवाला बाग पर ब्रज लोकगीत)

दुष्ट मुए मोरे पल पल होत अंबार

क्यों डरो डार गले फांसी

सूधा सूरा स्वर्ग को जाऊं

धरम राय को बिथा सुनाऊं

और हर से मांग भगतसिंह लाऊं

भारत को एक हजार

क्यों डरो डार गले फांसी

ले हम जनम यहीं तुम पाईऊं

जल्दिया में भगत मत जाईऊं

फिर फांसी पर लटकइऊं

खेरी, खड़ी करके कतार

क्यों डरो डार गले फांसी

जलेगी लास हम यही भसमेंगे

फिर धरती में छुरा चलेंगे

हाड़ रक्त सबही फल देंगे

बैरी, भारत देश हमार

क्यों डरो डार गले फांसी

ले अत्याचार कियो बहुतन पै

आया तो दुष्टपन पै

अब होनी बैठी लंदन पै

देरी लंका के अनुहार

क्यों डरो डार गले फांसी।

(भगत सिंह के बलिदान पर लोककवि दुलीचंद का गीत)

देशप्रेम पर ब्रज रचना –

खेलो री देस–प्रेम की होरी।

रंग संगठन को मिलि खेल्यो, त्याग नगरी कोरी।

तीन रंग की लौ पिचकारी, निर्भय हवै कै बढ़ौ अगारी।

देखो अपनी अपनी बारी, खूब करी बरजोरी।।

राणा शिवा सहज ही खेले, तन पै कष्ट अनेकन झेले,

खेले भगतसिंह जित प्यारे, राजगुरू सुखदेव सितारे।।

बापू खेले हरि के आगे, हम देखत रह गए अभागे।।

डटे रहे सब ममता त्यागे, प्रीत राष्ट्र सो जोरी।।

अन्य लोकगीत –

ब्रज भूमी कौ लाला दुलारौ राजा महेंद्र प्रताप हमारौ।

भरी जवानी मातृभूमि तजि गयौ देश से बाहर

बर्फीले पहाड़ वन–वन में इकलौ घूमौ नाहर

जननी जन्मभूमि की खातिर अपनौ सर्वस तजकर

आजादी कौ सैनानी नहीं गिनौ काहू कौ डर।

जहाँ गयो निज धाक जमाई भारत कौ झंडा गाड़ो

ब्रजभूमि को ....

जर्मन के प्रधानमंत्री ने महलन में ठहरायो

अमरीका जापान देस ने सादर गले लगायौ

गयो अफगानिस्तान अमानुल्ला ने मित्र बनायौ

तुर्की फ्रांस सभी देसन ने नर केसरी बतायौ।

कांप उठी अंगरेज न आवन दियो देस कौ प्यारो

ब्रजभूमि कौ ....

री बहिना मेरी भारत में फिरंगी डाकू धंसि गए।

जिन्ने डारी ये लूट मचाय। री बहिना मेरी ...

री बहिना मेरी माल खजाने सबु ले गए।

जिन्ने दीने ए लोट चलाय। री बहिना...

री बहिना मेरी गायन के खिरक खालो है गए।

जिन्ने दीनी ए सब कटवाय। री बहिना...

री बहना मेरी दूध दही सुपनो है गयो।

दुरलभ है गई छाछ। बहिना मेरी ...

अरि बहिना मेरी, जाने सत्य नीति नहिं जानी।

और कर दियो सकत लगान। बहिना मेरी...

री बहिना मेरी, लाल हरामी सबु ले गये।

जिन्ने कर दिये सब तंग किसान। बहिना मेरी...

री बहिना मेरी मन कपट छल बसि रह्यो।

जाको करि रहे सबई बखान। बहिना मेरी....

तेरे पापन कौ अब पाजी काऊ दिन भंडा फूटैगो

खून सहीदन को रंग लावै

तेरी हस्ती ऐ खाक मिलावै

खरा खोज जब तक न मिटै

तैरो पिंड न छूटैगो।

बंब चलाय चाहे गोली चलाय लै

वे अपराधहि फांसी चढ़ाय ले

चाहे कितनउ जेल भरौ नहिं तांतो टूटेगौ।

हर घर करो प्रचार, चलाती रहें घरों में तार।

देशभक्ति की पौनी घना, गरब के गाले कर तैयार ले,

एक मत की अदमाइन खींच, सत्यता के रोगन से सींच,

फूट बल जब तकली में पड़े, सुगत सोढ़ी से उसे निकाल ले,

सूत–संस्था–माल, अहिंसा धर्म को राखो ख्याल।

दिमरखा दूरदेशी साट, खीरता हथली हाय संभार ले।

हिंद रक्षक चरखा सुख देना,

चक्र सम फिरा करै दिन रैना।

(कवि पन्नालाल की रचना)

छोड़ के प्रिय प्रांत बंगाल

निडर चल परो वीर वेस करके अपनो विकराल।

रो पड़ी भारत मां प्यारी

सूनी कर मम गोद कहां तू जावे बलियारी।

मात में जंग मचाऊंगो

यदि जीवित रह गयो लौट भारत में आऊंगो।

नयन बह रही जलधारा है।

दिल्ली चलो जय हिंद हमारौ कौमी नासे है।

(कवि गिरीश)

बीर बहादुर सुभाष बाबू को जेल पकरि डारौ।।

बोस न तुरते प्रण कीयौ।

अन्न जल ग्रहण न करूं जेल से छोड़िन जौ दियो।।

मन में सरकार ए घबरानी।। बनी फौज...

भई लड़ाई शुरू सनन सन गोली सन्नानी।

दोऊ दल बढ़ि रहे, करन हित अपु–अपु कुरबानी।।

जहाजऐं घररर घराने।

बढ़ी फौज आजाद मोरचा दुश्मन ने हारो।

विजय ध्वनि तब तक घहरानी।। बनी फौज....

डावांडोल हो रही आज दुनिया की हालत सारी।

देते नहीं स्वराज हिंद को खोटी नीति तुम्हारी।

फैली चारों ओर युद्ध की खून ख्वार बीमारी।

भारत की जनता अशांत है आंदोलन की तैयारी।

आज पुरानी दुनिया के मिट जाने की तैयारी।

एक दूसरे के खूं के प्यासे हैं सत्ताधारी

देश गुलाम बनाए उनमें है बेचैनी भारी।।

नहीं विदेशी जुआ सहेंगे नव जाग्रत नर नारी

हिटलर को बड़ा गरूर है वह अपने मद में चूर है

रसिया से भिड़ा जरूर है पर विजय अनिश्चित दूर है

अड़ा रूस से लंदन पर भी करता गोलाबारी।

आज हिंडोले आजादी के गड़ि रहे जी

एजी कोई रहे छवि अजब दिखाय।

समन आयौ है सन् अड़तालीस कौ जी

एजी कोई झूलो सब हरसाय।

भैया सुभाष से झोटा दै रहे जी

एजी जासे ब्रिटिश गये दहलाय।

सामन आयौ है सन् अड़तालीस कौ जी।

(लोककवि टीकाराम हिंडोला)

सावन सूनो झूला कित परे जी

एजी कोई है गयो बाग उजार। सावन सूनो....

भैया हमारे जेल में जी,

एजी कोई निरदई है सरकार। सावन सूनो...

कौन के बांधू घूघरी जी,

एजी कोई कौन के राखी हार। सावन सूनो....

अब को सावन फिकफिको जी,

ढजी मैं कौन पै गाऊं मल्हार। सावन सूनो...

बागन कोयल बोलती जी,

एजी कोई मोरन की झंकार।

पिय पिय पपिहा करि रह्योजी,

एजी मोइ सूनो लगे संसार। सावन सूना ....

(भारत छोड़ो आंदोलन पर बृज भाषा का मल्हार गीत)

हम तो रे बाबुल खूंटा की गइयां,

जति हांको हंकि जांई रे, सुनि बाबुल मेरे।

भैया के कारन बाबुल मैहेल चिनाए

हम कूं तो धाए परदेस रे, सुनि बाबुल मेरे।

एकई पेट में जनम लियौ, सुनि बाबुल मेरे,

एक संग खेले आंगन में रे, सुनि बाबुल मेरे।

हम कूं धाए परदेस रे, सुनि बाबुल मेरे।

जा दिन लाड़ो मेरे तुम जु भई ई,

भई बज्जुर की राति रे, सुनि लाड़ो मेरी।

जा दिन तिहारे, बिरन भए ऐ, भई सोने की राति

सुनि लाड़ो मेरी।

आजादी के बोल और कौरवी लोकगीत

बनी बनाई फौज बिगड़ गई आ गई उलटी दिल्ली में।

शाह जफर का लुटा नसीबा रहने लगा हवेली में।

गंगाराम याहूदी ने जी देाो तो क्या काम किया।

अंग्रेजों से मिला रहा, और लड़ने का बस नाम किया।

फौज ने मांगा खाने को, ना उनको कोई काम किया।

भूखे लड़ते रहे गाजी अरु, किनको सुमू शाम किया।

वोई सूरमा लड़े वहां पै जिनके सिर थे हथेली में।

शाह जफर का लुटा....।

रामबक्स था किनका सहीस जी, जात परबिया कहलावै।

खूनी दरवाजा जो था शाह का, अपना मोरचा लगवावै।

मार मार क खंजर उनके लाशों के फरश वो बिछावै।

काले खां गोलंदाज भी यारो मोरी गेट जा दबावै।

नमकहलाली करी शाह की वो थे अल्लाकेली में।

शाह जफर का लुटा....।

चारों मोरचे तोड़े खाकियों ने चारों को फिर मरवाया।

दसों दरवाजे दसों मोरिये सबको उसने तुड़वाया।

शहर पनां थी जो शहर की वहीं लाशों को लटकाया।

तड़प–तड़प के मर गये गाजी पानी तक ना मुंह को लाया।

हर एक एक का दुश्मन यारो जो थे लोग देहली में।

शाह जफर का लुटा...।

शहजादी जन्नत निशा न बादशाह का पता रहा।

हिंदुस्तान का देाो यारो तख्त इस तरह हुआ तबाह।

शहजादे भी हुए रवाना ना दिन कोई लगा पता।

खोद खोद खाइयें तक ढूंढी ना दरिया में लगा निशां।

काले खां को मरवा दिया और चारों तड़पते दिल्ली में।

शाह जफर का लुटा....।

लाखों तड़प–तड़पकर गिरते सेठ और साऊकार वहां।

क्या अमीर क्या नवाब वहां के गदर हिंद में दिये फला।

मुरशीद चांद ने देखो यारो गदर का ये मजमून लिखा।

घीसा खलीफा कहे ख्याल को सुखन आज अलबेली में।

शाह जफर का लुटा...।

इस क्षेत्र में मुसलमान धोबियों का एक लोकगीत–ख्याल गाया जाता है। यह सन् 1857 की क्रांति में दिल्ली का दृश्य है।

ब्रिटिश दमन के दावानल की ज्वाला तब तो जगी कराल।

दखल–देस की हड़प–नीति के जब पंजे फैले विकराल।।

बजा गदर का नक्कारा, सब राजा रय्यत एक समान।

दगी जवाबी, चप्पे–चप्पे छिड़ी बगावत हिंदुस्तान।।

लालकिला दिल्ली से यारो झंडा उठा बहादुरशाह।

बेगम हजरत महल अवध की, लड़ी जनानी खूब सिपाह।।

थे कमाल बेगम के, उमड़े अबलाओं में कैसे जोश।

सबलाओं की जंग निराली, फिरंगियों के बिगड़े होश।।

मेरठ, दिल्लो, पटना, कंपू, दगी लखनऊ, कोल्हापुर।

धुंधपंत नाना साहब की सेनाएं थीं डटी बिठूर।।

फौज–पजा, बुंदेल, मराठा, स्वतंत्रता की सुलगी आग।

मत्त पतंगों को उमड़ा, उस अनल–क्रांति के प्रति अनुराग।।

अवध उगलता आग चौतरफ, आजादी का था संग्राम।

मरदाना वह, बेनीमाधव की कृपान सरनाम।।

बैस वंश के ठकुराने का, शंकरगढ़ का राजप्रदीप।

जिसके बल सेस बैसवाड़ में घर–घर जगे सूरमा दीप।।

पहली जंग हुई बक्सर में– जय गंगे! जय हिंदुस्तान।

लोहा बजा, जगी रणचंडी फिर तो सिमरी के मैदान।।

नाहर एक, अनेक शत्रु पर करता चला विषम संग्राम।

राना की चौतरफ मार से अंगरेजों की नींद हराम।।

अहमद–उल्ला शाह मौलवी नेता–क्रांति हुआ सिरमौर।

वतन छोड़ मदरास, लखनऊ में कर शुरू क्रांति का दौर।।

घसियारी मंडी निवास में नीति कुशल ने रची सिपाह।

बजता साथ सदा नक्कारा, नाम चला नक्कारा शाह।।

पस्त फिरंगी, बढ़ा मौलवी, मच्छी भवन लिया फिर घेर।

गर्जी तोपें अंगरेजों की लाशें बिछीं ढेर पर ढेर।।

क्रांतिकारियों की पलटन, क्या जनता और अवध के वीर।

शाहदों के अपार दल–बादल, तक की चली खूब शमशीर।।

अवध, रुहेलों और बुंदेलों की चल रही विषम तलवार।

तब तक बाबू कुंवरसिंह से, जाग उठा वह प्रांत विहार।।

'वनविल' मार 'हमिल्टन' मारे, हना फिरंगी कटक अपार।

युद्ध 'नपाई' का प्रसि', बहु मौत घाट रिपु दिये उतार।।

झांसी की सिहानी! वेष मरदाना, दांतों लगी लगाम।

दोनों कर तरवार, चौतरफ घूम–घूम करती संग्राम।

बंधा पीठ पर सुवर, उसे कसती, फिर बढ़ती बिना विराम।

धंसती कभी निकसती थी, फिर धंसती, करती शत्रु तमाम।

(नंद कुमार अवस्थी रचित आल्हा)

अन्य गीत–

बंग भंग प्रतिरोध, क्रांति युवकों ने अपनाई भर अंक।

क्रांतिकारियों के विप्लव–विस्फोटों से छाया आतंक।।

है प्रतीक योगेश चटर्जी, है समग्र जीवन बलिदान।

अब भी प्रस्तुत वयोवृद्ध हैं, राज्यसभा के रत्न महान।।

भगत सिंह, अशफाकुल्ला या खुदीराम, बिस्मिल, आजाद।

अगणित वीर शहीदों की, बन गई यहां पर पुण्य समाज।।

इन शोलों से जलीं मशालें, कुर्बानी के जले चिराग।

इसी आन से धधक उठा अमृतसर जलियांवाला बाग।।

बंकिम का राष्ट्रीय गान–बंदेमातरम रहे सब गाय।

हुए शहीद अमर सेनानी श्रद्धानंद, लाजपत राय।।

मेरा रंग दे पचरंगी चोला मां रंग दे पचरंगी चोला।

इसी रंग में रंग के शिवा ने मां का बंधन खोला। मां....

यही रंग प्रताप सिंह ने हल्दी घाटी में खोला। मो....

इसी रंग में तिलक देव ने यह स्वराज टटोला। मां....

इसी रंग में लालाजी ने मां का चरण टटोला। मां....

इसी रंग में भगत, दत्त ने दुश्मन का दिल छोला। मां....

इसी रंग में यतींद्रदास ने अपना चोला छोड़ा। मां....

इसी रंग में सत्यवती ने जेल का फाटक खोला। मां....

इसी रंग में गांधीजी ने नमक पर धावा बोला। मां.....

यही रंग अब्बास तैयब ने जेल में जा क घोला। मां....

इसी रंग में जवाहरलाल ने आत्मबल को तोला। मां....

इसी रंग में तारा सिंह ने सिक्खों का सत तोला। मां....

इसी रंग में वीरों ने चमकाया है शोला। मां....

इसी रंग में लिया देश ने आजादी का झोला। मां....

फांसी का झूला झूल गया मर्दाना भगत सिंह।

दुनिया को सबक दे गया मस्ताना भगत सिंह। फांसी....

राजगुरू से शिक्षा लो दुनिया के नवयुवकों।

सुखदेव को पूछा कहां मस्ताना भगत सिंह।

रोशन कहां अशफाक कहां लहरी कहां बिस्मिल।

आजाद से था सच्चा दोस्ताना भगत सिंह। फांसी....

भारत के पत्ते–पत्ते में सोने से लिखेगा।

राजगुरू, सुखदेव और मस्ताना भगत सिंह। फांसी....

ऐ हिंदियों सुनलो जरा हिम्मत करो दिल में।

बनना पड़ेगा सबको अब दीवाना भगतसिंह।।

साबरमती से चला संत, एक अहिंसाधारी

जगती में सन्नाटा छाया घूमी पृथ्वी सारी

कांपे कमरिया हाथ में लाठी एक लंगोटाधारी

चला नमक कानून तोड़ने स्वराज्य का अधिकारी

चला दुखों का दुर्ग तोड़ने चालीस कोटि बंध तोड़ने

जेल को जिसने तीर्थ बनाया आजादी है प्यारी

साबरमती से चला संत, एक अहिंसाधारी।

दुर्बल देह प्रबल मन वाला सच्चा सेवाधारी

जनसेवा को जीवन समझा जिसे एकता प्यारी।

घर में जा जा अलख जगाया आजादी का पाठ पढ़ाया

खादीधारी हमें बनाया भारत तेरा पुजारी।

काली घटा घनघोर तिरंगे झंडे की

आवाज भई जय हिंद की

छज्जे से देखी नेताजी की पलटन

देखे सुभाषचंद्र बोस....

आवाज भई.....

सोने की थाली में गंगाजल पानी

पीवें सुभाषचंद्र बोस

आवाज भई....

छप्पन तरीका के भोज पकाए

खावे सुभाषचंद्र बोस

आवाज भई....

ले गए पाली (बाजी) नेताजी

रह गए गांधी बाबा जी

हिटलर से जा हाथ मिलाया

बर्मा पर झंडा लहराया

ले पलटन आजाद हिंद की

राह नई दिखलाई भैना

लंदन की लेडी रोवें

फिरंगी बांधे बिस्तर चार

वा नेताजी के फुलहार

बिके खूब रंगून बजार।

अंगिका (भागलपुर, मुंगेर, पूर्णिया जिले के दक्षिणी भाग की बोली) लोकगीत और स्वतंत्रता आंदोलन

अंगिका के लोकगीतों में क्रांतिकारी नेताओं–चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल आदि के शौर्य और बलिदान का गौरवगान किया गया है। लोकमानस का यह विश्वास लोकगीतों में भी अभिव्यक्त हुआ है कि क्रांतिकारियों के कार्यों तथा उनके बलिदान के फलस्वरूप देश स्वतंत्र हुआ। एक अंगिका लोकगीत में शहीद चंद्रशेखर आजाद के बलिदान को आजीवन न भुलाने की बात की गई है–

हौ आजाद त्वौं अपनौ प्राणे कऽ

आहुति दै कै मातृभूमि कै आजाद करैलहो।

तोरो कुर्बानी हम्मै जिनगी भर नैऽ भुलैबे,

देश तोरो रिनी रहेते।

मैथिली लोकगीत और मुक्ति संग्राम

मैथिली लोकगीत में अंग्रेजों को भारत से भगा देने का संकल्प–

गरजब हम मेघ जकां, बरिसब हम पानि जकां,

उड़ाय देब लंदन के हुंकार में।

बिजली जकां कड़कि कड़कि,

आन्हीं जकां तड़कि तड़कि

भगा देव गोरा के टंकार में।

कुहुकब हम कोइल जकां, नाचब हम मोर जकां,

मना लेब माता के बीना के झंकार में।

1942 में जनक्रांति को न भुलाने का संकल्प–

हम देश केर सिपाही

हम एक बात जानी

अइ देश केर पूत हम

थिक नाम हिंदुस्तानी

हमरा ले ऐ धरतीक आगा

स्वर्गों एकदम्म तुच्छ अछि

हमरा ले आजादीक आगां

जिनगी एकदम्म छुच्छ अछि

बसरि नै सकै छी

बियालिस केर पिहानी।। हम देश केर....

खूनक एकोटा कतरा

जाधरि शरीर में रहत

फहराइत तिरंगा के

कियो झुका नै सकत

सहि नै सकै छी

हम ककरो शैतानी।। हम देश केर....

एक गीत में सरदार बल्लभ भाई पटेल और जवाहरलाल नेहरू की प्रशंसा–

आई रे होरिया आई फिर से।

आई रे!

गावत गांधी राग मनोहर

चरखा चलावे बाबू राजेंदर

गूंजत भारत अमराई रे, होरिया आई फिर से!

बीर जमाहिर शान हमारो

बल्लभ है अभिमान हमारौ,

जयप्रकाश जैसो भाई रे, होरिया आई फिर से!

होली है! होली है! होली है!

मगही लोकगीत और मुक्ति के स्वर

मगही नाम मागधी से व्युत्पन्न है। मागधी शाखा के अंतर्गत मगही के अतिरिक्त भोजपुरी, मैथिली, बांग्ला, असमी और उड़िया भाषाएं सम्मिलित हैं।

मगही लोकगीतों में क्रांति का स्वर मुखरित हुआ है। लोककवि योगेश देश की वर्तमान दशा देखकर भारत के वीर युवकों का आह्वान करते हैं कि वे कुर्बानी का लाल रक्त पुनः दिखाए। इस प्रकार उन्होंने देश की स्वाधीनता के लिए अपना रक्त बहाने वाले क्रांतिकारियों का गौरवगान किया है। वह गा उठते हैं–

मातृभूमि तो खोज रहल हे, गरम खून कुर्बानी के।

हे भारत के लाल दिखावऽ, जौहर अपन जवानी के।।

लोककवि सदय जी भारतीय जनता से अनुरोध करते हैं कि वह भारत का जयगान करे और देश को सुखी व संपन्न बनाए। उन्होंने लिखा है–

सउंसे भारत के जय गावऽ।

सउंसे भारत के जय गावऽ।।

देख बनावऽ अइसन सुन्नर–

जहां रहे सुख सुविधा घर घर।

छोट–मोट सब पचड़ा छोड़ऽ

नव बिहार से नाता जोड़ऽ

सउंसे भारत के जय गावऽ

कउनो जतण में हो, भारत

भेलऽ तू हो आजाद

सम्मत से रहिहऽ हो, भारत

करिहऽ नऽ हो विषाद

तिलक के टिकवा हो, भारत

तोहरे हो उदेस

गान्ही के भखवा हो, भारत

जगऽ के हो सनेस

सरवोदय लइहऽ हो, भारत

अपने हो भवनवां

कइसहूं पुरइहऽ हो, भारत

गान्ही के हो सपनवां।

(मगही के लोक गीतकार राम सिंहासन सिंह विद्यार्थी)

लोककवि जयराम सिंह भारत की विभिन्न भाषाओं और धर्मों के अनुयायियों को एक ही बाग का रंग–बिरंगा फूल कहकर राष्ट्रीय एकता का आह्वान करते हैं–

हमर बगिया के रंग–बिरंग फूल

जेकर सोभा से सरग भी लजा हे।

राम, किसुन, गांधी के गंध सबमें हय

सुरुज–चांद आउ तरेंगन के इंजोर नभ में हय

धरती तो नंदने बुझा हे।

जेकर सोभा से सरग भी लजा हे।

हमर बगिया के....

हिंदी, उरदू, मैथिली, भोजपुरी औ मगही

संथाली, कन्नड़, तमिल, तेलुगु, पंजाबी–

बगिया में सभे गजगजा हे।

जेकर सोभा से सरग भी लजा हे।

मंदिर–मस्जिद, गिरजाघर और फिनु गुरुद्वारा,

श्राम–रहीम–ईसा–गुरु गोविंद के भाइचारा।

गले–गले मिले में मजा हे।

जेकर सोभा से सरग भी लजा हे।

किसान और मजदूर जनक्रांति के मुख्य आधार होते हैं। वे ही संसार की प्रमुख उत्पादक शक्ति है। फिर भी उन्हें गरीबी, उत्पीड़न व शोषण का शिकार होना पड़ता है। एक मगही लोकगीत में किसानों को जागने का आह्वान करते हुए कहा गया है कि तुम्हीं सबको अन्न देते हो, तुम संसार के सुहाग हो–

जागलउ हे जुग तोर जाग, रे किसनमा
जागमे–त–जाग, जाग–जाग, रे किसनमा
पंडित – ओकिल
तोरे पर मुनसहर
जोरा बिना दाना नऽ
केउ के मनोसर
दुनिया के हैं तू सोहाग, रे किसनमा
जागमे–त–जाग, जाग–जाग, रे किसनमा।

लोककवि रामसिंहासन सिंह 'विद्यार्थी' ने एक अन्य लोकगीत में मजदूरों के शोषण तथा उनकी अभावग्रस्त जिंदगी पर ध्यान आकर्षित करते हुए उनकी मुक्ति की कामना की है :

हम खोक्खा, नऽ पूर ही
कमिआ, जन मजूर ही

तोड़ि अइ पत्थर, कोड़िरइ खेत

लहलहइअइ बंजर, रेत

का सावन, का भादो – जेठ

सेइअइ खेतवा बन के प्रेत

दुवा के रतिया कटतइ तऽ

दुस्सह अन्हरिया छंटतइ तऽ

सुखवा – सुदिनमा अंटतइ तऽ

मंगल अछतिया बंटतइ तऽ

मंजिल से अखनी दूर ही

कमिआ, जन मजूर ही।

भोजपुरी लोकगीत और गुलामी से मुक्ति

एक भोजपुरी लोकगीत में अंग्रेजी राज के कुराज के प्रभाव का वर्णन –

हो गइली कंगाल हो विदेसी तोरे रजवा में।

सोने की थारी जहां जेवना जेवत रहनी,

कठवा के डोकिया ले भइलीं मुहाल।

भारत के लोग आजु दाना बिनु तरसे भइया,

लंदन के कुतवा उड़ावे मजा माल,

हो विदेसी तोरे रजवा में।

सुंदर सुथर भूमि भारत के रहे रामा, आज इहे भइल मसान रे फिरंगिया

अन्न धन जन बल बुद्धि सब नास भइल, कौनो के ना रहल निसान रे फिरंगिया

जहंवा थोड़े ही दिन पहिले ही होत रहे, लाखे मन गल्ला और धान रे फिरंगिया

उन्हें आज हाय रामा! मथवा पर हाथ धरि बिलखि के रोवेला किसान रे फिरंगिया

(मनोरंजन प्रसाद सिंह का भोजपुरी गीत फिरंगिया)

बिरहा लोकगीत –

जन नायक वीर कुंवर सिंह के घोड़े की खूबियों की प्रशंसा में बिरहा लिखा गया–

वीर कुअर सिंह के नील का बछेड़वा

पीयेला कटोरवन दूध,

ऐदिया रइनिया जितइहै नील बछेड़वा

की सोनवा मढइवै चारो खूर

पटना के पीर अली ने बिरहा लिखा–

बगावत के बलपे हम बैरागी बन के,

कुशासन को तेरे कुचलते रहेंगे,

रूके गा न पग ये झूकेगा न झण्डा

हम क्रान्ति का सोला उगलते रहेंगे,

या अली कहता था हिन्दू भाई

बजरंगी कहता मुसलमान आई।

येव वतन है हमारा हमारा रहेगा,

इस वतन के लिए सर कफन बाँध करके,

चिताऐं सजा करके जलते रहेंगे।

वीर कुंवर सिंह की वीरता का वर्णन इस लोकगीत में किया गया–

हथवा में लेहले तलरिया हो रामा

चललै बल करिया,

रात दिन समर में लोहा गहैलै जवनवा,

पापी अंगरेजवन के कइलै एलनवा,

विजय घोष करै रणधरिया हो रामा–

चललै बल करिया हो रामा–

अपने हाथे काट दिहलै आपन वीर बहिया,

हँसत हँसत देश खातिर भरलैन अहिया।

रहिया में हारे छलकरिया हो रामा,

चललै बल करिया।

भारत छोड़ो आंदोलन को सहदेव खलीफा ने कजरी में कहा–

सत सम सत्य अहिंसा स्वतन्त्र हिन्दुस्तान से निकला

बापू के जुबान से निकला, भारत के मुस्कान से निकला ना

जाने माने कजरी के गायक बद्री सिंह मठना मीरजापुर

तेगा वही रहा केवल तेगे की धार बदल गयी

गोरो की सरकार बदल गयी, ना,

जागे भारत मा के वीर,

लोहा लिए सदा समसीर,

हारी गोरी पलटन, उसके गले की हार बदल गयी

गोरो की सरकार बदल गयी ना,

गांधी के लड़इया नाहिं जितबे फिरंगिया

भल भल मजवा उड़ौले एहि देसवा में,

अब जइहै कोठिया बिकाय।

पूर्वी लोकगीत में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का इस प्रकार गौरवगान –

आजादी के करनवा नेता घर से परइले।

उनके पकरे लागी ना, कइले ब्रिटिश बहुत जतनवा।

उनके पकरे।

आजादी के बन सिपाही सुभाष चंद्र बलवान
सिंगापुर में मोर्चा ठाना, ब्रिटिश भेल हैरान।
उनके छक्का छोड़वले ना।

लार्ड वारेन हेस्टिंग्स के समय काशी की बहादुर जनता ने आक्रमणकारी अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध किया था। अनेक भारतीय वीरों को पकड़कर अंग्रेजों ने अंडमान में, जिसे कालापानी कहा जाता था, कैद कर दिया था। इस ऐतिहासिक घटना का भोजपुरी जन–मानस पर प्रभाव पड़ा था। एक लोकगीत में एक वीरांगना अपने पति को काले पानी भेजे जाने पर विलाप करती हुई 'कजली' लोकगीत में उसके घर की करुण दशा का वर्णन करती है–

अरे रामा नागर नैया जाला काले पनियां रे हरी।
सब कर नैया जाला कासी हो बिसेसर रामा,
नागर नैया जाला काले पनियां रे हरी।
घरवा में रोवै नागर, माई और बहिनियां रामा
सेजिया पै रोवै बारी धनिया रे हरी।
खुंटिया पै रोवे नागर ढाल तरवरिया रामा
कोनवां में रोवैं कड़ाबनियां रे हरी।

रहिया में रोवै तोर संग अउर साथी रामा

नर घाट पर रोवैं कसबिनियां रे हरी।

जो मैं जनत्यूं नागर जइबा काले पनियां रामा

तोरे पसवां चलि अवत्यूं बिनु रे गवनवां रे हरी।

स्वतंत्रता संग्राम में कुंवर सिंह के शौर्य का वर्णन करते हुए एक भोजपुरी लोकगीत में कहा गया है कि इंद्र भी यह युद्ध देखकर भाग गए थे–

खपाखप छुरी चले, छपाछप छुरी कटे

टहकत सोनिया के धार रे नू

जैसे बहे नदी के धार रे नू

इंद्र दूर से भागिलेल, यमराज दौड़ल

खप्पड़ लेई डाकिन–नाचे लागिन रे नू

झूमत कुंवर सिंह बांका रन बीच

जैसे हाथि कई कोपि सिंह डांकि फांदि बठल रे नू।

इस लोकगीत में कहा गया है कि बाबू कुंवर सिंह अंग्रेजों की चाल और उसके प्रलोभनों में नहीं आए।

बाबू कुंवर सिंह तेगवा बहादुर, आरा में धूम मचाई रे।

मुट्ठी भर सेना लैके कुंवर सिंह, फिरंगिया पर छाया गिराई।

वीर कुंवर सिंह के छापामार युद्ध का वर्णन–

जगदीसपुर किला छोड़ दिया, जंगल में घुसा जाय

जंगले–जंगले बाबू चले, ई जनरैल जोड़ किया

दूरबीन लगा के देखे जाय, यही बाबू जाता है

लिखि परवाना भेजे का, सुनो बाबू मेरी बात

जंगल छोड़ के लड़ो, इतनी बात बाबू सुने

सुन जनरैल मेरी बात, मैं जंगल छोड़ूंगा

तुम तोप धर के लड़ो, इतनी बात जनरैल सुने

सुनिए बाबू मेरी बात, मैं तोप नहीं धरूंगा

तोप मेरी माता है, इतनी बात बाबू सुने

सुन जनरैल मेरी बात,

तुम्हारी तोप माता है, मेरा जंगल पिता है

मैं जंगल छोड़ूंगा नहीं।

सन् 1857 के शहीद मंगल पांडेय का गौरवगान बलिया जिले के चितबड़ा गांव के निवासी प्रसिद्ध नारायण सिंह ने विद्रोह शीर्षक अपनी रचना में किया है–

जब सन्तावनि के रारि भइलि, बीरन के बीर पुकार भइल

बलिया का मंगल पांडे के, बलिबेदी से ललकार भइल।

'मंगल' मस्ती में चूर चलल, पहिला बागी मसहूर चलल

गोरनि का पलटनि का आगे, बलिया के बांका सूर चलल।

गोली के तुरत निसान भइल, जननी के भेंट परान भइल

आजादी का बलिबेदी पर, मंगल पांडे बलिदान भइल।

जब चिता–राख चिनगारी से, धुधकत तनिकी अंगारी से

सोला नकलल, धधकल, फइलल, बलिया का क्रांति पुजारी से।

घर घर में ऐसन आग लगलि, भारत के सूतल भागि जगलि

अंगरेजन के पलटनि सगरी, बैरक–बैरक से भागि चललि।

कजरी में गांधी, जवाहर, भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद आदि नेताओं के योगदान की सराहना –

तिरंगा भारत में दिया लहराई पिया

कांग्रेस आई पिया ना।

रहा देस जब गुलाम, दुख में डूबी सुबह–शाम।

भारत माता रही आंसू बहाई पिया।

कांग्रेस आई ....

बापू बने कर्णधार, चाचा नेहरूजी पतवार।

खे नइया सुबास गही लाई पिया।

कांग्रेस आई....

सहनवाज मिले धाय, ढिल्लन ढाल बने आय।

मिस्टर जिन्ना दिए जान पहनाई पिया।

कांग्रेस आई ....

श्री आचार्य कृपलानी, भगतसिंह जी सैलानी

दिए हंस–हंस के जान गंवाई पिया।

कांग्रेस आई.....

चंद्रसेखर आजाद, किये भारी सिंहनाद।

दिए देसवा आजाद कराई पिया।

कांग्रेस आई.....

बरबाद भइल जब लाखनि घर, तबना पर ई दिन आइल बा।

पंद्रह अगस्त का अवसर पर, घर–घर झंडा फहराइल बा।।

लाहौर बयालिस सतावन, आजाद हिंद के प्राण हरण।

ओह अमर सहीदनि का बल पर, ई स्वतंत्रता लहराइल बा।।

चटगांव केस, चौरी–चौरा, काकोरी, जलियां, बारदोली।

एह सब बलिदान का लाल खून से ई सुराज रंगाइल बा।।

जेल–डामिल, जबती, बेंत, बूट, फांसी गोली अपमान लूट।

विपलव से और अहिंसा से, माता के बान्ह खोलाइल बा।।

(बक्सर के सोनबरसा गांव के कमला प्रसाद मिश्र की रचना)

भोजपुरी कवियों में मनोरंजन प्रसाद सिन्हा का विशिष्ट स्थान है। उन्होंने सन् 1921 के असहयोग आंदोलन के समय फिरंगिया लोकगीत की रचना की। इसकी रचना रघुवीर बाबू की 'बटोहिया' नामक धुन पर की गई थी। बटोहिया की पहली पंक्ति को सामने रखकर मनोरंजन बाबू ने 'फिरंगिया' की पहली पंक्ति की रचना इस प्रकार की :

सुंदर सुघर भूमि भारत के रहे रामा,
आज उहे भइले मसान रे फिरंगिया।

मनोरंजन प्रसाद सिन्हा ने इस रचना में भारतीय जनता की गरीबी तथा ब्रिटिश शासन के शोषक स्वरूप का पर्दाफाश करते हुए अंग्रेजों को चेतावनी दी है कि वे कुनीति का मार्ग त्यागकर अच्छे काम करें अन्यथा दुखी–पीड़ित जनता की आह उन्हें भस्म कर देगी।

अन्न, धन, जन, बल, बुद्धि सब नास भइल,
कौनों के ना रहल निसान रे फिरंगिया।
जहवां थोड़े ही दिन पहिले ही होत रहे
लाखों मन गल्ला और धान रे फिरंगिया।
उहवे पर आज रामा मथवा पर हाथ धके
बिलखी के रोवे ला, किसान रे फिरंगिया।
चेत जाउ चेत जाउ भैया रे फिरंगिया ते,
छोड़ दे अधरम के पंथ रे फिरंगिया।

छोड़ के कुनीतिया सुनीतिया के बाह गहु,

भला तोर करी भगवान रे फिरंगिया।

एको जो रोऊवां निरदोसिया के कलपी ते,

तोर नास होई जाई सुन रे फिरंगिया।

दुखिया के आह तोर देहिया के भसम कै देई,

जरि भूनि होई जइबे छार के फिरंगिया।

मरदानापन अब तनिका रहल नाहीं,

ठकुरसुहाती बोले बात रे फिरंगिया।

रात दिन करेले खुसामद सहेबवा के,

सहेले विदेसिया के लात रे फिरंगिया।

आजु पंजबवा के करि के सुरतिया से,

फाटेला करेजवा हमार रे फिरंगिया।

भारत के छाती पर भारत के बच्चन के

बहत रकतवा के धार रे फिरंगिया।

दुधमुंहा लाल सम बालक मदन सम,

तड़पि तड़पि देले जान रे फिरंगिया।

कोसिला के गोदिया में राम, कन्हैया जसोदा के हो।

रामा, सांवर बरन भगवान, के पिथरी के भार हरले हो।

जननी के कोखिया में मोती, तिलक, लाला, देसबंधु हो।

रामा, गांधी बाबा, बल्लभ, जवाहिर तऽ देसवा के भग जगले हो।

कमला, सरोजनि, अस देवी, तऽ घर घर जनमइ हो।

रामा, राखि लिहली देसवा के लाज, तऽ धनि धनि जग भइले हो।

बहुअरि के कोखिया में संतति, आइसहि जनमहि हो।

रामा कुल होखे अब उजियारि, बधइया भल बाजह हो।

धनि–धनि बहुअरि भगिया, तऽ अस जनमब संतति हो।

रामा, देखि देखि पुतवा के मुहवा तऽ हियरा उमड़ि आइ हो।

(गोरखपुर के भैंसा बाजार के लोककवि चंचवक का सोहर लोकगीत)

लोकगीत गारी –

बाजत आवेला रुनझुन बाजन, फहरात देशी पताका रे।

नाचत आवैं सुदेसिया समधी राम, बिहसत दुलरू दमाद रे।

मड़वे बैठावो मैं सुदेसिया समधी रामा,

कोहबर दुलरू दमाद रे,

द्वारे बैठावों में रुनझुन बाजन,

कोठे पर देशी पताका रे।

चर्खा मैं देबो सुदेसिया समधी रामा,

धिया देहि दुलरू दमाद रे।

मोरे धिया घर से अइली सुदेसिया बरतिया,

धनि–धनि धिया के भागि रे।

कुंवरि भगवानि मन माहि मोद भई,

देशवा में होइहै सुराज रे।

अन्य लोकगीत में–

गांधी के आइल जमाना, देवर जेलखाना अब गइले

जब से तपे सरकार बहादुर, भारत मरे बिनु दाना।

देवर जेलखाना....।

हाथ हथकड़िया बा गोड़वा में बेड़िया,

छेसवा भरि होइल दिवाना।

देवर जेलखाना।

इज्जत राखि लेहु भारत भइया,

चरखा चलावहु मस्ताना।

देवर जेलखाना।

कमला, सरोजिनी विजय के लछमी

काम कइली मरदाना।

देवर जेलखाना।

होई गइले कंगाल हो विदेसिया तोरे रजवा में।

सोनवा के थारी जहां जेवना जेवत रहली।

कठवा के डोकिया के हो गइल मुहाल हो।

भारत के लोग आज दाना बिना तरसै भइया।

लंदन के कुत्ता उड़ावे माजा माल हो।

विदेसिया तोरे–

आवे अशोक, चंद्रगुप्त हमरे देसवा में,

लोरवा बहावे देखि तोहरो हाल हो।

विदेसिया तोरे–

जुग जुग जीयसु हमार गांधी, जवाहर।

जे दूर करेले मोर गरीबन के हाल हो।

विदेसिया तोरे–

लिखित स्रोत

प्रसिद्ध लोक कला विद्वान एवं लोकगीत संग्रहकर्ता विश्वमित्र उपाध्याय, हिंदी के प्रख्यात आलोचक प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, सुप्रसिद्ध लोक कला अध्येता एवं नौटंकी लेखक राजकुमार श्रीवास्तव, बिरहा विद्वान एवं बिरहा गायक डॉ0 मन्नू यादव, जानेमाने लोककला विद्वान डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय, बुंदेली साहित्य और लोक साहित्य की अध्येता एवं विद्वान डॉ0 नर्मदा प्रसाद गुप्त, ए0आर0 देसाई (भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि), युवा कलाकार गौरव बजाज का अध्ययन, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र इलाहाबाद से प्रकाशित कला पत्रिका मध्येत्तरी कला संगम, हिंदी विद्वान डॉ0 अशोक कुमार चौहान का अध्ययन आदि।